Gaon Ki Ram Kahani

गाँव की राम कहानी

लेखक—

मनोरमा, गृहलक्ष्मी, कान्यकुब्ज तथा मदारी आदि
सुप्रसिद्ध पत्रों के भूत-पूर्व सम्पादक तथा भारत का
भिक्षुक, कांचन, सम्पादिका, महावन, गरीबों
दिल, पतित पावन, मंजुल प्राइमर
आदि पुस्तकों के रचयिता

कवीन्दु बेनीप्रसाद वाजपेयी "मंजुल"

Beni Prasad "Manjul"

—:o:—

प्रकाशक—

जाफरी ब्रादर्स

अनवार अहमदी प्रेस

इलाहाबाद

म वार] [मूल्य ?।)

प्रकाशक और मुद्रक :—

जाफ़री ब्रादर्स अनवार अहमदी प्रेस, इलाहाबाद ।

भूमिका

जिस ग्रामीण जनता को निरक्षरता का अभिशाप शताब्दियों से पतन के अंधकार पूर्ण गड्ढे में दबाये चला आ रहा है उसी ग्रामीण जनता को साक्षरता-देवी के मन्दिर की ओर क्रमशः अग्रसर करते हुये उत्थान के प्रकाश-पूर्ण मार्ग पर चलाने के अभिप्राय से "गाँव की राम कहानी" प्रस्तुत की गई। भाषा, भाव और शैली पढ़ने वाली जनता की योग्यता के ही अनुसार है।

इतना ही नहीं, ध्यान इस बात का भी रखा गया है कि इसमें उन्हीं घटनाओं का वर्णन रोचक ढंग से किया जाय जिनसे गाँव के रहने वाले भली-भाँति परिचित हों और पढ़ते-पढ़ाते उनके चित्त पर ऐसा प्रभाव पड़े जिससे, उनकी मनोवृत्ति गाँव सुधार की ओर स्वतः बढ़ चलने के लिए लालायित हो उठे और वे तदनुकूल कार्य करने लगें।

अनुभव बतलाता है कि जब तक गाँव वालों का नैतिक सुधार नहीं किया जाता, तब तक उनका वास्तविक सुधार होना बड़ी टेढ़ी खीर है। नैतिक सुधार के लिए उपयुक्त साहित्य होना ही चाहिये; क्योंकि साहित्य ही एक ऐसा साधन है जिससे, आवश्यक सभी सुधार के कार्य सरल हो जाते हैं और एक सुन्दर रास्ता दिखाई पड़ने लगता है।

वर्तमान काल सुधार का युग है. स्थिति सभी की बिगड़ी हुई है। सभी यही चाहते हैं कि यथाशीघ्र सुधार कर लिया जाय, किन्तु नैतिक सुधार सफल न होने के कारण सब की इच्छाएँ कोरी कल्पना के रूप में ही रह कर अन्त में नैराश्य की

काली घटा में छिप जाती हैं। वर्षों की कल्पना का राज्य क्षण भर में नष्ट हो जाता है।

"गाँव की राम कहानी" के पढ़ने वाले यदि थोड़ा भी ध्यान देंगे तो उनकी उलझी हुई बहुत सी समस्याएँ सुलझ जाँयगी और उनकी कल्पना का राज्य आशाओं की हरी-भरी दुनियाँ में अनन्त काल तक फलता-फूलता रहेगा।

ग्रामीण जनता यह चाहती है कि उसे सुख से खाने के लिए रोटियाँ मिलती रहें और परमात्मा का नियम है कि सच्चाई से अपने हित के साथ ही साथ दूसरों का हित करने पर ही सुख से भोजन मिल सकता है; अर्थात् पारस्परिक हित-साधन का ही परिणाम जीवन के मार्ग का अनन्त सुख है।

जनता स्वार्थ की संकुचित सीमा में ही अपने वैभव को अभिमान भरी दृष्टि से देखना चाहती है, इसलिए विषैली फूट पनपती हुई सर्वनाश करने के लिए गाँवों की दुनिया में तेज़ी के साथ बढ़ने लगी है।

सोचने वाले सोचते हैं कि किस भाँति ग्रामीण जनता की आर्थिक दशा सुधर सकती है? नैतिक सुधार के लिए कौन-सा मार्ग अधिक उपयोगी होगा? साक्षरता-प्रचार का ढग रोचक बनाने का उपाय क्या है? पारस्परिक सहानुभूति और सहयोग के मार्ग में रुकावटें कहाँ हैं? मेरा उनसे निवेदन है कि यदि वे अपने प्रश्नों का उत्तर चाहते हैं, तो फिर ध्यान देकर "गाँव की राम कहानी" पढ़ने का कष्ट स्वीकार करें। आवश्यक सभी बातें विदित हो जाँयगी। अस्तु,

विनीत—

बेनीप्रसाद वाजपेयी "मंजुल"

समर्पण

१

भाव-भरी भाषा यह मेरी, अभिलाषा के साथ चली;
दीनबन्धु को लगी खोजने, जा दीनों की गली-गली।
स्वागत किया सभी दीनों ने, बोले "हम सब धन्य हुए;
देवी-सी जब तुम आई हो, सब के भाग्य अनन्य हुए।"

२

कहा गाँव वालों ने मिल कर, "तुम हो भाषा की रानी;
घूम रही हो क्यों गलियों में? यहाँ नहीं कोई ज्ञानी।
हम में अपढ़ सभी हैं सुन लो, थोड़ी समझ हमारी है;
राम कहानी इसीलिए ही, सब की न्यारी न्यारी है।"

३

दीन किसानों के खँडहर से, सुनी गई धीमी वाणी:
"हम दुखियों की गलियों में तुम, क्यों आई अयि कल्याणी?
नहीं वस्त्र है तन में कोई, खाने को है अन्न नहीं;
राम कहानी किसे सुनायें, सुनने वाले नहीं कहीं।"

४

घेर लिया बच्चों ने आकर, गन्दे, मैले, भूखे-से;
कंगाली के रूप भयानक, रोग-ग्रसित औ' सूखे-से।
उनकी आँखों ने कह डाला, यह सांकेतिक भाषा में;
"राम कहानी इन बच्चों की, है दुख की परिभाषा में।"

५

उपवन की कलियों ने देखा, झुक कर शीघ्र प्रणाम किया;
लगीं बताने निष्ठुर विधि ने, कैसा दुख का काम किया।

"खिलने नहीं अभी हम पाईं, पूरा नहीं बसन्त हुआ;
राम कहानी कहें कहाँ तक, सहसा सुख का अन्त हुआ।"

६

चरवाहों ने रोते रोते, कहा गाँव की भाषा में;
"शेष नहीं कुछ रहा यहाँ पर, जीवन की सुख-आशा में।
गाय, भैंस के सभी चरोखर, क्रमशः खेत बने जाते;
राम कहानी यह पशुओं की, दर्द-भरी हम बतलाते।"

७

नाम मात्र के कुछ धनियों ने, राम कहानी कह डाली;
"दिव्य भवन यद्यपि हैं दिखते, फिर भी रिक्त पड़ी थाली।
ईंटों से हैं ईंटें लड़तीं, चूर चूर हम हो जाते;
फूट विषैली के चक्कर में, दर दर की ठोकर खाते।"

८

ग्राम-निवासी बन्धु-वर्ग की, बिगड़ी दशा अचानक है;
अगर सुधार नहीं है होता, अंतिम काल भयानक है।
"राम कहानी" गाँवों की यह, शुभ संदेश सुनायेगी;
मानव सभी सुखी हों जिससे, ऐसा मार्ग दिखायेगी।

९

भाव-भरी भाषा यह मेरी, नव आशा से गर्भित है;
सेवा-हित-व्रत-साधन-पथ पर, भली भाँति संवर्द्धित है।
गाँव-सुधार-भावना वाली, अभिलाषा से चर्चित है;
इसीलिए प्रिय ग्राम्य जनों के, कर-कमलों में अर्पित है।

— बेनीप्रसाद वाजपेयी "मंजुल"

उपक्रम

सत्यनारायण का व्रत

यों तो मुरलीमोहन अपने गाँव रामनाथ पुर के सीधे स्वभाव के बड़े-बूढ़े आदमी हैं और जहाँ तक हो सकता है वे सभी की भलाई ही किया करते हैं; फिर भी लोग उन्हें 'चोर काका' कह कर पुकारा करते हैं और वे भी बड़ी प्रसन्नता के साथ सबसे बातें करते हैं।

जब कभी उन्हें अपने काम-धंधों से अवकाश मिलता है और गाँव के दस-पाँच आदमी उनके पास आकर इकट्ठे हो जाते हैं तब वे उन सबों को अपने जीवन की अतीत कहानियाँ सुनाने लगते हैं। बातों के सिलसिले में भूतों की भी कहानियाँ बड़े ही रोचक ढङ्ग से सुनाते हुए वे लोगों को आश्चर्य में घंटों डाल देते हैं।

एक दिन उनके पड़ोसी मित्र के यहाँ एक नव युवक आ गया। उसका नाम घनश्याम था। घनश्याम पढ़ा-लिखा और बहुत ही समझदार था। आजकल देश भर में गाँवों के सुधार की जो हवा बह रही है वह उसका सच्चा अनुयायी था। ग्राम-सुधार के लिए एक सच्चे सुधारक में जिन सद्गुणों का होना आवश्यक है वे सभी उसमें पाये जाते थे।

जब उसने देखा कि एक अच्छे चाल-चलन वाले बुड्ढे को लोग 'चोर काका' के नाम से पुकारते हैं तब उसे रंज और आश्चर्य दोनों ही हुए। अपनी इस जिज्ञासा को लेकर वह

मुरलीमोहन के पास गया और बड़ी ही नम्रता के साथ उनसे बोला।

"रामनाथपुर का नाम आसपास के गाँवों में अधिक प्रसिद्ध है और यहाँ के रहने वाले भी अधिक सभ्य और सुशील हैं। आपस में मेल विशेष है, फिर भी आश्चर्य इस बात का है कि, आप जैसे वयोवृद्ध को यहाँ के लोग 'चोर काका' के नाम से पुकारते हैं।"

घनश्याम की बातों को सुनकर मुरलीमोहन ने समझाते हुए कहा, "तुम तो यह जानते ही होगे कि आजकल वही सुखी हो सकता है जो सत्यनारायण का व्रत करता है।"

"सत्यनारायण का व्रत कौन नहीं करता ? हमारे गाँव में तो प्रायः हर अमावस, पूर्णमासी, एकादशी और संक्रान्ति के अवसर पर सत्यनारायण का व्रत लोग करते रहते हैं, फिर भी वे इतने सुखी नहीं हैं जितने कि इस गाँव के रहने वाले सुखी हैं।"

"केवल पंडित पुरोहित को बुला कर सत्यनारायण की कथा सुन लेने और पंजीरी, बतासा, पूड़ी, कचौड़ी खाने-खिलाने से ही यदि सुख मिल जाता तो फिर आज भारतवर्ष के गाँवों की यह दुर्दशा क्यों होती ? सभी आनन्द से जीवन बिताते।"

मुरलीमोहन की इस भावना का अर्थ घनश्याम की समझ में अच्छी तरह न आया। उसने प्रश्न किया, "फिर सत्यनारायण का व्रत किस तरह किया जाना चाहिए ? क्या इस गाँव के रहने वाले किसी विशेष विधि से सत्यनारायण का व्रत करते हैं ? यदि संभव हुआ तो मैं भी उसी विधि से व्रत करना पसंद करूँगा।"

घनश्याम के प्रश्न सरल होने के कारण मुरलीमोहन ने सत्यनारायण का असली भावार्थ बतलाते हुए कहा, "सत्य ही

नारायण हैं और नारायण ही सत्य हैं। जिसने सत्य को अपना लिया उसको नारायण स्वतः मिल जाते हैं, और नारायण के मिलते ही संसार का संकट दूर करने वाली भगवती लक्ष्मी का निवास घरों में होने लगता है। सत्य के आधार पर आई हुई लक्ष्मी हमेशा कल्याण करती है।"

"आपने बात बड़े पते की बतलाई। अच्छा, कृपा करके यह तो बतलाएँ कि आपके उपनाम यानी 'चोर काका' से इस सत्य-नारायण के व्रत का कौन-सा संबंध है?"

"जवानी में मैं चोरी करता था। न जाने कितने परिवारों का धन मेरे हाथों से अपहरण किया गया। कितने ही दीन किसानों की परिश्रम से कमाई गईं रोटियाँ मैंने चुरा लीं। गाँवों की असंख्य अनाथ स्त्रियों की संचित पूजी मेरे ही कारण उनके पास न रहने पाई। फिर भी मैं दाने दाने के लिए मुहताज बना रहता था।"

"फिर आपका सुधार किस प्रकार किया गया?"

"इसी गाँव में एक महान् आत्मा का जन्म हो चुका था। उनके दिव्य प्रकाश का सहारा पाते ही मेरे जीवन का रास्ता बदल गया और मैंने सत्य संकल्प कर लिया कि अब कभी चोरी नहीं करूँगा। इस सत्य को अपनाते ही नारायण मिल गये और तभी से सुख देने वाली लक्ष्मी का निवास मेरे घर में होने लगा।"

"जब आपने चोरी करना बन्द कर दिया और सज्जनता का रास्ता ग्रहण कर लिया तब फिर इस कलंकपूर्ण उपनाम 'चोर काका' का नाता क्यों नहीं तोड़ देते?"

घनश्याम की बातों में सहानुभूति की भावना प्रबल थी। मुरलीमोहन को समझने में देरी न लगी। इसलिए उसकी सहा-

नुभूति पर धन्यवाद देते हुए मुरलीमोहन ने कहा, "जो सत्य है वह सत्य है। सत्य को दबाने से पाप करने की भावना आगे बढ़ने लगती है। पाप की भावना बढ़ जाने से फिर किसी का सुधार नहीं हो सकता। जब तक मैंने यह कोशिश की कि मेरे अवगुण छिपे रहें तब तक मैंने किसी की भलाई नहीं की, और जब से मेरे अवगुण संसार के सामने प्रकट हो गये तब से किसी की बुराई भी नहीं की। जो लोग मुझे 'चोर काका' के नाम से पुकारते हैं वे मेरा हित करते हैं।"

घनश्याम ने समझ लिया कि मुरलीमोहन सत्य को ही सब कुछ समझे हुए हैं। उसने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा, "आप के विचार बहुत ही अच्छे हैं।"

मुरलीमोहन—"जिनके नाम पर इस गाँव का नाम रामनाथपुर पड़ा है उनके विचार सुनते तो तुम्हारी तबियत प्रसन्न हो जाती। वही तो यहाँ के महान् आत्मा थे।"

घनश्याम—"यदि आप सुनाने का कष्ट स्वीकार करेंगे तो मैं उन महान् आत्मा के विचार अवश्य सुनूँगा। संभव है कि मेरा और मेरे गाँव का भी कल्याण हो जाय।"

मुरलीमोहन—"सत्यनारायण के व्रत को समझते हुए जो कोई भी उन महान् आत्मा के बताये हुए मार्ग पर चलेगा उसके जीवन के सभी काम सफल होंगे। अस्तु, अब मैं "गाँव की राम कहानी" सुनाता हूँ। ध्यान से सुनना।"

गाँव की
राम कहानी

पहिला परिच्छेद
निरक्षरता का अभिशाप

पहले लोग इस गाँव को अर्जुन खेड़ा के नाम से जानते थे। सुना जाता है कि ठाकुर अर्जुनसिंह बड़े ही प्रतापी ज़िमीदार थे। स्वयं भी विद्वान थे और हमेशा विद्वानों का ही साथ किया करते थे। दूर से विद्वानों को बुलाकर वे अपनी ज़िमीदारी में बसाया करते और उनके लिए आराम पहुँचाने की मुनासिब कोशिश करने में कभी भी भूल न करते थे। यह गाँव उन्हीं का बसाया हुआ था इसीसे इसका नाम अर्जुन खेड़ा पड़ गया था।

कई एक पीढ़ियों के बाद उनके वंश के लोग निरक्षर हो गये। उनके अत्याचार दिन दिन बढ़ने लगे। परिणाम यह हुआ कि यहाँ के प्रायः सभी भले आदमी निकल भागे। दो चार घर इस लिए रह गये कि उनका कहीं ठिकाना न था। अपमानित होने पर भी वे अपने गाँव का माया-मोह न छोड़ सके। उन्हीं परिवारों में से एक वह भी था जिसमें रामनाथ का जन्म हुआ था।

रामनाथ कुछ दिनों के लिए परदेश चले गये । वहाँ पर उनका साथ भले आदमियों से हो गया । भलमनसाहत की जितनी भी बातें होनी चाहिए उनमें से सब आ चुकी थीं। अपने गाँव वापस आने पर उन्होंने गाँव का सुधार करना चाहा। लोगों के पास जाकर भलमनसाहत की बातें बतलाने लगे किन्तु 'होम करते हाथ जलने' की कहावत ही चरितार्थ होने लगी।

उन्हीं के पड़ोस में एक दूसरा नवयुवक रहता था । उसका नाम रघुराज था। वह अभी उतना शैतान न हुआ था जितना कि दूसरे लोग हो चुके थे। कभी कभी वह रामनाथ का साथ देने को तैयार भी हो जाता लेकिन गाँव के शैतान उसे बरगला देते और वह अपने इरादे पर कायम न रह पाता। आख़िर एक दिन ऐसा हुआ कि गाँव के लोगों ने उसे और रामनाथ को आपस में लड़ा दिया।

सन्ध्या का समय था। रामनाथ अपने खेतों की ओर गया हुआ था कि इतने में लट्ठ लिये हुए रघुराज जा पहुँचा और उनसे अकड़ कर कहने लगा, "भलमनसाहत का पाठ पढ़ाने वाले रामनाथ! आज तो तुम मेरे पंजे में फँस गये।"

उसकी बातों को सुनकर रामनाथ चौंक तो पड़े फिर भी साहस करते हुए बोले, "मैं तो यही समझता हूँ कि मैं सिर्फ़ तुम्हारे पंजे में नहीं बल्कि गाँव के सभी लोगों के पंजे में फँसा हूँ। बोलो, तुम क्या कहना चाहते हो?"

रघुराज ने उनका हाथ पकड़ लिया और कहा, "या तो तुम

नहीं या मैं नहीं।" अपने हाथ को छुड़ाते हुए रामनाथ ने बड़ी ही नम्रता के साथ कहा, "तुम तो मेरे पड़ोसी मित्र हो। मुझे तो तुम्हारा बड़ा भरोसा है। इसके अलावा जो काम मेल से हो सकता है उसके लिए इतना बखेड़ा करना कहाँ तक उचित है? यह फिर से सोच लो। काम समझदारी के साथ करना चाहिए।"

रामनाथ की बातों को सुनकर रघुराज ने अपने लट्ठ को सम्हालते हुए कहा, "ख़ूब सोच चुका हूँ। नादान नहीं हूँ। खेत की मेंड़ किसकी है? इसका निपटारा बातों से नहीं बल्कि लाठी से किया जायगा और आज ही इसी दम। समझे?"

रघुराज के इरादे को समझ कर रामनाथ ने साधारण ढङ्ग से कहा, "इतना साहस!"

रघुराज—"फिर दूसरा उपाय ही क्या है?"

रामनाथ—"इसीलिए तो कहता हूँ कि फिर से सोच लो।"

रघुराज—"सोचते हैं कायर और डरपोक। जो बहादुर हैं, जिन्हें अपनी मर्दानगी पर भरोसा है, वे सोचने-विचारने में अपना समय नष्ट नहीं करते।"

रामनाथ—"बहादुर होने के ये माने नहीं हैं कि अपने ही हाथ से अपने ही भाई का सत्यानाश किया जाय। बहादुर उसे कहते हैं जो मनुष्य की तरह मैदान में क़दम बढ़ाता है और न्याय की बातों को नेकनीयती के साथ मान लेता है। जो लोग लाठी और घूसे के बल अपने भाई को दबाना चाहते हैं उनकी मर्दानगी से संसार का कल्याण नहीं हो सकता।"

रघुराज—"कुछ भी कहो। मैं आज मानने को नहीं हूँ।"

रामनाथ—"मानना चाहो तो मान सकते हो। सच है, बिना पढ़ाई-लिखाई के भलमनसाहत नहीं आती। अगर तुम चार अक्षर पढ़े होते तो आज तुम्हारी यह दशा न होती।"

रघुराज—"मानता हूँ कि मैं गँवार हूँ। लिखना-पढ़ना नहीं जानता फिर भी मुझे इसका रञ्च भर भी रञ्ज नहीं है। मैं तो यह पूछना चाहता हूँ कि खेत की मेंड़ किसकी है?"

रामनाथ—"यह मेंड़ मेरे खेत की है। पहिले इस मेंड़ की चौड़ाई लगभग दो हाथ के थी। धीरे धीरे तुमने मेंड़ का आधा हिस्सा अपने खेत में मिला लिया। अब जो बच रही वह मेरी है। तुम भी जानते हो लेकिन बिना फौजदारी किये तुम्हें चैन नहीं।"

रघुराज—"तो फिर आज से यह मेरी है। हम गाँव के रहने वाले सिर्फ़ यही मंत्र सिद्ध कर चुके हैं कि जिसकी लाठी उसकी भैंस। पढ़ाई-लिखाई को चाटना थोड़े ही है।"

रामनाथ—"देश के सभी भले आदमी यह मानते हैं कि अपढ़ रह कर जीवन बिताने से नरक में जीवन बिताना अधिक अच्छा है।"

रघुराज—"देश की बात देश के साथ रही। अब तो गाँव की बात करो। कलम घिसने वाले लाठी का सामना भला कब कर सकते हैं? हिम्मत हो तो सामने आ जाओ।"

इतना कहकर उसने लट्ठ को अपने कंधे पर से उतार लिया

और रामनाथ पर वार करने पर तुल गया। उसके अभिप्राय को समझते ही रामनाथ ने पैतड़ा बदल कर उसके लट्ठ को छीन लिया और समझाते हुए कहा, "जिस लाठी का तुम्हें घमंड था वह अब मेरे हाथ में है। फिर भी समझाता हूँ कि आपस की लड़ाई अच्छी नहीं है।"

रघुराज चुपचाप खड़ा रहा। उसने अपने मन में विचार किया कि रामनाथ की जगह गाँव का कोई दूसरा आदमी होता तो आज उसकी हड्डियाँ चकनाचूर हो जातीं। इतनी कड़ी बातें कहने पर भी इसमें उत्तेजना न आई और अब भी प्रेम के साथ समझाने की ही चेष्टा कर रहा है। यह विचार आते ही वह उनके पैरों पर गिर पड़ा और बोला, "सच कहा जाय तो तुम देवता हो।"

रामनाथ ने रघुराज को उठा कर अपने सीने से लगा लिया और खेत की उसी मेंड़ पर बैठ कर समझाते हुए कहा, "मैं देवता नहीं हूँ। तुम्हारी ही तरह इसी गाँव का रहने वाला साधारण मनुष्य हूँ। मुझे थोड़ी सी शिक्षा मिली है और तुम अपढ़ हो। अपढ़ होने के कारण तुम ख़ुद नहीं समझ पाते कि कौन-सा काम भला है और कौन-सा बुरा है। पढ़े-लिखे आदमी हमेशा भले आदमियों का साथ करते हैं और सब जगह आदर से बैठाये जाते हैं। जो अपढ़ होते हैं; वे दुष्ट स्वभाव के आदमियों की संगति में पड़कर हमेशा मुसीबत उठाते रहते हैं।"

रघुराज—"सच कहते हो। मैं जानता था कि खेत की मेंड़

तुम्हारी ही है, लेकिन गाँव के कुछ आदमियों ने कहा कि, रामनाथ तो पढ़ा-लिखा आदमी है। लड़ाई-झगड़े से हमेशा दूर भागता है। मार-पीट और लड़ाई-झगड़े की ज्यों ही धौंस दी गई त्यों ही वह डर जायगा। बस, फिर क्या ? खेत की मेंड़ अपनी हो जायगी। लेकिन तुम इतने बहादुर और दयालु हो यह भला कौन जानता था ? मुझे अपनी करनी पर बड़ा रंज हो रहा है। मैं क्षमा चाहता हूँ।"

रामनाथ—"क्षमा की कोई बात नहीं है। मनुष्य तो भूल करता ही है। मैं यह चाहता हूँ कि तुम चार अक्षर पढ़ लो। पढ़ाई-लिखाई के लिए कोई निश्चित उम्र नहीं है। जब से चेते तब से सही। अगर हमारे गाँव वाले निरक्षरता के अभिशाप से छुटकारा पा जाँय तो उनको बहुत सी मुसीबतें आप ही आप दूर हो जाँयगी।

निरक्षर लोग जो होते, वही लड़ते हैं आपस में;
न चलते राह नेकी पर, पड़े रहते हैं अपयश में।
भलाई औ' बुराई को, समझ कुछ भी न पाते हैं;
जिधर जाते उधर वे सब, मुसीबत ही उठाते हैं।
निकलते लाठियाँ लेकर, बहादुर गाँव के बेशक;
मगर गुंडे कहाते हैं, अपढ़ रहते हैं वे जब तक।
निरक्षरता मिटा दो अब, सम्हल कर होश में आओ;
हुआ जो कुछ भुला दो सब, स्वजन 'मंजुल' को अपनाओ।"

दूसरा परिच्छेद

प्रौढ़ों की शिक्षा

रघुराज और रामनाथ का साथ नेकनीयती की नींव पर पक्का हो गया। दोनों ही आपस में मेल से रहने लगे। धीरे-धीरे रामनाथ ने रघुराज को पढ़ाना आरम्भ कर दिया। उसकी देखा-देखी गाँव के कुछ आदमी और पढ़ने लगे।

जब उन सबों को अक्षरों का ज्ञान हो गया तब रामनाथ ने सबों से कहा, "जिसका जो नाम हो वह अपने नाम का पहला अक्षर लिखकर दिखला दे।"

सभी ने अपने नाम का पहला अक्षर लिखकर दिखला दिया। तब रामनाथ ने फिर कहा, "अच्छा अब अपने अपने नाम के कुल अक्षर लिखकर दिखाओ।"

इस पर सब के सब बड़े ही चक्कर में पड़ गये। रामनाथ ने समझाते हुए कहा, "चक्कर में पड़ना बेकार है। मान लो किसी का नाम 'मोहन' है। उसको बस इतना ही लिखकर दिखलाना चाहिए म, ह, न।"

प्रश्न सब की समझ में आ गया। अपने अपने नाम के पूरे-पूरे अक्षर सभी ने लिख कर रामनाथ के सामने रख दिये।

इसके बाद रामनाथ ने कहा, "अब अपने गाँव के कुल अक्षर लिखकर दिखलाओ। समझ से लिखना। घबड़ाना नहीं।"

"अ, र, ज, न, ख, ड़," इतना लिखकर दिखाते हुए सबों ने कहा, "अब तो आशा होने लगी है कि हम सब लिखना-पढ़ना सीख सकेंगे।"

रामनाथ ने कहा, "लिखना-पढ़ना कोई कठिन काम थोड़े ही है। यह तो उन लोगों की सरासर भूल है जिनको लिखना-पढ़ना पहाड़ मालूम होता है।"

रघुराज ने कहा, "ज़िमींदार के ज़िलेदार कहते थे कि पढ़ोगे तो भी उसी खेत में हल जोतना पड़ेगा और न पढ़ोगे तो भी हल जोतना पड़ेगा। पढ़ता-लिखता वह है जिसे डिप्टी कलक्टर बनने की इच्छा होती है। हलवाहों और चरवाहों ने अगर लिखना-पढ़ना सीख भी लिया तो इससे होता ही क्या है?"

रामनाथ ने जवाब देते हुए कहा, "हलवाहे और चरवाहे अगर लिखना-पढ़ना सीख जायँगे तो दो चार पीढ़ी के बाद उनके बच्चे डिप्टी कलक्टर भी हो जाँयगे। बंजर ज़मीन को खोद कर जब खेत बनाया जाता है तब पहले-पहल कितनी कठिनाई पड़ती है। बाद में खाद डाल-डाल कर और विशेष रूप से परिश्रम करने पर उसे उपजाऊ खेत बनाया जाता है। फिर तो चाहे खेत ही बनाये रखो या बग़ीचा बनाओ। सब तरह से वह उपयोग में लाया जाता है। इसीलिए तुम लोग चाहे पढ़-लिखकर डिप्टी कलक्टर बनो या न बनो लेकिन, यदि तुम्हारे

बच्चे पढ़-लिखकर होशियार हो गये तो डिप्टी कलक्टर ही क्या, इससे भी ऊँचे दर्जे के अफ़सर हो सकेंगे।

रघुराज ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, "तुम पढ़ाते क्या हो मानो आसमान का चाँद हम लोगों के हाथ सौंपना चाहते हो। इतनी बड़ी बड़ी आशाएँ हमारे सामने दौड़ी चली आरही हैं जिनकी कल्पना हम स्वप्न में भी नहीं कर सकते थे। अगर मेरा बेटा लिख-पढ़ कर डिप्टी कलक्टर हो गया तो मैं डिप्टी कलक्टर का पिता कहलाऊँगा। कितनी ख़ुशी की बात है!"

रघुराज की इस प्रसन्नता पर रामनाथ को हँसी आ गई। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'कहते तो बात ठीक हो लेकिन डिप्टी कलक्टर के पिता बनने की थोड़ी सी योग्यता भी होनी चाहिये। जिसके लिए पढ़ाई-लिखाई बहुत ज़रूरी है।"

रघुराज—"जितना तुम बतलाते हो उतना तो सब याद कर लेता हूँ। और जो कुछ आगे बतलाओगे उसे भी याद कर लूँगा। योग्यता आप ही आप हो जायगी।"

रामनाथ ने समझ लिया कि अब रघुराज पढ़ने-लिखने की ओर से कभी मुँह न मोड़ेगा। उजड़ी हुई आशाओं का संसार जब फिर से बसने लगा तब फिर इच्छाओं की प्रबलता क्यों न होगी। इच्छाओं की प्रबलता होने पर सफलता साथ देती ही है। इसलिए दो चार आवश्यक प्रश्न और बातें कर ली जाँय। इतना सोच कर उन्होंने आये हुए लोगों से पूछा—"मान लो, मैं कहीं चला गया तब क्या करोगे?"

पहला आदमी—"किसी विद्वान् को बुलाकर उससे पढ़ना-लिखना सीखेंगे।"

दूसरा आदमी—"गाँव के मदरसे में जो मुन्शी जी पढ़ाते हैं उनके पास जाकर अपनी पढ़ाई-लिखाई का काम चालू रखेंगे। नाच तमाशा देखना बंद करके पढ़ना सीखेंगे।"

तीसरा आदमी—"गाँव के जो पटवारी हैं वे मुझे बहुत मानते हैं। उनसे इस बात की प्रार्थना करूँगा कि वे थोड़ा-सा समय देकर मुझे पढ़ा दिया करें।"

चौथा आदमी—"हमारे गाँव से थोड़ी दूर पर एक पण्डित जी रहते हैं। सुनते हैं कि वे बड़े ही सज्जन और दयालु हैं। उन्हीं के पास जाकर मैं पढ़ आया करूँगा।"

पाँचवाँ आदमी—"मेरे बहनोई का गाँव यहाँ से दो कोस की दूरी पर है। वे भी अच्छे विद्वान् हैं। मेरी बहिन जो कि कुछ भी पढ़ना-लिखना नहीं जानती थी, उसको उन्होंने ऐसा पढ़ा दिया है कि वह रामायण भी पढ़ लेती है। अगर मैं "अपनी इच्छा प्रकट करूँगा तो वे मुझे भी विद्वान् बना देंगे।"

छठा आदमी—"मेरा लड़का दर्जा दोयम में पढ़ता है। किसी न किसी तरह मैं उसी से पढ़ने-लिखने की कोशिश करूँगा। लड़का हुआ तो क्या हुआ, हमसे होशियार तो है ही।"

उसकी बातों को सुनकर सब के सब हँस पड़े और मज़ाक

करते हुए बोले, "जब बेटे को उस्ताद बनाओगे तब फिर तुम्हारे विद्वान् हो जाने में कोई शक नहीं है।"

उस आदमी ने जवाब देते हुए कहा—"हमारे तहसीलदार साहब की उम्र ही क्या है? देखने से अभी निरे बच्चे मालूम होते हैं फिर भी हम लोग अदब करते ही हैं। थाने के थानेदार साहब हमारे गाँव के मुखिया के सामने बच्चे-से मालूम होते हैं फिर भी मुखिया को उनसे दबना ही पड़ता है। इसी तरह अगर मेरा बेटा मुझसे अधिक पढ़ना-लिखना जानता है तो फिर अपने हित के लिए उसे उस्ताद बनाने में हर्ज क्या है?"

रामनाथ ने कहा, "विद्या सीखने के लिए विचार ऐसे ही होने चाहिए। चाहे बच्चा हो या बुड्ढा। अगर वह विद्वान् है तो उससे लिखना-पढ़ना अवश्य सीख लेना चाहिए। इसमें कोई अपमान की बात नहीं है। इसके अलावा जब बेटे को डिप्टी कलक्टर बनाना चाहते हो तब फिर उस्ताद बनाने में हिचकना ठीक नहीं है।"

रघुराज ने रामनाथ से कहा, "कल तुमने जिस कविता को याद कराया था उसे सुनोगे या नहीं?"

रामनाथ—"अवश्य सुनूँगा और कल के लिए दूसरी कविता याद कराऊँगा।" पढ़नेवालों में से एक आदमी ने कहा, "कुछ लोग कहते हैं कि कविता याद कराने से होता ही क्या है? किताब पढ़ना सीखना चाहिए।"

रामनाथ—"कविता याद करने से स्मरण-शक्ति बढ़ती है।"

रघुराज—"अच्छा मैं याद कराई गई कविता सुनाता हूँ।"

"हमारे गाँव के भाई, निरक्षर यदि नहीं होते;
सुखी होते हमेशा ये, मुसीबत में नहीं रोते।
भरत-से ज्ञान में होते, लखन-से वीर ये होते;
चमकता भाग्य का तारा, सभी ये चैन से सोते।
न रावण की तरह कोई, विरोधी बन्धु के होते;
समझते बात हित की ये, न हीरा प्रेम का खोते।
पुजारी राम के बनकर, स्वयं श्रीराम सम होते;
समझ कर देवता "मंजुल", इन्हीं के नित चरण धोते।"

"तुमने तो ख़ूब याद कर लिया है। अच्छा, कल के लिए कविता याद कराता हूँ। पहले एक बार मैं कहूँगा फिर तुम सब लोग कहना।" इतना कह कर रामनाथ ने कविता याद कराना आरम्भ कर दिया।

"हमारे गाँव के भाई, निरक्षर यदि नहीं होते;
युधिष्ठिर, भीम औ' अर्जुन, सभी तो फिर यहीं होते।
न होते कंस-से पापी, न होते दुष्ट शकुनी-से;
विदुर-जैसे सभी होते, लगाते प्रेम में गोते।
हमारे गाँव का गोधन, हमेशा फूलता-फलता;
सभी को दूध, घी मिलता, ख़ुशी से खेत सब बोते।
सुदामा-से भिखारी भी, अगर कोई कहीं होते;
बजाकर कृष्ण जी मुरली, प्रगट 'मंजुल' वहीं होते।"

———

तीसरा परिच्छेद

डाइन बुढ़िया

रामनाथ की स्त्री गङ्गादेवी साक्षात् देवी का अवतार थीं। साधारण पढ़ी लिखी होने पर भी वे अधिक बुद्धिमती महिला थीं। जब से उनके चरण रामनाथ के घर में पड़े तब से घर की दरिद्रता हमेशा के लिए चल बसी।

गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। थी तो वह एक भले घराने की, फिर भी लोग उसे घृणा की दृष्टि से देखा करते। माताएं उसकी दृष्टि से अपने बच्चों को बचाये रखने की हमेशा कोशिश किया करतीं। जब कभी कोई बच्चा बीमार होता, लोग उसी बुढ़िया को कोसने लगते। सभी उसे डाइन बुढ़िया कहते थे।

गङ्गादेवी को उसकी दशा पर बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने उसको अपने घर पर बुलाया और उसकी दुर्दशा का कारण जानना चाहा। ममतामयी देवी के प्रेम-संभाषण से बुढ़िया के हृदय का बाँध फूट गया और वह आँसू बहाने लगी।

गङ्गादेवी ने एक लोटे में जल रख दिया और कहा, "लो, हाथ मुँह धो लो तब तक मैं तुम्हारे लिए थोड़ा-सा दूध ला रही हूँ। मालूम होता है कि आज तुमने कुछ भी नहीं खाया है।"

एक लम्बी साँस लेती हुई बुढ़िया बोली, "एक दिन वह था जब कि लोग मुझे रानी कहकर पुकारा करते थे। फिर वह समझ आया कि मैं डाइन के नाम से पुकारी जाने लगी। मालूम नहीं कि आगे चल कर अब और क्या होता है ?"

"तुम पहले हाथ मुँह धो लो।" इतना कह कर गङ्गादेवी चली गईं और एक कटोरे में दूध लेकर वापस लौट आईं। उनके बहुत कुछ कहने सुनने पर उस बुढ़िया ने हाथ-मुँह धोया और दूध पिया। इसके बाद उसने गङ्गादेवी को समझाते हुए कहा, "मुझे अपने घर बुलाकर तुमने अपने हित में बड़ा ही खराब काम किया है। जब यहाँ के लोग यह जान लेंगे कि तुम मुझ पर दया करने लगी हो तब वे तुम्हारे दुश्मन बन कर हर तरह से तुम्हें और तुम्हारे पति रामनाथ को सताने की कोशिश करेंगे।"

आश्चर्य प्रकट करते हुए गङ्गादेवी ने प्रश्न किया, "आखिर तुमने यहाँ के रहनेवालों का बिगाड़ा क्या है ?"

बुढ़िया ने उदासी प्रकट करते हुए कहा, "इन सब बातों को जानकर तुम क्या करोगी ? खिलते हुए फूल को बड़े चाव से लोग तोड़ते हैं और फिर मुरझा जाने पर उसी को वही लोग बड़ी निर्दयता के साथ पैरों से कुचल भी देते हैं।"

गङ्गादेवी ने पंखा झलते हुए कहा, "बुझौवल बुझाने से काम नहीं चलेगा। मैं यह चाहती हूँ कि यदि तुम्हारी बातें कुछ भी सही सही मालूम की जा सकीं और हमारी शक्ति के भीतर की बात रही तो तुम्हारी थोड़ी सी सहायता कर दी जाया करे। साथ

ही साथ यह भी कोशिश की जाय कि यहाँ के लोग तुमसे घृणा करना छोड़ दें। मुझसे तुम्हारा कष्ट देखा नहीं जाता।"

बुढ़िया ने साधारण ढङ्ग से कहा, "चूँकि अभी नई चली आ रही हो। जब इस गाँव की स्त्रियों से मेल हो जायगा तब मेरे लिए ढाक के वही फिर तीन पात हो जाँयगे। इस लिए तुमसे कुछ भी कहना बेकार है।"

विश्वास दिलाते हुए गङ्गादेवी ने बुढ़िया से कहा, "तुम इस तरह निराश क्यों हो रही हो ? किसके द्वारा परमात्मा किसका भला कराता है यह कौन बता सकता है ?"

बुढ़िया ने जवाब दिया, "यह तो तुम समझ ही गई होगी कि मुझको छोड़ कर शेष सभी आदमी भले हैं।"

गङ्गादेवी—"जब दस बुरे होते हैं तब एक भला भी बुरा हो जाता है। इसी तरह जब दस भले होते हैं तब एक बुरा भी भला हो जाता है। अगर इस गाँव के रहने वाले सभी आदमी भले होते तो तुम्हें इस तरह मुसीबतों का सामना न करना पड़ता। यों तो अपने घर के सभी भले होते हैं लेकिन मैं तो उन्हीं को भला समझती हूँ जो बुरे को भी भला बनाने की शक्ति रखते हैं।"

बुढ़िया—"तुम तो लेक्चर देने लगी। जवानी की पहिली उमङ्ग है। अच्छे पुरुष का सत्संग है। इसीलिए भाषा और भाव का यह अनोखा रंग है।"

गङ्गादेवी ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुमने तो कविता की छटा दिखा दी। उमंग, सत्संग और रंग इन तीनों को ऐसे ढङ्ग से

बैठाया कि सुन कर मैं दंग हो गई। अच्छा, अब और अधिक तंग न करो। अपनी बातें कह सुनाओ।"

बुढ़िया—"मेरे पतिदेव मुझे बहुत चाहते थे। इसलिए मुझे उनके प्रेम का बड़ा घमंड था। किन्तु मेरा यह घमंड परमात्मा से न देखा गया। आखिर मेरा सुहाग अचानक छिन गया। मैं विधवा की दशा में जीवन बिताने लगी। सहारे के लिए एक छोटा-सा बच्चा था। अक्सर वह गाँव भर में घूमा करता। एक दिन वह ज़िमीदार के लड़के के साथ खेल रहा था कि इतने में किसी शैतान की नज़र उस पर पड़ गई। वह सोने की दो बालियाँ पहिने हुए था। उन्हीं बालियों के लिए मेरा लाल मार डाला गया। मैं रो रोकर पागल हो गई। आत्महत्या के लिए मैंने कोशिश की किन्तु कुछ भी न कर सकी। शोक और सन्ताप के कारण स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया। ज़रा ज़रा सी बात में लोगों से तकरार हो जाती। नतीजा यह हुआ कि मैं पागल करार दी गई। ज्यों ज्यों दिन बीतते गये, त्यों त्यों मेरे लिए मुसीबतें तैयार की जाने लगीं। अब तो डाइन बुढ़िया कहलाती ही हूँ। मुझसे इस गाँव का कोई बात तक भी नहीं करता।"

गङ्गादेवी—"मतलब यह कि मारे जलन के लोगों ने तुम्हारा यह नाम रखा है और तुम्हें सताने के लिए ऐसा प्रबंध कर रखा है जिससे कि कोई तुम्हारी सहायता न कर सके। कितनी भद्दी बात है! मैं अब ऐसा न होने दूँगी।"

ढ़िया—"गाँव वालों ने मिलकर यह तय कर रखा है कि

जो कोई भी मेरी सहायता करेगा वे लोग उसको भी तङ्ग करते रहेंगे। इसीलिए मारे डर के किसी की हिम्मत नहीं पड़ती कि कोई मेरे पास आकर मेरा सुख दुःख पूछ सके।"

इतने में फूलों की डलिया लिये हुए गाँव की मालिन आ पहुँची। रामनाथ के घर में उस बुढ़िया को बैठी देख कर वह "हाय रे! अब यह घर चौपट हो गया।" कह कर रोने लगी। गङ्गादेवी ने उसे समझाते हुए कहा, "इस बुढ़िया के आने से घर चौपट न होगा। घर तो चौपट तब होता है जब कि घर वाले नेकी का रास्ता छोड़ कर बदी के रास्ते पर चलने लगते हैं।"

गङ्गादेवी के समझाने का असर मालिन पर न पड़ा। उसने उस बुढ़िया से कहा, "अरी डाइन! जान बूझ कर किसी का सत्यानाश करने से तुझे क्या मिल जायगा?"

मालिन का चिल्लाना सुन कर पड़ोसी रघुराज की स्त्री दुर्गा दौड़ी आई। दुर्गा के आते ही मालिन ने कहा, "सीधी-सादी गङ्गादेवी को फँसाने के लिए यह बुढ़िया आई हुई है।"

दुर्गा ने मालिन का साथ देते हुए कहा, "अभी अभी मेरा बेटा बीमार हो गया। हो, न हो, इस बुढ़िया की नज़र उस पर ज़रूर पड़ गई होगी। इसकी नज़र बच्चों के लिए बर्छी का काम करती है। अरी बुढ़िया! मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था?"

बुढ़िया चुपचाप बैठी रही। गङ्गादेवी ने दुर्गा से कहा, "मैं इस बात का विश्वास दिलाती हूँ कि अगर तुम्हारा बेटा बीमार हो गया है तो इलाज कराओ। जल्द चंगा हो जायगा। घबड़ाओ नहीं। बुढ़िया इस मामले में निर्दोष है।"

मालिन ने गङ्गादेवी से कहा, "तुम तो अभी कल चली आ रही हो। इस बुढ़िया के जादू-टोना तुम क्या जानो ?"

गङ्गा—"तुम भी स्त्री हो और यह बुढ़िया भी स्त्री है। एक स्त्री अपने ही गाँव की रहने वाली अनाथ स्त्री का अपमान करे यह बड़े ही शर्म की बात है।"

मालिन ने कहा, "अगर गाँव वालों को मालूम हो गया कि तुमने इस बुढ़िया को अपने घर पर बैठाया है तो वे तुमसे और तुम्हारे पति से दूर भागने की कोशिश करेंगे।"

दुर्गा ने कहा—"अगर मेरे घर वालों ने सुन लिया कि बुढ़िया की नज़र पड़ने के कारण बेटा बीमार हो गया है तो वे इसे ज़िन्दा नहीं छोड़ेगे।"

गङ्गा ने उन दोनों को .खुशी .खुशी घर से रवाना किया। उन दोनों के चली जाने पर बुढ़िया ने कहा, "मेरे संबंध में लोगों के विचार ही बदले हुए हैं। इस गाँव में मेरा अपना कोई नहीं है। जिस किसी को देखो वही मेरे लिए विष उगलता रहता है।"

गङ्गादेवी—"कभी कभी विष भी अमृत का काम करता है। अब मैं एक ऐसा उपाय निकालूँगी जिससे तुम सुखी हो सको और गाँव वाले तुम्हारा विरोध करना छोड़ दें।"

बुढ़िया—"ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि जब तक सूर्य और चन्द्रमा संसार में रहें तब तक तुम्हारा सुहाग अचल रहे।"

चौथा परिच्छेद

—(०)—

अत्याचारी जिलेदार

रामनाथ के सहयोग से रघुराज ने लिखना-पढ़ना सीख लिया। घर में जो तीन चार बीघे की खेती होती थी उसे वह अच्छी तरह कर लेने लगा। गाँव के जिन लोगों के साथ उठने बैठने से चाल-चलन के बिगड़ने का डर था उसने उन सबों का साथ छोड़ दिया।

लेकिन इससे होता ही क्या है? उसकी उन्नति और भल-मनसाहत से कुछ लोग उससे जलने लगे और इस बात की कोशिश करने लगे कि किसी न किसी तरह उसे तंग किया जाय। सोचते-सोचते उन सबों ने एक उपाय निकाल ही लिया।

गाँव के ज़िमींदार ने मालगुज़ारी वसूल करने के लिए जिस ज़िलेदार को नौकर रखा था वह बड़ा ही ख़तरनाक आदमी था। चूंकि ज़िमीदार के दुश्मनों की संख्या बढ़ती जा रही थी इसलिए ऐसा आदमी उनके लिए बड़े काम का साबित हो चुका था। गाँव के भले आदमी जो कि उस ज़िलेदार की आदत को पहचान चुके थे वे उससे हमेशा थर थर काँपा करते और जो दुष्ट स्वभाव के थे उनसे उस ज़िलेदार की गहरी मित्रता हो चुकी थी।

इसी ज़िलेदार के पास जाकर गाँव के दुष्टों ने रघुराज की शिकायत करते हुए कहा "आज कल रघुराज धरती पर चलता ही नहीं। जब देखो, सातवें आसमान पर उड़ा करता है।"

ज़िलेदार—"आसमान के उड़ने वाले कभी न कभी धरती पर आते ही हैं।"

"लेकिन अभी तो आफ़त जोत रहे हैं।"

"अनाज बोने वाले अनाज पाते हैं और आफ़त बोनेवाले आफ़त पाँयगे।"

"हमने सुना कि रघुराज आपकी बुराई कर रहा है।"

"कुत्तों के भौंकने से हाथी कभी नहीं घबड़ाता।"

आये हुए आदमियों से एक ने कहा, "कोई मामूली बुराई की बात होती तो कुछ हानि न थी। वह तो यह चाहता है कि आपकी जड़ एकदम काट दी जाय।"

उस आदमी की बातों को सुनकर ज़िलेदार ने क्रोध करते हुए कहा, "मेरी जड़ काटने के लिए रघुराज तैयार हो रहा है!"

शिकायत करने वाले ने कहा, 'मैंने रघुराज को बहुत समझाया कि ज़िलेदार की बुराई करना अच्छा नहीं है। ऐसा नेक आदमी आज तक तो इस गाँव में कोई आया ही नहीं।"

ज़िलेदार ने प्रश्न किया—"उसने क्या जवाब दिया?"

"कहने लगा कि ज़िलेदार कोई जू जू थोड़े ही हैं। जो जैसा होगा उसको वैसा ही कहा जायगा। ज़िलेदार की परवाह करो तुम लोग जिनकी अक़्ल पर पत्थर पड़ा हुआ है।"

ज़िलेदार ने उन सभी आदमियों को आदेश किया, "जाओ इसी दम रघुराज को पकड़ लाओ।"

बात बिजली की तरह गाँव भर में फैल गई। चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया। जिस समय रघुराज की स्त्री दुर्गा ने यह समाचार सुना वह भौचक्की-सी हो गई। उसके हाथ की रोटी हाथ में ही रह गई और चूल्हे की रोटी चूल्हे में ही जल गई।

रघुराज ने चाहा कि वह रामनाथ के पास चला जाय लेकिन उन दुष्टों ने उसे छोड़ा ही नहीं। उसके पैर के नीचे की धरती काँप उठी, आँखों के सामने अँधेरा-सा छा गया। धीरे-धीरे तालू सूखने लगा और मस्तक चक्कर खाने लगा। उपाय तो कुछ था ही नहीं। गाँव के दुष्टों ने उसे पकड़ लिया और ज़िलेदार के सामने ले जाकर खड़ा कर दिया। चलते समय रघुराज ने दुर्गा से कह दिया था "रामनाथ को इस बात की खबर कर देना जिससे कि दुष्टों के चंगुल से छुटकारा मिल जाय।"

रघुराज को देखते ही ज़िलेदार ने निर्दयता की हँसी हँसते हुए कहा, "ख़ूब मिले। कहो अब तुम्हारा मिजाज कैसा है?"

रघुराज ने खड़े ही खड़े जवाब दिया, "जैसा मिजाज तब था वैसा ही अब है। कोई परिवर्तन नहीं हुआ।"

ज़िलेदार—"जाकी रही भावना जैसी; प्रभु मूरति देखी तिन तैसी। तुम मुझे बुरा समझते हो इसलिए अब मैंने भी तय कर लिया है कि तुम्हारे लिए सोलहो आने बुरा बन जाऊँ।"

इतने में दौड़ते हुए रामनाथ आ पहुँचे और ज़िलेदार से

कहने लगे, "रघुराज ने आपकी बुराई की लेकिन इसके माने ये नहीं हैं कि आप रावण की तरह इस गाँव में अत्याचार करने का बीड़ा उठा लें। आप ज़िमीदार के नौकर हैं। मालगुज़ारी वसूल करना आपका काम है। यों तो दुनियाँ बकती रहती है। आप किस किस की जीभ पर ताला लगाते फिरेंगे। अगर आप भले हैं तो रघुराज के कहने से बुरे नहीं हो सकते। अगर आप सचमुच बुरे हैं तो अच्छा यही होगा कि आप अपना सुधार कर लें। ज़िमींदार की यह मंशा कभी भी नहीं है कि आप उनके नामपर रियाआ को सतावें और गाँव के अमन चैन में अपनी बेजा टाँग अड़ाते रहें।"

रामनाथ की बातों को सुनकर ज़िलेदार ने क्रोध करते हुए कहा, 'अगर आप तैश में आकर बातें करेंगे तो आपके हक़ में बहुत ही बुरा होगा। मामला मेरे और रघुराज के बीच का है। आप बीच में क्यों कूदने के लिए दौड़े आये ?"

रामनाथ ने साहस करते हुए कहा, "जब मामला आपके और रघुराज के बीच का है तब फिर बीच-बचाव करने वाला या दोनों की बातों को सुनकर मुनासिब फैसला करने वाला कोई तीसरा आदमी होना ही चाहिए। इसके अलावा यह तो गाँव में रहनेवाले सभी भले आदमियों का कर्तव्य है कि जब वे देखें कि कोई अत्याचारी किसी निर्दोष को सता रहा है तब बिना बुलाये ही बीच-बचाव करने के लिए सामने आ जाँय। किसी भी बात का संकोच न करें।"

रामनाथ के इस उपदेश को सुनकर ज़िलेदार ने कहा, "तो फिर आप बीच-बचाव करने आये हैं? और वह भी मेरे सामने मेरे ही मामले में? आश्चर्य है कि तितलियाँ भी आसमान के सितारे छूने लगीं!"

"यह तो गाँव का मामला है। गाँव के मामले में पड़ना कोई अन्याय नहीं है। आपको अगर जिमींदार का सहारा है तो मुझे भी परमात्मा का सहारा है। फिर मैं आपको क्यों डरूँ?"

"कौन कहता है कि आप मुझको डरें? शहद लगाकर मेरी खोपड़ी भी चाट सकते हैं।"

"मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप रघुराज के विरोधी न बनें।"

"आप अपने घर जाँय। मुझसे बहस करके बेकार अपने लिए मुसीबत न बुलायें।"

"रघुराज को आप छोड़ दें। किसी ग़रीब को सताना बड़ा पाप है। आप ऐसे पाप के भागी न बनें।"

"अगर पुण्य ही करना होता तो संन्यास ले लेता। मेरे लिए तो पाप ही पुण्य है और इसी में मेरा कल्याण है। अब मैं आप से कहता हूँ कि मेरे काम में दखल न दें। उपदेश काफ़ी सुन चुका हूँ।"

इतने में रामनाथ के पढ़ाये हुए कुछ आदमी गाते हुए आ पहुँचे। सभी शान्त हो गये।

"हमारे गाँव के भाई, निरक्षर यदि नहीं होते;
सभी ये बन्धु बन जाते, कुटिल मन के नहीं होते।

न माहिल की तरह कोई, कभी करते कहीं चुगली;
यहीं आल्हा यहीं ऊदल, बहादुर नेक सब होते।
ग़रीबी यह किसानों की, हमारे गाँव से मिटती;
हमारे दीन बालक भी, सबल गोपाल-से होते।
ये खेती गाँव की उजड़ी, हरी दिखती हमेशा ही;
न मिलते लोग अन्यायी, सफल 'मंजुल' सभी होते।"

जिलेदार पर इस गाने का असर पड़ा या नहीं इसका पता न चला। लेकिन बाकी जो गाँव वाले थे उन पर इसका बड़ा असर पड़ा।

एक एक करके सभी ने रामनाथ के पढ़ाने की तारीफ़ की। रामनाथ ने सबों को समझाते हुए कहा, "मैं अपनी तारीफ़ कराना नहीं चाहता। मैं तो अपने गाँव की और आप सब लोगों की तारीफ़ सुनना चाहता हूँ और यह देखना चाहता हूँ कि हमारे आपसी झगड़े सब ठंडे पड़ गये। फूट का नाम तक भी नहीं रह गया। साथ ही साथ सब के साथ सब की सच्ची हमदर्दी भी होने लगी है। आज जो ये जिलेदार हमारी ही आँखों के सामने और हमारी ही सहायता से हमारे ही निर्दोष भाई पर जो बेजा अत्याचार करते हैं उनकी यह आदत हमेशा के लिए छुड़ा दी गई है। अत्याचार और अन्याय का नाम तक भी नहीं रह गया है।'

इतना कह कर रामनाथ ने रघुराज से कहा, "घर चलो। अब यहाँ तुम्हारा कोई काम नहीं है।"

इसके बाद रामनाथ ने जिलेदार से कहा—"क्या मैं जा सकता हूँ ?"

जिलेदार ने कहा—"जाने वाले चले ही जाते हैं उन्हें भला रोक कौन सकता है ?"

रघुराज ने जवाब देते हुए कहा, "रोकने वाले रोकते ही हैं लेकिन उनकी मानता ही कौन है ?"

जिलेदार ने व्यंग करते हुए कहा, "थोड़ी देर पहले तो दुम दबाये खड़े रहे और अब गुर्राते हो ?"

रघुराज, "अब ऐसी दुम ही न रखूँगा जो कि बिना मतलब के ही दब जाती हो।"

रामनाथ, "दबने वाली दुम तो कुत्तों के होती है। तुम तो आदमी हो। आदमी की तरह बातें करो।"

जिलेदार, "अभी तक तो दुमदार थे। अब परदार होने जा रहे हैं। समझदार होने में अभी बड़ी देर है। कोशिश करते जाओ। इस जन्म में न सही उस जन्म में समझदार हो ही जायँगे।"

रामनाथ, "जब चौकीदार, जिलेदार, जिमींदार, थानेदार और तहसीलदार ये सब इन पर कृपा करेंगे तब हमारे ये सरदार भी समझदार हो जायँगे। इतना ही नहीं; ईमानदार होते हुए मालदार भी हो सकेंगे और शानदार महलों के हवादार कमरों में वफ़ादार दोस्तों के साथ ज़िन्दगी के दिन चैन से बिताने लगेंगे। जो बिगड़ते हैं वही सुधरते भी हैं।"

इतना कह कर रामनाथ और गाँव के सब आदमी चले गये। रह गये केवल दो। एक गाँव का बनिया दूसरा जिमीदार का सिपाही। सबों के चले जाने पर जिलेदार ने गाँव के बनिये से कहा, "आदमी तो मैंने बहुत देखे लेकिन रामनाथ की तरह चालाक आदमी एक भी न देखा। परदेश में जाकार चालाकी का पुतला बन आया है।"

बनिये ने कहा, "इतनी सज्जनता रामनाथ में आ गई है जिसकी कि कोई हद नहीं। क्या ब्यवहार में, क्या रहन-सहन में, क्या बोल-चाल में; हर एक विषय में सज्जनता ही सज्जनता पाई जाती है। इनके कारण अर्जुन खेड़ा भी धन्य हो गया।"

जिलेदार ने कहा, "आखिर तुम तो बनिया ही ठहरे। क्यों न इतनी चापलूसी करोगे? मालूम होता है कि तुम पर भी रामनाथ का जादू असर कर गया है।"

सिपाही ने कहा, "तभी तो रामनाथ की तारीफ़ की जा रही है।"

पाँचवाँ परिच्छेद

घर का नरक

गाँव की उस अनाथ बुढ़िया पर दोषारोपण किये जाने का कारण मालूम करते ही गङ्गादेवी ने निश्चय कर लिया था कि लोगों के मन से यह कुसंस्कार दूर कर देना ही उचित होगा।

उस दिन उनको यह भी मालूम हो चुका था कि रघुराज का बेटा बीमार हो गया है और उसकी बीमारी का असली कारण बुढ़िया की बुरी नज़र बतलाया जाता है। इसलिए वे रघुराज के घर गईं और उसकी स्त्री दुर्गा से जाकर पूछा, "बहन, तुम्हारे बेटे की तबीयत अब कैसी है?"

दुर्गा ने आँसू बहाते हुए कहा, "जब तक साँस चलती है तभी तक आशा भी है। जब उस डाइन की नज़र मेरे इस लाल पर पड़ गई तब भला अब इसके जीवन की अधिक आशा कैसे कर सकती हूँ?'

धीरज देती हुई गंगादेवी ने कहा, "तुम तो बेकार परेशान हो रही हो। ज़रा बेटे को मुझे भी तो दिखा दो। आँखों से देख कर समझूँ तो सही कि उसकी क्या दशा है।"

गंगादेवी को साथ लेकर दुर्गा ने उस अँधेरी कोठरी में प्रवेश

किया जहाँ कि उसका बेटा बीमार पड़ा था। उसको देखते ही गंगा ने कहा—

"इतनी अँधेरी कोठरी में जहाँ कि न तो हवा का प्रवेश है और न धूप का ही प्रकाश है। भला इसमें कोई ज़िन्दा कैसे रह सकता है! अगर घर में हवादार कमरा नहीं है तो बरामदा ही सही। बहन, तुम तो बिना मौत बेटे को मार डालना चाहती हो। माता तो बन गई लेकिन माता होने की योग्यता न आई।"

इतना कह कर गंगादेवी ने बरामदे की ओर कदम बढ़ाया। बरामदे में मक्खियाँ भिनभिना रही थीं और वहीं खुला हुआ कटोरे में दूध रखा था। उन्होंने दुर्गा से पूछा, "यह दूध किस लिए इस तरह रखा हुआ है? क्या तुमने बिल्ली पाल रखी है?"

दुर्गा ने बेटे को गोदी में लेकर कहा, "आदमी तो दूध पाते ही नहीं, बिल्लियाँ भला क्या पायँगी? यह दूध बीमार बेटे को पिलाने के लिए रखा हुआ है।"

"खुला हुआ दूध जिस पर सैकड़ों मक्खियाँ भिनभिना रही हैं वह तुम्हारा बीमार बेटा पियेगा! इससे तो अच्छा यही है कि सीधा ज़हर पिला दो और छुट्टी पा जाओ। अफसोस है कि तुमने बच्चा पैदा करना जान लिया है लेकिन बच्चा पालना नहीं सीखा।"

गंगादेवी की इन बातों को सुनकर दुर्गा को ताव आ गया। उसने चिड़चिड़ाते हुए कहा, "पाँच साल पाल कर मानों तुमने

ही बड़ा किया है। मेरे सामने डोली से उतरी हो और दादी की तरह सीख देने के लिए मेरे ही सर पर आ धमकी हो।"

दुर्गा को समझाते हुए गंगादेवी ने नम्रता के साथ कहा, "न मैं दादी हूँ और न मैं दीदी हूँ। तुम्हारी छोटी बहन हूँ। बहन के नाते तुम्हें समझाती हूँ कि जिस किसी भी वस्तु पर मक्खियाँ बैठ गई हों और वह खा ली गई तो आदमी बीमार हो जाता है। अगर कहीं उसी वस्तु को किसी बीमार ने खा लिया तब तो वह बिना मौत मरा।"

बात दुर्गा की समझ में आ गई। उसने कटोरे का दूध पड़ोहे में फेंक दिया। उसके घर का पड़ोह भी नरक-कुण्ड ही था। न जानें कितना कीचड़ और पानी जमा था। उसी में तरह तरह के कीड़े बिलबिला रहे थे।

इतना ही नहीं, मच्छड़ों की भी भरमार थी। उस पड़ोहे यानी नाबदान के दृश्य को देख कर गंगादेवी "छिः, इतनी गन्दगी। घर है या नरक ? कैसे कोई आराम से रहे ? और क्यों न बच्चे बीमारी के चंगुल में फँस कर मौत के फाटक को पार करें ? बहन, तुम इस घर में किस तरह रहती हो ?" इतना कह कर अँधेरे कमरे से बीमार बच्चे की खटोली उठा ले आईं।

ज्यों ही उन्होंने खटोली को बरामदे में ज़ोर से पटका त्यों ही असंख्य खटमल बिरागी संन्यासियों की तरह निकल भागे। गङ्गादेवी से न रहा गया। उन्होंने फिर कहा, "यह वह खटोली है

जिस पर बीमार लेटता है। भला, तुम्हीं बताओ, कि इस पर लेटनेवाले का खून जब ये खटमल चूसने लगेंगे तब वह किस तरह आराम पा सकता है? बहन, यह तो घर है घर। घर की खटोली में खटमल नहीं रहने चाहिए। खटमलों का अड्डा तो उन्हीं खटोलियों में रहता है जिनको कि धर्मशाले वाले और सराँयवाले सिर्फ़ किराये पर उठाने के लिए अपने यहाँ खास तरीक़े से रखते हैं। शायद, तुममें दया की मात्रा अधिक हो इसलिए खटमल जैसे जीवों की हत्या करना ठीक न समझती हो।"

इतने में बच्चा रोने लगा। रोते हुए उसने दुर्गा से कहा, "मैं पूड़ी और जलेबी खाऊँगा।"

"मैं अभी देती हूँ।" कहती हुई दुर्गा ने उसको खटोली पर लिटा दिया, और पूड़ी, जलेबी, लेने चली गई। गङ्गादेवी ने बिछौने को देखा तो उसमें गंदगी बेहद थी। मैली कथरी और न जानें किस ज़माने की पुरानी तकिया बच्चे को आराम पहुँचाने के लिए काफ़ी समझी जा चुकी थी।

इस पर गङ्गादेवी को बड़ा ही दुःख हुआ। इतने में पूड़ी और जलेबी को लेती हुई दुर्गा आ पहुँची और बच्चे को देती हुई बोली, "बस, आज इतनी ही खा लो।"

गङ्गादेवी ने बच्चे के हाथ से पूड़ी और जलेबी को छीन लिया और दुर्गा से कहा, "बीमार बच्चे को पूड़ी और जलेबी खिला रही हो? पूड़ी और जलेबी यों ही नुकसान करती है। इससे तो अच्छा यही है कि जौ की रोटी का छिलका और

मूँग की दाल दे दिया करो। अगर फ़ायदा न होगा तो नुकसान भी नहीं हो सकता।"

बीमार बच्चा मचलने लगा। गङ्गादेवी ने उससे कहा, "तुम पूड़ी और जलेबी चाहते हो या चमचमाते हुए पैसे? पैसे चाहोगे तो मैं तुम्हें खिलौने भी ला दूँगी।"

बच्चे ने कहा "पहले पैसे दिखाओ तो मैं मान जाऊँगा।"

उस बच्चे को बिलकुल नये चार पैसे देती हुई गङ्गादेवी ने कहा, "बोलो, अब तुम क्या चाहते हो? पूड़ी जलेबी खाओगे तो मैं सब छीन लूँगी। समझे?"

"मुझे पूड़ी जलेबी नहीं चाहिए। बोलो, खिलौने कब ला दोगी?" बच्चे के इस सवाल का जवाब देती हुई गङ्गादेवी ने कहा, "जब तुम मेरे घर चलोगे।"

"मैं अभी तुम्हारे घर चलने को तैयार हूँ।" कहता हुआ बच्चा उठ कर बैठ गया। गङ्गादेवी ने दुर्गा से कहा, "बुरा न मानो तो इस बच्चे को मेरे घर पहुँचा दो। मैं इसे अपने घर ले जाकर मुनासिब दवा कराऊँगी। तुम्हारा घर तो इतना गंदा है कि यहाँ दवा का कोई असर भी नहीं हो सकता। एक तो घर गंदा है, दूसरे तुम निरी गँवार हो, यह भी नहीं जानती कि बीमार की सेवा किस तरह करनी चाहिए। मेरे घर में देख लेना कि किस तरह वह साफ़ रहता है, हवा और धूप का कितना अच्छा प्रबंध है, नाबदान में न तो कीचड़ है और न पानी ही रुकता है, बिछौने कितने साफ़ सुथरे हैं, खाने-पीने की चीज़ों

पर एक भी मक्खी नहीं बैठने पाती और बीमार के लिए किस तरह आराम पहुँचाया जाता है। चलो, अब और अधिक देरी न करो।"

गंगादेवी का घर पड़ोस में था ही इसलिए दुर्गा ने उनके प्रस्ताव को मान लिया और बच्चे को उनके घर छोड़ आईं। इधर गंगादेवी ने उसी बुढ़िया को बुला भेजा जिस पर नज़र लगाने का अपराध लगाया जा रहा था। इस पर दुर्गा को बड़ा रंज हुआ। उसने गंगादेवी से कहा, "डाइन बुढ़िया को मत बुलाओ। वह मेरे बच्चे को खा जायगी।"

गंगादेवी ने यहाँ पर युक्ति से काम लिया। उन्होंने मिसाल देते हुए कहा, "तुम शायद यह जानती होगी कि जब कभी किसी को साँप काट लेता है और वह ज़हर उसकी देह में फैलकर उसे बेहोश कर देता है, तब होशियार झारनेवाले मंत्र के बल से उस साँप को बुलाकर उसी से ज़हर को खिंचवाते हैं और बेहोश आदमी चंगा हो जाता है। इसीलिए मैंने भी उस डाइन बुढ़िया को बुला भेजा है। मान लो, उसकी नज़र लग ही गई है तो मैं उसकी नज़र का बुरा असर उसी से दूर कराऊँगी और तुम्हारा बच्चा चंगा हो जायगा।"

प्रसन्न होकर दुर्गा ने कहा, "तुम जो उचित समझो, करो। मैं घर जा रही हूँ। घरवाले आते ही होंगे। उनको सब बातें समझाकर अभी फिर वापस आती हूँ।"

इतना कह कर दुर्गा चली गई। बीमार बच्चे ने उसकी

तनिक भी पर्वाह न की। उसके चली जाने पर गंगादेवी ने साफ़ सुथरे बिछौने पर बच्चे को लिटा दिया और पंखा झलती हुई धीमे स्वर से गाने लगी। बच्चा भी .खुशी से सुनने लगा।

"हमारे गाँव की बहिनें, निरक्षर यदि नहीं होतीं;
न कोई दुर्दशा होती, सती सीता सभी होतीं।
इन्हीं के पुत्र लव-कुश-से, निडर होकर सदा रहते;
बढ़ाते मान माता का, न रातें रंज की होतीं।
भरत-से पूत सब होते, पकड़ते शेर के बच्चे;
सुधरते भाग्य भारत के, कथाएँ मेल की होतीं।
प्रकट होतीं यहीं दुर्गा, यहीं वाणी, यहीं लक्ष्मी;
इन्हीं के पुण्य से "मंजुल" सफल इच्छाएँ सब होतीं।"

इतने में बुढ़िया आ पहुँची। उसके आते ही गंगादेवी ने कहा, "मैं यह चाहती हूँ कि जब तक दुर्गा का बच्चा चंगा न हो जाय तब तक तुम मेरे ही घर पर रहो।"

बढ़िया ने पूछा—"दुर्गा का बच्चा क्या यहीं आ गया है ?"

गंगादेवी ने कहा, "दुर्गा का घर इतना गंदा है कि वहाँ पर तन्दुरुस्त आदमी भी बीमार पड़ जा सकता है। इसके अलावा उसे यह भी पता नहीं कि कौन सी चीज़ कब किसको खिलाना चाहिए। इसीलिए बिना बुलाये ही मौत आ जाती है और दोष तुम पर लगाया जाता है। खैर, अब तुम इस बच्चे की सेवा करो। परमात्मा चाहेगा तो तुम्हारे भी अच्छे दिन लौट आँयगे।"

इतने में रामनाथ आ गये। गंगादेवी ने उनसे बुढ़िया की कुल राम-कहानी कह सुनाई। सुनकर रामनाथ ने गंगादेवी की बड़ी प्रशंसा की और उस बुढ़िया से कहा, "माताजी, हम लोग अपने काम में सफल हों ऐसा आशीर्वाद दीजिए और अपने लिए किसी भी बात की चिन्ता न करें। हम दोनों ही आपकी उचित सेवा के लिए तैयार हैं।"

बुढ़िया तो कुछ बोल न सकी लेकिन उसकी आँखों ने आँसू बहाते हुए जवाब दे ही दिया। रामनाथ ने समझाते हुए कहा, "अब यह समय आँसू बहाने का नहीं है। धीरज के साथ जीवन में शान्ति पाने के लिए काम करने का है।"

बीमार बच्चे ने गंगादेवी को पुकारते हुए कहा, "चाची! मेरे पास आओ।" बच्चे के पास जाकर गंगादेवी ने उससे पूछा, "आ गई। बोलो, क्या चाहिए?"

रामनाथ भी उसके पास जाकर बोले, "हाथी, घोड़ा, ऊँट। मुन्नू मेरा लेगा लूट।"

बच्चे ने प्रसन्न होकर कहा, "मुझे अभी ला दो, नहीं तो मैं रोता हूँ।"

खिलौनों को आलमारी से निकाल कर रामनाथ ने उसे दे दिया। बच्चा खेलने लगा।

छठा परिच्छेद

सुधार की झलक

मुंशी मंगलराम पटवारी ज़िमीदार के दाहिने हाथ थे। खतौनी, खेवट, रोज़नामचा और स्याहा जो कुछ भी लिखते सभी में जिमीदार का इशारा काम करता। जिसके नम्बर का जोत चार बीघे का था उसके नाम दस बीघे की मालगुज़ारी अदा करने का पर्चा बना देते। किसी के नाम खेवट में अगर दस बीघे ज़मीन थी तो उनके रजिस्टार में सात ही बीघे दर्ज थी। असली काश्तकार की जगह बाज़-बाज़ खेतों में फर्ज़ी नाम चढ़ाये रहते। मतलब यह कि उनके कागज़ात फ़ीसदी पचास बनावटी हुआ करते थे। चूँकि देहात के किसान अधिकतर अपढ़ थे और उनको अपने जिमीदार का पूरा सहारा मिला करता इसलिए उनकी पटवारगीरी राम राम करते निभ गई।

उनके बाद उनका भतीजा शंकरलाल पटवारी बनाया गया। पटवारी की हैसियत से बहाल करते हुए तहसीलदार साहब ने उसे अच्छी तरह समझा दिया था, "सबसे पहिला काम तुम्हारा यह होना चाहिए कि अपने चाचा के कागज़ात मेहनत से दुरुस्त कर लो। हम लोग यह जानते थे कि उनके

कागज़ात सही नहीं है फिर भी उनके बुड्ढे होने के कारण हमने उन पर ऐसी कोई कार्रवाई नहीं की जिससे कि उन्हें बदनामी का सामना करना पड़ा। अब ज़माना सुधार का है। सुधार ईमानदारी का सहारा चाहता है। ईमानदारी की जड़ नेकनीयती है। नेकनीयती के लिए सच्चाई के साथ अपने सभी कर्त्तव्यों को पूरा करना निहायत ज़रूरी है।"

शंकरलाल के चित्त में तहसीलदार साहब की बात जम गई। एक तो वह नये ज़माने का नवयुवक था, दूसरे उसने अपनी आँखों से अपने चाचा मंगलराम की दुर्दशा देख ली थी। लोग उनके नाम से ही नाक भौं सिकोड़ने लगते थे। इतना ही नहीं, अन्त में वे बड़ी ही बुरी मौत से मरे थे। इसलिए उसने अपने मन में ईमानदारी और नेकनीयती के साथ अपने कर्त्तव्य को पूरा करने का इरादा पक्का कर लिया था।

जिमीदार ने शंकरलाल से केवल इतना ही कहा कि उसे अपना काम इस तरह करना चाहिए जिससे कि उसकी बदनामी भी न हो और जिमीदार का काम ब-दस्तूर चलता रहे। जिमीदार के ज़िलेदार शंकरलाल से यह आशा करते थे कि वह उनके इशारों पर नाचेगा। क्योंकि पटवारियों की बेजा आमदनी करानेवाले प्रायः यही जिलेदार हुआ करते हैं। इसीलिए गाँवों के मामले में पटवारी और जिलेदार का चोली-दामन वाला नाता हुआ करता है, लेंकिन शंकरलाल की तो नीति इस सिद्धान्त के बिलकुल उलटी साबित होती गई। वह तो अपने इरादे पर डटा हुआ था।

यह कहना अनुचित न होगा कि उसे जो थोड़ी सी तनख़ाह सरकार से मिलती थी उससे उसका काम बड़ी .ख़ूबी के साथ चल जाता था। हाँ, यह ज़रूर था कि जमा रखने के लिए उसके पास कानी कौड़ी तक नहीं बचती थी। गाँव के किसान जैसा कि गाँवों का दस्तूर है अपनी अपनी हैसियत से उसकी कुछ मदद कर दिया करते थे।

यों तो पहले शंकरलाल ने मदद लेने से इंकार कर दिया था। लेकिन गाँव के मुखिया श्यामलाल के इस तरह समझाने पर, "हम सब तुम्हारे भाई हैं और तुम भी हमारे भाई हो। भाई के साथ भाई का जैसा बर्ताव होना चाहिए उसे हम सबों को भी आपस में बर्तना चाहिए। यह मदद प्रेम की है, दबाव से इसका कोई सरोकार नहीं है। इसलिए इस तरह की मदद को क़बूल करने में कोई हर्ज नहीं है। प्रेम से अगर एक लोटा जल भी मिल जाय तो उसे दूध ही समझना चाहिए और दबाव डालने पर एक लोटा दूध अगर मिलता हो तो उसे खून की तरह त्याग देना चाहिए। हम यह चाहते हैं कि तुम दूध पीना सीखो और .ख़ून पीने से दूर रहो।"

शंकरलाल ने गाँव वालों की मदद लेना आरंभ कर दिया फिर भी नेकनीयती से डिगा नहीं।

जिलेदार की सिफ़ारिश से ज़िमीदार ने उसे चार बीघे ज़मीन माफ़ी देना चाहा था किन्तु उसने इंकार कर दिया। पूछने पर उसने कहा, "खेती किसानी का चक्कर ऐसा होता है

अमृत बरसाते हैं। अक्षरों की पहिचान कराके लिखाते भी हैं और गवाते भी हैं।"

शंकरलाल, "अक्षरों का गाना किस तरह गवाते हैं? यह तो बड़े अचरज की बात है!"

सुखदेव, "कहो तो ककहरे का गीत सुना दूँ या अ, आ, इ, ई का ही गीत कह चलूँ?"

शंकरलाल, "जो तुम्हें अच्छी तरह याद हो उसी को सुना दो। देखूँ तो सही कि गीत कैसा है?"

सुखदेव, "अच्छा अ, आ, इ, ई के ही गीत सुनाता हूँ। तुम भी समझ जाओगे कि वे कितने अच्छे हैं।"

इतना कह कर सुखदेव गाने लगा—

"अगर अमरूद अदरख भी, अनाड़ी औ' अपढ़ खाते;
अनोखे आम अचरज के, अकेले सब अभी लाते।
वही सब आम आपस में, यहीं पर आज खा जाते,
कमाते आठ आने औ', चले फिर आगरे जाते।
इधर इमली जो इठलाती, इलाहाबाद ले जाते;
इतर से तर इसे करके, इकन्नी चार सौ पाते।
नहीं ईंटा नहीं ईंधन, नहीं रस ईख का लाते;
सभी ईसाई ईरानी, खुशी से ईश निज पाते।
अ, आ को याद कर लेते, इ, ई भी याद कर पाते;
उ, ऊ से नेह हो जाता, अपढ़ कोई न रह जाते।"

शंकरलाल ने आये हुए सिपाही से कहा, "सचमुच रामनाथ

बड़े ही क़ाबिल आदमी हैं। वे यह अच्छी तरह जानते हैं कि किसको क़िस तरह से पढ़ाना चाहिये। बड़ी खुशी की बात हुई कि सुखदेव भी उनके पास जाने लगा है। मैंने तो हर तरह से कोशिशें की लेकिन सुखदेव को एक अक्षर तक भी न पढ़ा सका।"

सिपाही ने कहा, "किसी भी आदमी की बहुत ज्यादा तारीफ़ न करना चाहिए। तारीफ़ सुनते-सुनते आदमी का दिमाग़ बढ़ जाता है और वह यही समझने लगता है कि दुनिया में अब मैं ही मैं रह गया हूँ।"

सुखदेव ने सिपाही की बातों का जवाब देते हुए कहा, "मालूम होता है कि तुम भी जिलेदार की तरह रामनाथ से जलते हो। अगर ऐसा न होता तो उनकी तारीफ़ पर तुम ऐसा न कहते।"

सिपाही, "जिलेदार की बात जिलेदार जानें। मैं तो मामूली सिपाही हूँ। रामनाथ की तारीफ़ से मुझमें जलन पैदा हो इसकी कोई वजह नहीं है। जो कुछ मैंने कहा उसके लिए हाथ जोड़ कर माफ़ी चाहता हूँ।"

सुखदेव चुपचाप घर के अन्दर चला गया। उसके चले जाने पर शंकरलाल ने उस सिपाही से कहा, "भाई, इतनी रात में मैं जिलेदार के पास नहीं जा सकता। कल सबेरे ज़रूर आ जाऊँगा। अब तुम जाओ।"

सिपाही ने कहा, "मैं जिलेदार के कहने से बुलाने आया हूँ। अगर मैं आपको अपने साथ लिये बिना यों ही वापस चला गया

तो वे इसमें अपना अपमान समझेंगे और आपके लिए भी बड़ा बुरा नतीजा होगा।"

शंकरलाल ने कहा, "यह तो जिलेदार की ज़्यादती है। बेवक्त बुलाते हैं और न जाने पर अपना अपमान समझते हैं। अदब करने के माने ये नहीं हैं कि उनसे दब कर रहा जाय।"

सिपाही, "कहते थे कि स्याहा ठीक कराना है। कल फिर फुर्सत नहीं मिलेगी।"

शंकरलाल, "कल न सही, दो दिन के बाद सही। लेकिन इतनी रात में हर्गिज़ नहीं।"

सिपाही, "मैं तो सिपाही हूँ। जो आप कहेंगे वही जाकर उनसे कह दूँगा।"

शंकरलाल—"कह देना कि रात आराम करने के लिए है। स्याहा ठीक करने के लिए नहीं है। स्याहा के लिए किसी दूसरे मुनासिब वक्त पर बुलाने की मेहरबानी करें।"

सातवाँ परिच्छेद

पटवारी की चतुरता

दूसरे दिन शंकरलाल को अपने पास आया देखकर जिलेदार ने मज़ाक करते हुए कहा, "मैं तो यही समझता था कि तुम निरे पटवारी ही हो, लेकिन कल रात से यह भी मालूम कर लिया कि तुम अब मजनूँ भी बनने लगे हो। लैला को छोड़कर भला रात को कैसे आते?"

शंकरलाल ने सीधी सादी भाषा में कहा, "परमात्मा को धन्यवाद है कि इन गाँवों में लैला-मजनूँ को पहिचानने वाले जिलेदार भी पैदा होने लगे हैं। मुझे बड़ी ख़ुशी हुई।"

जिलेदार—"सुना है कि पटवारिन के लिए बनारसी साड़ी का इन्तज़ाम कर रहे हो।"

शंकरलाल—"सूरज के निकलने से जब तालाब की कमलिनी भी खिल उठती है तब फिर भला बेचारी सूर्यमुखी क्यों न खिले? जो कुछ होगा उसमें आपकी ही मेहरबानी है।"

जिलेदार—"मेरी मेहरबानी कैसी?"

शंकरलाल—"जिलेदार की बदौलत गाँव की बहुत-सी अनाथ स्त्रियाँ बनारसी पान और मोहिनी सुरती खाने लगीं।

गाँव के होनहार बच्चे भाँग और शराब के चक्कर में पड़कर अपने को धन्य समझने लगे। नौटंकीवालों की पाँचों अँगुलियाँ घी में सराबोर होने लगीं। ऐसी दशा में यह कैसे मुमकिन होता कि मेरी अनोखी लैला पटवारिन का नसीब न चमकता ?"

जिलेदार—"तुम तो बड़े रुखे स्वभाव के आदमी हो। मज़ाक भी ऐसी करते हो कि कलेजे में घाव हो जाता है। यह आदत अच्छी नहीं है। अगर यही आदत बनी रही तो आज न सही, दस दिन के बाद मुसीबत में फँस जाओगे। शरीफ़ घराने की औरतों के खिलाफ़ आवाज़ उठाते हो ?"

शंकरलाल—"मैं आपसे बहस करने नहीं आया हूँ। स्याहा ठीक करने आया हूँ। शायद आपने इसीलिए बुलाया भी था। आइए, देर करना ठीक नहीं है। अभी मुझे बहुत काम करना है।"

जिलेदार—"स्याहा के बहाने मैंने एक दूसरे ही काम से बुलाया है।"

शंकरलाल—"क्या वह काम और किसी आदमी से नहीं हो सकता था ?"

जिलेदार—"अगर हो सकता तो फिर इस तरह तुम्हें तकलीफ़ न दी जाती।"

शंकरलाल—"मालूम होता है कि आप मुझसे कोई बेजा काम कराना चाहते हैं।"

जिलेदार—"अपनी कुशल कुशल जग माँही।
कुशल और की भाड़ में जाहीं"

शंकरलाल—"है तो मंत्र बड़ा बढ़िया, लेकिन मुझसे सिद्ध होना जरा मुश्किल काम है।"

जिलेदार—"दिल से चाहोगे तो सिद्ध हो जायगा। मुश्किल कुछ भी नहीं है।"

शंकरलाल—"जब दिल ऐसा हो, तब न?"

जिलेदार—"यह तो मेरे लिए बायें हाथ का खेल है। अगर तुम यह चाहते हो कि तुम्हारा दिल ऐसा बना दिया जाय, तो फिर मैं भी चन्द्रप्रभा ढिकियओं को काम में लाता हूँ। ये टिकियायें खाई नहीं जाती। केवल चुपके से टेंट में खोंस ली जाती हैं या कोट की किसी गुप्त पाकिट में रख ली जाती हैं। फिर क्या? भड़कनेवाला दिल रास्ते पर आ ही जाता है।"

शंकरलाल—"आपकी वे टिकियायें कहाँ हैं?"

"मैं अभी दिखाता हूँ।" इतना कह कर जिलेदार ने चमचमाते हुए पाँच रुपये उसके सामने रख दिये।

शंकरलाल—"इनकी झंकार से तो दुनिया चौंक पड़ती है। भेद छिप नहीं सकेगा। खैर, अब आप अपना वह काम बतलायें जिसके लिए रात में ही यमदूत घर पर भेजा गया था।"

जिलेदार—"मैं यह चाहता हूँ कि ऐसा कोई उपाय निकाला जाय जिससे रामनाथ और रघुराज को तंग किया जा सके। तुम गाँव के पटवारी हो। उपाय निकाल ही लोगे।"

शंकरलाल—"आख़िर इन दोनों ने आपका क्या बिगाड़ा है?"

जिलेदार—"ये दोनों बड़े ही ख़तरनाक आदमी हैं। सीधे राह पर आते ही नहीं।"

शंकरलाल—"सिर्फ़ आपके ही लिए ख़तरनाक हैं या कुल गाँव भर के लिए?

जिलेदार—"जो मेरे लिए ख़तरनाक हैं वे आगे चल कर गाँव भर के लिए ख़तरनाक न होंगे इसका ठिकाना ही क्या हैं? मर्ज़ बढ़ने के पहले ही इलाज करना ज़रूरी है।"

शंकरलाल—"गाँव वालों की भलाई चाहने वाले रामनाथ और रघुराज भी जब आपको खटकने लगे, तब फिर आपसे किसी की भलाई हो सकेगी यह आशा ही बेकार है।"

जिलेदार—"कल के छोकड़े आज गाँव भर के नेता बन रहे हैं।"

शंकरलाल—"आप भी अच्छे अच्छे काम करने लगें। लोग आपको भी नेता मान लेंगे।"

जिलेदार—"मालूम हो गया कि तुम भी इन्हीं के साथ मिले हुए हो।"

शंकरलाल—"मैं कब चाहता हूँ कि इस गाँव का सुधार न हो। जो इस काम में नेकनीयती के साथ क़दम बढ़ायेंगे उनके साथ मिल जुल कर काम करने में कोई पाप नहीं है।"

जिलेदार—"तब तो जिलेदार और ज़िमीदार की कोई पर्वाह भी नहीं करेगा।"

शंकरलाल—"जिमीदार को अपना मुनासिब लगान चाहिए। जिलेदार को साथ कायदे के किसानों से लगान वसूल करना चाहिए। अगर लगान वसूली का काम मुनासिब तरीक़े से किया गया तो गाँववाले कभी भी इनके खिलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं करेंगे।"

जिलेदार—"यानी जिमीदार के ज़िलेदार को इन सब से डर कर चलना पड़ेगा।"

शंकरलाल—"जब रास्ता ग़लत होगा तब डरना ही पड़ेगा। सही रास्ते पर चलने वाले कभी किसी से डरते नहीं हैं, बल्कि निडर होकर अपना काम चलाते रहते हैं।"

ज़िलेदार—"रास्ता सही हो या ग़लत, तुमको मेरी बात माननी ही पड़ेगी।"

शंकरलाल—"मैं कब कहता हूँ कि आपकी बात नहीं मानूँगा। बशर्ते ग़ैर मुनासिब न हो। ग़ैर मुनासिब बात मानने के लिए मैं हर्गिज़ नहीं तैयार हो सकता।"

ज़िलेदार—"मैं ज़िलेदार हूँ और तुम ज़िलेदार के सामने बातें कर रहे हो। इसलिए जितना पानी मैं पिलाऊँ उतना पीना ही पड़ेगा। आनाकानी करने पर मैंने तुम्हारे लिए दूसरी ही दवा सोच ली है। फिर मुझे बदनाम न करना। सचेत किये देता हूँ।"

जिलेदार के बदले हुए रुख को शंकरलाल ताड़ गया। उसने सोचा, "आदमी खतरनाक है। न जानें क्या कर बैठे इसलिए मुंह

में लड़ाकर इसके साथ हाँ में हाँ मिलाते चलो। फिर देखा जायगा।" इतना सोचकर उसने ज़िलेदार से कहा, "पीने के लिए पानी देंगे! शर्बत पिलाते तो बात दूसरी थी। ख़ैर।"

जिलेदार—"यह तो एक कहावत थी। शर्बत ही क्या, पेड़ा, बरफ़ी, हलुआ, पूड़ी, जो चाहो खाओ। जिमीदार तुम्हारे, जिलेदार तुम्हारे। फिर भी खाने पीने की चिन्ता! बड़े अफ़सोस की बात है।"

शंकरलाल—"रामनाथ और रघुराज के लिए आख़िर आपने भी कुछ सोचा ही होगा।"

ज़िलेदार—"सोचा क्यों नहीं। उसी के लिए तो तुमको बुला भेजा है।"

शंकरलाल—"अच्छा, अब आप कह चलिए नहीं तो फिर कोई दूसरा आदमी आ जायगा।"

जिलेदार—"रामनाथ और रघुराज की जो ज़मीन खेवट में है उसको उड़ा दो"

शंकरलाल—"मान लीजिए कि यह काम मुझसे न हो सका तब?"

जिलेदार—"एकाध बीघा कम कर दो। दो तीन साल के बाद जब जाँच कराई जायगी तब रंग आ जायगा। जो बाग की खाई तैयार कराई है और जो पेड़ लगवाये हैं उनमें से बहुत कुछ मिल जायँगे और खाई भी गिरानी पड़ेगी। अगर मामला मुकदमा किया तो तीन दर्जा तक तो लड़वा ही दूँगा और ऐसा

कर दूँगा कि बेटा राम के घर में तवा तक भी न रह जायगा। गाँव सुधार की जो हवा बाँध रहे हैं वह एक दम बन्द हो जायगी। फिर वही पुरानी ढफली बजेगी और वही पुरानी रागिनी अलापी जायगी। ज़िमीदार से बढ़कर अपना रोब जमाने लगे हैं और मेरे रहते हुए ही।"

शंकरलाल—"आप तो बड़े ही होशियार आदमी हैं। कामयाबी में कोई शक नहीं है।"

जिलेदार—"तुम्हारी मदद मिल गई तो फिर मेरे अरमान पूरे हो जायँगे।"

शंकरलाल—"तन मन से मदद देने को तैयार हूँ। मेरी ओर से आप बेफ़िक्र रहें।"

जिलेदार—"तन मन से अगर मदद दोगे तो मेरी ओर से भी धन से मदद मिलती रहेगी। इस काम में तन मन तुम्हारा और धन हमारा। ज़िमींदार से बढ़कर रियाआ न चलने पाये यह कोशिश ज़रूर होनी चाहिए। गाँव-सुधार, प्रौढ़-शिक्षा, साक्षरता-प्रसार न जानें कहाँ की बलाएँ हैं।"

शंकरलाल—"मैं भी तो यही कहता हूँ। अगर गाँव-सुधार हो गया, गाँव के लोग लिखना-पढ़ना सीख गए, घर-घर साक्षरता का प्रसार होनें लगा तो फिर न तो पटवारी झूठे कागज़ ही बना सकेगा और न जिलेदार ग़लत रसीद ही काट सकेगा। इसके अलावा जब कोई भी जाहिल न रह जायगा तब आपस की लड़ाई भी बन्द हो जायगी। आपकी भी आमदनी घटेगी और मेरे

लिए नई मुसीबत आ जायगी। इसीलिए सोच विचार कर काम करना चाहिए। रामनाथ और रघुराज अपने काम में बढ़ते ही जा रहे हैं।"

जिलेदार—"कौआ कितना भी उड़े लेकिन कबूतर का सामना नहीं कर सकता।"

शंकरलाल—"और वह भी कलाबाज़ कबूतर का। बड़ा मुश्किल काम है। अच्छा, अब मैं चलता हूँ। अगर हो सकेगा तो सात-आठ दिन के बाद फिर मिलूँगा। क्योंकि आपका साथ देना ही है।"

"अच्छा, ये चन्द्रप्रभा की टिकियाएँ तो लेते जाओ।" इतना कह कर जिलेदार ने पाँचों रुपये शंकरलाल को दे दिये। शंकरलाल ने रुपये वापस करते हुए कहा, "आज नहीं। कामयाबी के लिए पहिले कोशिश की जाय। काम बन गया तो पाँच नहीं पचास भी ले लूँगा।"

आठवाँ परिच्छेद

—:(o):—

रोटी की समस्या

"दया से फिर दयानिधि की, ग़रीबी दूर हो जाये;
मुसीबत गाँव की सारी, सरलता से ही खो जाये।
हमारे गाँव के भाई, ग़रीबी के हैं चंगुल में;
ग़रीबी दूर हो उनकी, उदासी दूर हो जाये।
प्रथाएँ हैं जो सामाजिक, जरूरी है निभाना भी;
न हो दिक़्क़त निभाने में, दिली कोशिश भी हो जाये।
सभी के भाव हों मंजुल, सभी का प्रेम हो मंजुल;
अमीरी में हो मंजुल दिल, लहर "मंजुल" की हो जाये।"

इस शुभ कामना को गाने के बाद रामनाथ ने अपने साथियों से कहा, "पढ़ाई-लिखाई का असली उद्देश्य है—अपना सुधार करना। जब हम स्वयं सुधर चलेंगे तो हमारा गाँव आप ही आप सुधर जायगा। अपने सुधार के लिए आवश्यकता इस बात की है कि हम सहनशील बनें, धीरज के साथ क़दम आगे बढ़ायें, जिसने कभी हमारी बुराई भी की हो उसकी भी भलाई करने में हम न हिचकें। सत्य के रास्ते पर चल कर असत्य को मिटाने की चेष्टा करें। जो कुछ भी काम करें उसमें नेकनीयती की कमी न हो।

ग़रीब से लेकर अमीर तक सभी हमारे मित्र बन सकें ऐसी भावना हमेशा बनी रहे।"

मुखिया श्यामलाल ने कहा, "तुम जो कुछ कहते हो वह सब सही है किन्तु गाँव वाले इतने बड़े महात्मा बन सकेंगे यह हमें विश्वास नहीं होता। पावें तो डेढ़ सेर अन्न हजम कर जाँय किन्तु मामूली-सी बात को हजम करने में इन्हें बड़ी परेशानी होती है। दूसरे गाँव जाकर चाहे लाख बातें सुन आवें किन्तु अपने गाँव में कही गई एक भी बात इन्हें बर्दाश्त नहीं होती। हाँ, जो कोई इनकी बुराई करता है उसकी ये बुराई नहीं करते। क्योंकि समझते हैं कि सवा सेर के सामने सेर कोई चीज़ नहीं है किन्तु इनकी जो भलाई करता है उसकी भलाई करने में इन्हें संकोच अवश्य होता है। जब यह दशा है तब भला इनका सुधार कैसे हो सकता है! "धोये हू सौ बेर के, काजर होत न सेत।"

श्यामलाल की बातों को सुनकर बहुत-से आदमी कुनमुनाने लगे। आपस में काना-फूसी भी चलने लगी। थी तो बात सच्ची। कभी-कभी सच्ची बात भी कटारी की तरह कलेजे में घाव कर देती है। रामनाथ परिस्थिति को समझ गये और श्यामलाल की बातों का जवाब बड़ी ही बुद्धिमानी के साथ देते हुए बोले,

"मैं यह समझता हूँ कि आप अपने अनुभव की बातें बतला रहे हैं। लेकिन ये सब बातें तब थीं जब कि ये लोग निरक्षरता के अभिशाप से पतन की ओर लुढ़कते जा रहे थे। अब तो इन्हें

साक्षरता देवी का अभय वरदान मिल चुका है। उत्थान की ओर इनके क़दम बढ़ने लगे हैं। सुधार का रास्ता कितना सुन्दर और आनन्द देने वाला है वह ये सब समझ चुके हैं। निरक्षर कालिदास जिस डाल पर बैठते उसी को काटते और इस ढंग से काटते कि पलई की तरफ़ आप बैठते और पेड़ी की तरफ़ डाल की कटाई करते। इतने मूर्ख थे। लेकिन साक्षर बन जाने के बाद वे ही कालिदास इतने बड़े कवि हो गये कि आज तक उनका नाम संसार में चल रहा है। इसी तरह यहाँ के लोगों का जीवन निरक्षरता के काल में कैसा था उसका ज़िक्र न करना ही ठीक है। अब तो ये सब साक्षर हो चुके हैं इसलिए। साक्षरता के प्रकाश में इनको किस रास्ते पर चलाया जाय यह एक सोचने की बात है। कहावत भी है कि—

"बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेय।"

"रामनाथ ! तुम धन्य हो !" कह कह कर लोग रामनाथ की प्रशंसा करने लगे। सबों को शान्त करते हुए रामनाथ ने कहा, "कौन ऐसा पाप है जिसे भूखा आदमी नहीं करता; यानी भूखा आदमी अपने पेट के लिए सभी तरह के पाप करता है। मतलब यह कि अगर हम चाहते हैं कि गाँव के आदमी सुधर चलें तो कुछ ऐसे उपाय सोच निकाले जाँय जिनसे कि गाँव वालों की रोटी वाली समस्या हल की जा सके। इसी समस्या के हल होते ही दूसरी समस्याएँ भी हल हो जाँयगी और ये सब आप ही आप सुधार के रास्ते पर चल कर अपना अपना सुधार कर

लेंगे । इन्हीं के सुधर जाने से गाँव का सुधार सफल होगा।"

रामनाथ की बातों को सुनकर पटवारी शंकरलाल ने कहा, "मैं भी इस बात को मानता हूँ कि अगर गाँव वालों की रोटी वाली समस्या हल की जा सकी, तो सुधार के बहुत से काम पूरे हो सकेंगे। लेकिन यह समस्या किस तरह हल की जाय यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है। तुमने अगर कुछ सोचा हो तो बता दो।"

रामनाथ कुछ कहने ही जा रहे थे कि इतने में रघुराज बोल उठा, "आप लोग तो कुछ सोचते ही नहीं है। दो चार दिन इस बात का मनन कीजिए; और इस ढङ्ग से मनन कीजिए मानों ये गाँव वाले सब आपके ही परिवार के हैं। और इनको भोजन देना आपके लिए ज़रूरी है, ऐसी दशा में आप क्या करेंगे ? कुछ न कुछ उपाय सोचेंगे ही। वही सोचा हुआ उपाय काम में लाया जायगा। समस्या हल हो जायगी।"

मुखिया श्यामलाल ने कहा, "जिस रघुराज को बैठने तक की तमीज़ न थी; आज वही रघुराज ऐसी काटछाँट की बातें करने लगा। बड़े ही आश्चर्य की बात है।"

शंभू बनिया ने कहा, "पारस पत्थर के छू जाने से लोहा भी सोना हो जाता है।"

पटवारी शंकरलाल ने शंभू बनिया से कहा, "तुम भी बीच में कूद पड़े और बिना सर पैर की उड़ाने लगे।"

शंभू बनिया, "सच तो कहता हूँ। रामनाथ सरीखे सज्जन पारस पत्थर का संग पाकर लोहा जैसा निरक्षर रघुराज विद्वान् बन गया है। सरस्वती देवी का निवास अब उसकी जीभ पर होने लगा है। नहीं तो अपढ़ रघुराज आज ऐसी बुद्धिमानी की बातें न करता।"

श्यामलाल ने मुस्कुराते हुए कहा, "शंभू बनिया की बात ही क्या है? रामनाथ का सत्संग इन्हें भी प्रिय लगने लगा है। सोचते होंगे जिस तरह रघुराज की जीभ पर सरस्वती देवी का निवास होने लगा है, उसी तरह रामनाथ की कृपा से इनके टेंट में लक्ष्मी देवी का निवास होने लगेगा।"

रामनाथ ने सबों को शान्त करते हुए कहा, "रोटी की समस्या तभी हल होगी जब कि गाँव की ग़रीबी मिटा दी जायगी। आप सब जानते ही हैं कि हमारे गाँववाले कितने ग़रीब हैं। ग़रीबी भी एक बड़ी बला है। ग़रीबी दूर करने के लिए हमें कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।"

पटवारी शंकरलाल ने कहा, "पहले पहल हम सबों को यह सोचना चाहिए कि गाँव में इस तरह ग़रीबी बढ़ने का कारण क्या है? कारण मालूम हो जाने पर कुछ परिश्रम भी किया जा सकेगा।"

मुखिया श्यामलाल ने कहा, "ये लोग पैसा ख़र्च करने का तरीक़ा नहीं जानते।"

शंभू बनिया बोला, "पैसा किस तरह पैदा किया जाता है ये

यह नहीं जानते। जो पैसा पैदा करना जानता है वह पैसा ख़र्च करने का तरीक़ा भी जान लेता है। पैसे तो हैं ही नहीं, ख़र्च क्या करेंगे ?"

रघुराज ने कहा, "भाँग और चरस के लिए पैसे हैं, पान और सुपारी के लिए पैसे हैं, नाच-तमाशे में फूँकने के लिए पैसे हैं, पैसे नहीं हैं सिर्फ़ पेट की रोटी के लिए। अफ़सोस है !"

रामनाथ ने कहा, "भाँग और चरस के लिए जो लोग पैसे ख़र्च करते हैं वे नशे के गुलाम पहले से ही बने हुए हैं। नशे की गुलामी उन्हें विवश कर देती है। पान और सुपारी के लिए पैसे ख़र्च करने वाले लोग अपने मित्रों के चंगुल में फँसे रहते हैं। जब अपने मित्रों के यहाँ पान सुपारी खाने को पाते हैं तब अपने यहाँ उनको क्यों न खिलावें। मित्रता निभाने के लिए उनको ऐसा करना ही पड़ता है। नाच-तमाशे में जो पैसों को बेकार फूँकते हैं वे भी चक्कर में पड़ कर ऐसा करते हैं। गाँव में मेला जिमीदार की तरफ़ से लगता है। दूसरे गाँव वाले चन्दा दे ही देते हैं। इस गाँव के कुछ आदमी ज़िमीदार को खुश करने के लिए चन्दा लिये पहले से ही खड़े रहते हैं। इसीलिए ग़रीब बेचारे भी ज़िमीदार के कोप से अपने को बचाने के लिए चन्दा दे देते हैं। ठीक ही करते हैं।"

रघुराज शान्त हो गया। पटवारी शंकरलाल ने कहा, "मैं तो यही समझता हूँ कि इन गाँव वालों की बेकारी दूर कर दी जाय। खेती किसानी के काम से इन्हें जो समय मिल जाता है

उसमें भी ये कुछ न कुछ काम करते रहें। मैंने अक्सर देखा है कि बेकार होते ही ये इधर उधर की बातें करते-करते आपस में ही लड़ने लगते हैं; और समझौते के लिए मामला मुकदमा तक करने लगते हैं।"

मुखिया श्यामलाल ने कहा, "शंकरलाल का कहना बहुत ही ठीक है। थोड़ी सी बात पर पानी की तरह रुपया बर्बाद होने लगता है। मुकदमेंबाज़ी भी एक बड़ी बुरी लत है।"

रामनाथ ने भी समर्थन करते हुए कहा, "शंकरलाल की सूझ बेशक मानने के लायक है। बेकार आदमी का दिमाग़ शैतान का कारख़ाना बन जाता है। इसीलिए काम में लगे रहना ही चाहिए। एक तो किसी से लड़ाई न होगी, दूसरे कुछ न कुछ घर के लिए काम होता जायगा। मसलन, सनई की सुतली कातना, मूँज की रस्सी बटना, झाऊ से झाबा बनाना, अरहर की टोकरी बनाना। इसके अलावा अपने पढ़ने-लिखने का अभ्यास बढ़ाना। इसी तरह और भी ज़रूरी काम किये जा सकते हैं।"

शंभू बनिया बोला, "ये सब चीज़ें अगर काफ़ी तादाद में बनती रहीं तो मैं इन्हें खरीद लूँगा और शहर में जाकर बेच आया करूँगा। दाम नक़द दूँगा। उधार कौड़ी भी नहीं रखूँगा। इतना ही नहीं, गाँव की माताएँ और बहिनें भी इसी तरह के काम कर सकती हैं। पंखा बनाना, डलिया बनाना आरंभ कर दें तो वे भी कुछ फ़ायदा उठा सकती हैं। मैं यह विश्वास

दिलाता हूँ कि यहाँ का माल मैं शहर में सस्ता बेचूँगा और इस रोज़गार को .ख़ूबी के साथ चला दूँगा, बशर्ते कि गाँववाले अपने अपने माल को अच्छा बनाने की कोशिश करें।

रामनाथ ने प्रसन्न होकर कहा, "अगर ऐसा हो सका तो रोटी की समस्या बहुत कुछ हल हो जायगी। मामले मुकदमे में जो रुपया ख़र्च होता है वह बच जायेगा। समय जो बेकार बर्बाद होता है उसमें बहुत-सा माल तैयार होता जायगा और रुपया मिलता जायगा। यह भी एक अच्छी बचत होगी। खेती किसानी के काम तो ये लोग जिस ढङ्ग से करते हैं, आगे चलकर इससे भी अच्छे ढङ्ग से करने लगेंगे। इसलिए अच्छी उपज की आशा है। अब रहा सिर्फ़ गोधन यानी मवेशियों का विषय। अगर यह भी सम्हल गया तब यह समझ लेना चाहिए कि आर्थिक-सुधार एक प्रकार पूरा हो गया। बाकी रह जायगा केवल नैतिक सुधार। परमात्मा चाहेगा वह भी पूरा हो जायगा। बस धीरज के साथ सच्ची लगन से काम करना चाहिए।

नवाँ परिच्छेद

गाँव की देवी

रघुराज का बेटा चंगा हो गया और गंगादेवी के प्रयत्न से डाइन बुढ़िया का घर-घर आदर होने लगा। एक दिन गंगादेवी ने दुर्गा से कहा, "अब तो तुमने यह समझ ही लिया है कि गन्दगी ही नरक है और स्वर्ग का आनंद सफ़ाई में मिलता है। अब मैं यह चाहती हूँ कि अपने घर तुम गाँव भर की बहनों को बुला कर श्री दुर्गा जी की पूजा कर डालो।"

दुर्गा ने वैसा ही किया। गाँव भर की स्त्रियाँ उसके घर में जमा हो गईं। पूरी विधि के साथ गंगादेवी ने दुर्गा जी की पूजा की और आई हुई स्त्रियों को सम्बोधन करती हुई बोलीं, "बहन दुर्गा के घर में भगवती दुर्गादेवी का पूजन जिस हँसी खुशी के साथ हुआ, उसके लिए मैं आप सब बहनों को धन्यवाद देती हूँ। आप सबों ने कुछ दिन पहले जिस घर को कूड़ाखाने के रूप में देखा था, आज वही घर दुर्गादेवी के मन्दिर की तरह स्वच्छ और सुन्दर दिखाई पड़ रहा है। यह भी कम खुशी की बात नहीं है। बहन दुर्गा सचमुच देवी हैं।"

दुर्गा ने बड़ी ही नम्रता के साथ कहा, "जो जैसा होता है

उसको दुनिया वैसी ही दिखाई पड़ती है । चूँकि गंगादेवी स्वयं देवी का अवतार हैं इसीलिए मुझे भी देवी समझने लगी हैं।"

गंगादेवी ने जवाब देते हुए कहा, "जो जैसे स्वभाव का होता है उसका साथ भी ठीक वैसे ही स्वभाव वाले का हो जाता है। तुम्हारा स्वभाव देवी की तरह है, इसीलिए मेरा साथ तुम्हें पसंद आ गया। दुनिया में जब किसी के साथ किसी का मेल होता है तब उसमें स्वभाव की समता होती ही है। तुम तो इतनी चतुर हो कि अपने को दबाकर मुझे मैदान में खड़ी कर रही हो।"

दुर्गा—"यह तो गाँव की सभी बहनें जानती हैं कि मैं कितनी गन्दी रहा करती थी। कपड़ों से भी हमेशा बदबू आया करती थी। सिर तो जूँ का किला बन चुका था। बच्चा हमेशा बीमार रहा करता था। घर ऐसा मालूम होता था मानों उसमें भूत रहते हों। लेकिन इन गंगादेवी ने ऐसा बरदान दिया कि मैं साफ़ रहने लगीं। कपड़ों की बदबू जाती रही। सिर के जूँ ला पता हो गये। बच्चा बीमारी से छुटकारा पा गया। घर ऐसा मालूम होता है मानों किसी देवी का आगमन हो चुका हो। इतना ही नहीं, वे भी (रघुराज भी) अब मुझे इस नज़र से ताका करते हैं मानों चकोर चन्द्रमा को ताक रहा हो। भाग्य के देवता की प्रसन्नता मुझे तो गंगादेवी के ही आशीर्वाद से प्राप्त हुई। न इनसे भेट होती और न सौभाग्य चमकता।"

पटवारिन ने कहा, "गंगादेवी की तकदीर सिकन्दर थी तभी तो इन्हें देवता की तरह मनचाहे पतिदेव मिल गये हैं। कितने

सीधे, कितने सज्जन और कितने मिलनसार। जब कभी बोलते हैं मानों अमृत टपक रहा हो और एक मेरे घर के हैं। मानों आदमियों के बीच में रहते ही नहीं। जब देखो तब त्यौरी बदली ही रहती है। वही लम्बे-लम्बे काग़ज़ और कलम-दवात लिये बैठे रहते हैं। कोई बात पूछने जाऊँ तो धर के खा लेते हैं। मैं चाहे कितने ही प्रेम से क्यों न बोलूँ लेकिन वे ज़हर ही उगलते हैं। यही तो रोना है।"

दुर्गा ने मज़ाक करते हुए कहा, "अफसोस है कि दूल्हे का मामला है। दस आदमी बुरा कहेंगे, नहीं तो मैं यही सलाह देती कि दूल्हे को गंगादेवी के दूल्हे से बदलाई कर लो। रोना खतम हो जाता और भाग्य के मैदान में कलमी प्रेम का आनन्द निराला हो जाता।"

गंगादेवी ने पटवारिन के साथ समवेदना प्रकट करते हुए कहा, "तुम्हारे दिल की बात मैं समझती हूँ। लेकिन तुम्हें एक बार यह भी समझना चाहिए कि तुम्हारे पतिदेव के सामने कितनी दिक्कतें हैं। पहली दिक्कत तो यह है कि उन्हें अपने चाचा मंगल-राम के पाप का प्रायश्चित्त करना पड़ रहा है। "और करे करनी कछू और पाव फल भोग" वाली बात सही हो रही है।"

दुर्गा ने पूछा, "मंगलराम पटवारी का पाप कैसा ?"

गंगादेवी, "उन्होंने अपने सभी काग़ज़ात फी सदी पचास ग़लत बना रखे थे। उन्हीं सब को इनके पतिदेव को ठीक करना पड़ रहा है। पाँच पाँच गाँव की पटवारगीरी कोई मामूली काम

नहीं है। इस समय वे अपने काम को नेकनीयती के साथ पूरा करने में लगे हुए हैं। अगर पटवारी के काग़ज़ सही न हुए तो किसानों की तक़दीर कभी भी नहीं चमक सकती। सच्ची लगन और कठिन तपस्या से ही मनुष्य की तरक्की होती है। तरक्की होने पर सभी को सुख मिलता है। इनके पतिदेव इस समय सुख की खोज में तरक्की के रास्ते पर नेकनीयती और सच्ची लगन के सहारे चलते जा रहे हैं। इन्हें भी धीरज के साथ उनकी इन दिक़्क़तों को समझना चाहिए। काम के सामने आराम कोई चीज़ नहीं है।"

पटवारिन ने कहा, "तभी तो मैं कहती हूँ कि जितने समझदार तुम्हारे पति हैं उतनी ही समझदार तुम भी हो। हर एक की दिक़्क़तें तुम दोनों को मालूम रहती हैं। कितनी अच्छी जोड़ी है।"

गंगादेवी ने साधारण ढंग से कहा, "दुनिया समझती है कि हम दोनों सुखी हैं, लेकिन उसने कभी हम दोनों के हृदय को नहीं देखा कि गाँव-सुधार के मामले में हम दोनों को किस तरह दिन रात परेशान रहना पड़ता है। चूँकि थोड़ी सी सफलता हो चुकी है इसलिए प्रसन्नता भी है। मैंने तो अपने लिए यही समझ रखा है कि मैं गंगा की तरह पहाड़ से निकल कर सागर की ओर बहती चली जा रही हूँ। कौन जानता है कि आगे चलकर क्या होगा?"

दुर्गा—"सब अच्छा ही होगा। नेकी करने वालों का साथ परमात्मा देता है।"

गंगादेवी—"साथ ज़रूर देता है। फिर भी न जाने जी में कैसा-कैसा हो रहा है। ऐसा मालूम होता है मानों कोई अशुभ

होने वाला हो। यह मैं मानती हूँ कि इस गाँव में हम दोनों का कोई बैरी नहीं है लेकिन दूसरे गाँव वालों से मिल कर ज़िलेदार जो जाल तैयार कर रहा है, वह कभी न कभी हम दोनों के जीवन को मुसीबत में डाल ही देगा।"

गंगादेवी की दुःख भरी बातों को सुनकर पटवारिन को बड़ा ही रंज हुआ। गंगा को समझाते हुए उन्होंने कहा, "मुसीबत उसीको सताती है जो कि नेकनीयती से दूसरों की भलाई करता है। जिन पेड़ों के आम मीठे होते हैं। उन्हीं पर लोगों की नज़र पड़ी रहती है, और उन पर ही डंडे बरसते रहते हैं। दुनिय का दस्तूर ऐसा ही। नहीं तो तुम लोगों को तंग करने के इरादे से दूसरे गाँव वाले ज़िलेदार का साथ देने को क्यों तैयार होते ?"

दुर्गा—"दूसरे गाँव वालों का तुम दोनों ने क्या बिगाड़ा है ? किसी से तो अदावट तक भी नहीं है।"

गंगादेवी—"सामने आने पर कोई भी हम दोनों का नुकसान नहीं कर सकता। फिर भी गली-घाट, अँधेरे-उजाले में डरने की बात है ही। छिप छिप कर अन्यायी और अत्याचारी का साथ देने वाले अब भी अधिक हैं। यही सोच कर मेरा जी कभी-कभी घबड़ा उठता है।"

गंगादेवी और दुर्गा की बातों को सुन कर पटवारिन ने कहा, "तुम दोनों का साथ ऐसा हो चुका है मानो सगी बहनें आपस में मिलकर रहने लगी हों।"

बातों का रङ्ग बदल गया । जवाब देती हुई दुर्गा बोली, "मालूम होता है कि तुम अब नज़र लगाना चाहती हो । सगी बहनें कहीं से बन कर थोड़े ही आती हैं ।"

गंगादेवी ने कहा, "दुर्गा देवी की दया जिस पर हो जाय उसी को धन्य समझना चाहिए । मुझ ग़रीबिन पर आजकल इनकी विशेष दया बनी रहती है । मैं तो धन्य हो गई ।"

दुर्गा—"गंगा जी की धारा में जो पड़ता है वही पवित्र हो जाता है । मुझ दुर्गा को तो इनकी एक ही लहर ने धन्य कर दिया और मेरे सौभाग्य के दिन फिर आये । गंगा की महिमा अपार है ।"

पटवारिन ने मुस्कुराते हुए कहा, "गंगादेवी और दुर्गादेवी दोनों ही देवियाँ हैं । देवी का आदर देवी करती है । अगर ऐसी ही देवियाँ घर-घर हो जायँ तो फिर क्या कहना है ।"

बुढ़िया बेचारी जो अभी तक चुपचाप बैठी थी, मुस्कुराती हुई बोली, "गङ्गादेवी की एक ही लहर ने दुर्गादेवी की पुरानी दुनिया बहा दिया और नई दुनिया बसा दी ।"

पटवारिन—"दुर्गादेवी की पुरानी दुनिया गंगा की लहर में बह गई ! कहती क्या हो ?"

बुढ़िया—"दुर्गादेवी की पुरानी दुनिया में थे—खटमल, जूँ, चीलर, झींगुर, मक्खी, और मच्छड़ । अब तो इस घर में उनका नाम तक भी नहीं रह गया है । सब बह गये ।"

पटवारिन—"तभी तो भूतिन-सी दुर्गा की मूरत पूनो की चाँद की तरह खिल पड़ी है।"

पटवारिन की बातों को सुनकर दुर्गा ने कहा, "मालूम होता है कि पूनो की चाँदनी तुम्हारे कलेजे में आग जलाने का काम कर रही है।"

पटवारिन, "यह तो एक अनहोनी बात है। पूनो की चाँदनी से कलेजे की धधकती हुई आग आप ही आप ठंडी पड़ जाती है। तबियत ख़ुश हो जाती है।"

गंगादेवी ने कहा, "इस ढङ्ग से कहो कि, जिस घर में अमावस बनी रहती है थी उसमें अब पूर्णमासी ही बनी रहती है। तभी तो चकोर पागल बन-रहा है।"

सब को हँसी आ गई। बुढ़िया ने कहा, "मैं अपनी क्या सराहना करूँ? जिस गाँव में मेरा अपमान होता था और लोग घृणा-भरी दृष्टि से मुझे देखा करते थे, अब उसी गाँव में गङ्गादेवी की असीम कृपा से मेरा आदर होने लगा है। जो लोग यह कहते थे कि बुढ़िया की नज़र लग जाने से बच्चे बीमार हो जाते हैं अब गंगादेवी के आशीर्वाद से वही लोग बीमार बच्चों की सेवा के लिए मुझे अपने अपने घर बुलाने लगे हैं। मेरी झोपड़ी को डाइन का घर समझ कर दूर भागने वाले भी निडर होकर उसकी मरम्मत कर देने का वचन भी देने लगे हैं। कलंकमय जीवन का अन्त कर देने वाली गंगादेवी सचमुच किसी देवी का अवतार हैं।"

पटवारिन—"लोग कहते थे कि औरत घर की देवी है, लेकिन औरतों में इतनी समझ न थी कि वे अपने को देवी की तरह बना सकतीं। जब से गंगादेवी के चरण इस गाँव में पड़े तभी से गाँव का रँग बदलने लगा। पास पड़ोस की बहनें इनके उपदेशों के अनुसार चलकर देवियाँ बनने के योग्य हो गईं। इस गाँव के घर-घर में अब देवियाँ ही देवियाँ हैं और उनको इस पद पर बनाये रखने के लिए गङ्गादेवी की महिमामयी तपस्या है। इसीलिए मैं तो इन्हें गाँव की देवी समझती हूँ। हम सबों को इनके उपकार कभी भी न भूलना चाहिए।"

समर्थन करते हुए दुर्गा ने कहा, "अब मैं भी इन्हें गाँव की देवी ही समझूँगी।"

बुढ़िया ने कहा, "मैं तो इन्हें गाँव की देवी मानकर बड़ी ही श्रद्धा के साथ इनकी मानसी पूजा करती रहती हूँ। परमात्मा इनका कल्याण करें।"

दसवाँ परिच्छेद

गाँव का मदरसा

मुंशी रामकिशोर गाँव के मदरसे के मुदर्रिस थे। बच्चों को पढ़ाई-लिखाई पर उनका ध्यान अधिक रहा करता था। लेकिन बच्चों की सफ़ाई और उनकी आदत के सुधार की ओर से वे हमेशा ही उदास बने रहा करते थे।

पहले तो रामनाथ ने यह चाहा कि मुन्शी रामकिशोर को अपने घर बुलाकर समझा दिया जाय कि सिर्फ़ किताब पढ़ाने का ही काम गाँव के मुदर्रिस के लिए नहीं है, बल्कि उसे इस ढङ्ग से अपना काम करना चहिए कि गाँववालों जिससे की निगाह में उसकी काफ़ी इज़्ज़त हो और, उसके पढ़ाये हुए लड़के अपने घर के काम-धंधों को सरलता के साथ कर सकें।

यह विचार उनके दिल में उठा और दिल में ही दब गया। कुछ दिनों के बाद यह विचार फिर उठा। वे सीधे गाँव के मदरसे की ओर चल पड़े।

उस समय मुन्शी रामकिशोर दर्जा "अ" के लड़कों को पढ़ा रहे थे। रामनाथ को आते हुए देखकर उन्होंने उनका स्वागत किया और मदरसे आने का कारण जान लेने पर बड़ी

.खुशी के साथ कहा, "मैं तो यह चाहता हूँ कि आप सब बराबर नेक सलाह देते रहें।"

रामनाथ, "गाँव के लोग यों ही अपने अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई से उदास बने रहते हैं। इस पर यदि उनके बच्चे घर के काम-धन्धों से दूर भागने लगे तो फिर गाँव वाले भला क्यों मदरसे बच्चे भेजना पसंद करेंगे ?"

रामकिशोर, "मैं किसी बच्चे को मना थोड़े ही करता हूँ कि वह घर का काम-धंधा न करे। मदरसे में अधिक से अधिक छः घंटे का समय लगता है। बाक़ी तो दिन भर फ़ुर्सत ही फ़ुर्सत है।"

रामनाथ, "किताब की पढ़ाई के अलावा बच्चों को ऐसी नसी-हतें देनी चाहिए जिससे कि घर का काम-धंधा करने की ओर उनकी रुचि बढ़ती जाय। उनके पिता जब देखेंगे कि बच्चे कुछ न कुछ उनका हाथ बटाने लगे हैं तो वे खुशी खुशी बच्चों को मदरसे भेजने लगेंगे। आज जो तादाद बीस के है वही तीन ही महीने में पचास के ऊपर हो जायगी। मदरसे की तरक्की भी होगी और आपका नाम भी हो जायगा। गाँवों के मदरसे मुदर्रिस की ही बदौलत चला करते हैं। यही समझाने के लिए मैंने इस तरह आपको कष्ट देने का साहस किया है। क्षमा कीजिएगा।"

रामकिशोर, "आपकी सज्जनता सराहनीय है। बड़ी प्रसन्नता होगी यदि आप उपयोगी नसीहतों के एकाध नमूने बतला देते।

मेरे काम में जो दिक़्क़तें हैं वे उनसे दूर हो सकेंगी ऐसी मुझे आशा है।"

रामनाथ, "बड़ी ख़ुशी की बात। अच्छा, दर्जा "अ" के लड़कों को बुलायें। क्योंकि नमूना और उसका नतीजा जल्द मालूम हो जाना चाहिए।"

दर्जा "अ" के लड़के बुलाये गये। कुल तादाद आठ क थी। रामनाथ ने सबसे छोटे लड़के से सवाल किया, "तुम्हारा नाम क्या है?"

लड़के ने जवाब दिया, "मेरा नाम सुखदेव है।"

रामनाथ, "अच्छा सुखदेव, यह तो बताओ कि तुमको पेड़ा अच्छा लगता है या बरफ़ी? डरो नहीं। सच सच बता दो।"

सुखदेव, "बरफ़ी अच्छी लगती है।"

रामनाथ, "शाबाश, बरफ़ी आज ही मँगा दी जावे या कल?"

सुखदेव, "आज ही।"

रामनाथ, "तो फिर एक काम करो। तुम्हारे ये कपड़े जो बहुत ही मैले हैं इन्हें साफ़ कर लाओ। जब तुम साफ़ कपड़े पहन आओगे तब तुम्हें बरफ़ी मिल जायगी।"

सुखदेव, "मैं अभी घर जाता हूँ और साफ़ कपड़े पहन कर आता हूँ।"

रामनाथ, "मुंशी जी से कहकर जाना। यों मत चले जाना।"

सुखदेव ने रामकिशोर से कहा, "क्या मैं घर जा सकता हूँ?"

रामकिशोर, "क्यों?"

सुखदेव, "मेरे कपड़े बहुत ही गंदे हैं। इन्हें साफ़ करूँगा।"

रामनाथ ने रामकिशोर से कहा, "नमूना और उसका नतीजा यही है।"

रामकिशोर, "आपका तरीक़ा बहुत ही अच्छा है।"

रामनाथ, "अब आप दर्जा "ब" के लड़कों को बुलायें।"

दर्जा "ब" के भी लड़के आ गये। इस दर्जे में छः लड़के थे। रामनाथ ने सबसे बड़े लड़के से उसका नाम पूछा। नाम "संकठा" जान लेने पर उन्होंने उससे पूछा, "अच्छा संकठा, यह तो बताओ कि जब तुम घर पर रहते हो और तुम्हारे पिता जी खेत से घर आते हैं, तब तुम उनके लिए क्या करते हो? खेल में लगे रहते हो या उनको लोटा भर पानी लाकर देते हो?

संकठा, "जब पिता जी पानी माँगते हैं तब माता जी ला देती हैं।"

रामनाथ, "तब तो तुम बड़े ख़राब लड़के हो। अब तो मुझे मालूम हो गया कि तुमको पढ़ना-लिखना न आयेगा।"

संकठा, "मैं अपना सब सबक़ याद कर लेता हूँ।"

रामनाथ, "जो लड़के अपने पिता को घर आते ही लोटा भर पानी नहीं देते वे याद किया हुआ सबक़ हमेशा भूल जाते हैं और गँवार बने रहते हैं। समझे?"

संकठा, "तो क्या मुझे भी सब सबक़ भूल जायगा?"

रामनाथ, "अगर अपने पिता को घर आने पर बिना

माँगे ही लोटा भर पानी न दोगे तो ज़रूर भूल जायगा। जो बात सही है वह बतला दी गई।"

संकठा, "आज ही से मैं पिता जी को घर आते ही बिना उनके माँगे लोटा भर पानी ला दिया करूँगा ताकि सब सबक़ याद रहे।"

रामकिशोर, ने मुस्कुराते हुए रामनाथ से कहा, "आप बड़े योग्य हैं।"

रामनाथ ने कहा, "इसमें योग्यता की कोई बात नहीं है। बच्चों को पढ़ाने के लिए बच्चों की ही तरह अपने को भी बनाना पड़ता है ताकि बच्चे मुदर्रिस से डरें नहीं।"

रामनाथ के कहने से दर्जा "एक" के लड़के बुलाये गये। इस दर्जे में सिर्फ़ तीन लड़के थे। इन लड़कों के नाम रामनाथ जानते थे। इसलिए उन्होंने किसी से नाम न पूछ कर एक लड़के से सीधे सवाल किया, "तुम सबेरे सोकर कब उठते हो? सच्ची बात बतला देना। छिपाना नहीं।"

लड़का, "जब अम्मा उठाती हैं तब उठता हूँ।"

रामनाथ, "और अपने मन से कभी नहीं उठते?"

लड़का, "अपने मन से उठने का मौका ही नहीं मिलता।"

रामनाथ, "मान लो, तुमको किसी ने नहीं उठाया तब कब उठोगे?"

लड़का, "जब तक भूख न लगे तब तक सोता ही रहूँगा।"

रामनाथ, "इसीलिए तुम्हें पैसे नहीं मिलते। मैंने सुना है कि

गाँव के बाहर जो मैदान है और उस मैदान में जो फूलों का बगीचा है उसमें एक परी बहुत ही सबेरे आती है। जो लड़का सबसे पहले उससे मिलता है उसे वह रोज़ चार पैसे मिठाई खाने को दे जाती है। अगर तुम चाहते हो कि चार पैसे रोज़ मिठाई खाने को मिलते रहें तो सबेरे उठकर उसी बगीचे में जाया करो और सबसे पहले उस परी से मिलने की कोशिश किया करो। परी बच्चों को बहुत प्यार करती है। बच्चे भी परी से मिलना बहुत पसंद करते हैं।"

लड़के की जीभ में पानी आ गया। उसने कहा, "कल से मैं ज़रूर उस बगीचे में सबेरा होते ही जाया करूँगा और सबसे पहले उसी परी से मिल कर पैसा ले लिया करूँगा। चार पैसे की मिठाई रोज मिलती रहेगी।"

इसके बाद दर्जा "दो' के लड़के आये। इसमें भी तीन ही लड़के थे। रामनाथ ने उन तीनों लड़कों से कहा, "हम एक सवाल पूछते हैं। उसका जवाब जो लड़का सही सही बतला देगा उसको तसवीरों की एक बढ़िया किताब इनाम में दी जायगी। सवाल यह है—मान लो तुम अपने पिता के साथ किसी मेले में गये। मेले में हलवाई की दूकान पर जलेबियाँ, गुलाब जामुन और दूसरे क़िस्म की बहुत-सी मिठाइयाँ खुली रखी हुई हैं और उन पर मक्खियाँ भिनभिना रही हैं, या मेले की गर्दा उन पर पड़ रही है। ठीक इसी जगह पर तुम्हारे पिता चार-चार

आने पैसे मेले में ख़र्च करने के लिए देते हैं। तो तुम क्या करोगे?"

तीनों लड़कों ने एक साथ कहा, "मिठाई लेकर खा जाँयगे।"

रामनाथ ने कहा, "तुम लोग चूक गये और इनाम भी न पा सके। कहाँ चूके इसका पता लगाना और अपने घर में जाकर पिता जी से भी पूछ लेना। तब फिर इनाम का दूसरा मौका दिया जायगा।"

रामनाथ की बातों को सुनकर लड़के आपस में एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। उनकी समझ में यह न आया कि जवाब देने में उन सबों ने क्या ग़लती की है। लड़कों के मन की बात रामनाथ ताड़ गये और मुस्कुराते हुए बोले, "अगर तुम्हारे पिता जी इस सवाल का जवाब न बतायें तो अपने मुंशी जी से पूछ लेना। ये ज़रूर बतला देंगे।"

मुंशी रामकिशोर बहुत ही ख़ुश हुए। रामनाथ ने कहा, "ये तो सिर्फ़ नमूने हैं। इन्हीं के आधार पर नये नये नमूने और तरीक़े तैयार किये जा सकते हैं। अब आप ही सोचें कि, जब दर्जा "अ" का लड़का अपने कपड़े साफ़ करने लगेगा तो क्या उसके माता-पिता उसके कपड़े साफ़ न कर देंगे? इसी तरह दर्जा "ब" का लड़का जब अपने पिता को बिना माँगे ही लोटा भर जल ला देगा तो क्या पिता का हृदय कम प्रसन्न होगा? यही बात दर्जा "एक" और "दो" के लड़कों के बारे में सोच लेनी चाहिए। घर गाँव में आपकी तारीफ़ हो जायगी और बच्चे काफ़ी

तादाद में इसी मदरसे में आने लगेंगे। मदरसे की तरक्क़ी मुदर्रिस की तालीम पर है।"

रामकिशोर ने रामनाथ से कहा, "आपने जो इतना कष्ट किया उसके लिए मैं आपका अहसान मानता हूँ और ईश्वर चाहेगा तो आगे चलकर इसी ढंग की तालीम पर मदरसे को तरक्क़ी तक पहुँचा देने की भरसक कोशिश करता रहूँगा।"

"ईश्वर आपको सफलता दे" कहते हुए रामनाथ वहाँ से घर वापस आये। रामकिशोर अपने मन में सोचने लगे, "मालूम नहीं कि ये रामनाथ अपने गाँव के कितने अच्छे आदमी हैं। जिधर देखो उधर ही इनकी बुद्धि का चमत्कार देखने को मिलता है। क्या गाँव-सुधार, क्या समाज-सेवा, क्या साक्षरता-प्रसार, क्या नवीन शिक्षा-प्रणाली, सभी में ये हाथ डालते हैं और सफलता इनका पैर चूम लेती है। गाँव-सुधारक हो तो ऐसा ही हो जिसे कि आवश्यक सुधार के लिए दूसरे का मुँह न ताकना पड़ता हो।"

ग्यारहवाँ परिच्छेद

—:(o):—

वाचनालय और पुस्तकालय

जब कुछ लोग लिख-पढ़ कर तैयार हो गये तब रामनाथ ने शंकरलाल पटवारी के पास जाकर कहा, "अब कुछ ऐसा प्रयत्न करना चाहिए जिससे कि गाँव के रहने वाले समाचार-पत्रों को पढ़कर अपने लिए ज़रूरी समाचारों को जान सकें। यह काम भी इनके हित-साधन का बड़ा सहारा होगा।"

अपने सिर को खुजलाते हुए शंकरलाल ने कहा, "है तो विचार अच्छा, लेकिन अभी ये लोग समाचार-पत्रों को पढ़ सकेंगे ऐसी मुझे उम्मीद नहीं है। समाचार पत्रों को पढ़ने के लिए अभ्यास होना चाहिए।"

रामनाथ, "फिर भी कुछ समाचार-पत्र मँगा कर यह कोशिश की जानी चाहिए कि जो लोग लिख-पढ़ कर तैयार किये जा चुके हैं उनमें समाचार-पत्र पढ़ने का शौक़ पैदा हो जाय, जिससे कि वे कुछ अधिक समझदार बन सकें। इसके अलावा जब तक समाचार-पत्र और उपयोगी पुस्तकें मँगाकर इकट्ठी नहीं की जातीं तब तक इन लोगों का अभ्यास बढ़ाया जाना कठिन काम है। इसलिए मैं तो यही उचित समझता हूँ कि समाचार-पत्र मँगा लेना चाहिए।"

शंकरलाल, "अच्छी बात है लेकिन दाम खर्च करके नहीं। पहले उन्हें बतौर नमूने के मँगाकर देख लिया जाय कि उनसे हमारा काम चल सकता है या नहीं। इसके बाद जो उचित जँचे वही मँगाना अच्छा होगा।"

रामनाथ, "मैं तुम्हारी राय मानता हूँ। कुछ ख़ास-ख़ास अख़बार और कुछ चुनी हुई पुस्तकें मँगा ली जावें। फिर सब की जो राय होगी वह किया जायगा। मानता हूँ कि अभी ये गाँव वाले अच्छी तरह अख़बार नहीं पढ़ सकेंगे लेकिन कुछ लोग तो फ़ायदा उठा ही सकते हैं।"

शंकरलाल ने रामनाथ से कहा, "ख़ास-ख़ास अख़बारों के नाम तो बताओ और यह भी बताओ कि उनके मँगाने में सालाना ख़र्च क्या पड़ेगा ?"

रामनाथ, "अफ़सोस है कि इतने पढ़े-लिखे होते हुए भी तुम ख़ास-ख़ास अख़बारों के नाम नहीं जानते। मेरा मतलब यह है कि अख़बार मँगाकर वाचनालय की और पुस्तकें इकट्ठी करके पुस्तकालय की स्थापना कर दी जाय और इस शुभ कार्य में तुम सब लोगों की पूरी सहायता होनी चाहिए। देवी सरस्वती का मन्दिर गाँव का कल्याण ही करेगा।"

इतने में मुखिया श्यामलाल आ गये। उनके आते ही शंकरलाल ने कहा, हमारे रामनाथ जी यह चाहते हैं कि खेत ताकनेवाले किसान अब अख़बारों के लिए डाकिये को ताकना सीख जायँ। और घर की ख़बर चाहे रखें या न रखें लेकिन दुनिया

की खबर से कभी भी बेखबर न रहें। कहिए, इसमें आप की क्या राय है?"

शंकरलाल की बातों को सुनकर श्यामलाल ने कहा, "मैं क्या राय दूँ? दस भले आदमी जिस काम को पसंद करेंगे वह काम मुझे भी पसंद होगा।"

रामनाथ, "अख़बार पढ़ने से बहुत-सी ऐसी बातें मालूम हो जाती हैं जिनके न जानने से हम लोग अकसर नुकसान उठाते हैं। जिन लोगों को अख़बार पढ़ने का अभ्यास नहीं है उन्हें अख़बारों के समाचार पढ़-पढ़ कर समझा दिये जाँय ताकि ज़रूरी समाचारों को वे भी मालूम कर सकें और फ़ायदा उठावें।"

श्यामलाल, "बड़ी अच्छी बात है। जिससे दस आदमी का भला होता हो वह काम ज़रूर करना चाहिए। मेरे लिए जो काम हो, उसे बता देना। मैं तैयार हूँ।"

शंकरलाल, "अगर आप तैयार हैं तो मैं भी तैयार हूँ।"

इतने में शम्भू बनिया आ पहुँचा और रामनाथ से बोला, "सात दिन पहले की बात है। तुमने अख़बार पढ़कर यह बतलाया था कि कानपूर में तेलहन का भाव बढ़ता जा रहा है। मैं तुरंत पाँच गाड़ी सरसों और लाही ले गया। क्या बताऊँ? जाते ही जाते माल बिक गया और लगभग तीन सौ रुपये का फ़ायदा भी हो गया। वहाँ से जो माल ले आया हूँ उसमें भी लगभग इतना ही फ़ायदा होगा। मैं चाहता हूँ कि गाँव-सुधार के लिए दो सौ रुपये तुम्हें दे दूँ।"

रामनाथ ने कहा, "गाँव सुधार के लिए दिल चाहिए। रुपये अपने पास रखो। गाँव के दस आदमी जो काम चन्दे से करना चाहेंगे उसके लिए जो कुछ उचित समझेंगे वह तुमसे चन्दे के रूप में ले लेंगे। मैं तुम्हारी नेकनीयती से प्रसन्न हो गया। दानवीर हों तो तुम्हारे ही जैसे हों। परमात्मा तुम्हें सुखी रखे।"

श्यामलाल ने रामनाथ से कहा, "हमारे गाँव का शम्भू भी काम उत्साही नहीं है। गाँव की भलाई वाले कामों में हमेशा हाथ बटाने को तैयार रहता है। यों तो कजूस भी अव्वल दर्जे का है लेकिन सिर्फ़ अपने लिए।"

शम्भू ने कहा, "बनिया अपना गुड़ चुरा कर खाता है।"

शंकरलाल ने कहा, "गुड़ चुराकर खाय या ऐलानिया खाय। इससे हमें क्या करना है। शंभू गाँव के लिए तो सचमुच भोलेबाबा का अवतार है।"

रामनाथ ने कहा, "शंभू की ही बदौलत गाँव की रोटीवाली समस्या बहुत कुछ हल होने लगी है। सच कहा जाय तो दरिद्रता का नाश व्यौपार से ही होता है। जिसे व्यौपार करना आ गया; लक्ष्मी उसी के चंगुल में फँसी रहती है। मैं तो शम्भू से यह ज़रूर कहूँगा कि गाँव के कुछ होनहार बच्चों को व्यौपार करना सिखा दे, जिससे कि गाँव से दरिद्रता और बेकारी का नाम व निशान हमेशा के लिए नष्ट हो जाय और लोग सुख से रोटी खाने लगें।"

शंभू बनिया कुछ कहने ही जा रहा था कि अपने कुछ मित्रों को साथ लिये हुए रघुराज आ पहुँचा और बोला, "मैं आप लोगों को एक ख़ुश ख़बरी सुनाता हूँ।"

श्यामलाल ने कहा, "तुम तो साक्षात् देवदूत की तरह उतर पड़े हो।"

शंकरलाल ने कहा, "रघुराज तो खुश ख़बरी का अख़बार ही बन गया है।"

रामनाथ ने प्रसन्न होकर पूछा, "खुशख़बरी के लिए धन्यवाद है।"

रघुराज ने कहा, "इस साल के लगान में चार आने की छूट हो गई है।"

श्यामलाल, "तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ?"

शंकरलाल, "मुझे न मालूम हुआ और तुमने मालूम कर लिया?"

रामनाथ, "आख़िर तुम्हें यह किस तरह मालूम हुआ?"

रघुराज, "अख़बारों में छप चुका है। और यह भी छपा हुआ है कि जिन किसानों को खेती के लिए रुपयों की ज़रूरत हो वे तहसीली में जाकर तकाबी ले आ सकते हैं। इससे अधिक ख़ुशी की ख़बर और क्या हो सकती है?"

रामनाथ, "इसी ख़ुशख़बरी के उपलक्ष में उचित यही होगा कि आज ही इस गाँव में वाचनालय और पुस्तकालय का श्री गणेश कर दिया जाय। लगभग डेढ़ सौ पुस्तकें हमारे पास हैं वे

मैं पुस्तकालय को अर्पण कर दूँगा। जो अखबार मेरे यहाँ आते हैं उनसे वाचनालय का काम चलाया जाय। आगे चलकर आप लोग इस कार्य को सफल बनाने की चेष्टा करेंगे ही, इसमें कोई सन्देह की बात नहीं है।"

प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। रामनाथ के घर से पुस्तकें और अखबार मँगा लिये गये। मुखिया श्यामलाल कार्यकारिणी समिति के सभापति और पटवारी शंकरलाल मंत्री बनाये गये। रघुराज और उसका मित्र-मंडल सदस्य बन गया। शंभू बनिया को कोषाध्यक्ष का पद दिया गया। अपने संबंध में रामनाथ ने इतना ही कहा, "मैं तो आप लोगों का सेवक हूँ ही। सेवक की सेवा आप लोगों के हित-साधन के लिए अर्पित हो चुकी है इसलिए सेवक को इसी तरह निरुपाधि रहने दीजिए।"

बारहवाँ परिच्छेद

सुधार के विरोधी

रामनाथ को अपने काम में अधिक सफल होते देख कर ज़िलेदार की बेचैनी तेज़ी के साथ बढ़ने लगी। उसे यह भी विश्वास हो चुका था कि अर्जुनखेड़ा वाले रामनाथ के विरोध में चूं तक भी नहीं करेंगे। मुखिया श्यामलाल सीधे-सादे स्वभाव के हैं ही। पटवारी शंकरलाल का ठिकाना ही क्या है ? रघुराज और उसके साथी जिलेदार के स्वभाव को जानते ही हैं। शंभू बनिया भला गाँव वालों का साथ कब छोड़ने लगा। सहारे के लिए रह गया केवल चौकीदार। जिलेदार ने उसी को बुलवाया और दूसरे गाँव के दो चार आदमी जिन पर कि उनका पूरा भरोसा था उन सब को बुला भेजा।

चौकीदार का नाम था पंचम पासी। उसके आते ही जिलेदार ने उससे कहा, "क्या यह बता सकते हो कि रात में रामनाथ के पास पढ़ने के लिए कौन-कौन जाता है ?"

पंचमपासी ने कहा, "गाँव के लगभग सभी जाते हैं। दरबार-सा लगा रहता है।"

ज़िलेदार, "सुरजू पासी, भोला लोध, लछमन लोनिया,

मंगल चमार, मटरू अहिर और सिद्धा डोम ये सब उसके पास रात में पढ़ने जाते हैं या नहीं ?"

पंचम पासी, "ये लोग तो जाते ही हैं और अपने साथियों को भी साथ ले जाते हैं।"

जिलेदार, "तुम अपने काम में इतने चौकस रहते हो यह मैंने आज ही जाना।"

पंचम पासी, "अगर चौकस न रहूँ तो फिर चौकीदारी का काम कैसे चल सकता है ?"

जिलेदार, "तुम्हें आज थाने तक जाना पड़ेगा। काम ज़रूरी है। जाओ, खा-पीकर तैयार हो आओ। लेकिन यह बात किसी को न मालूम हो कि मैंने तुमको थाने भेजा है।"

पंचम पासी, "आप जैसा चाहते हैं मैं वैसा ही काम करूँगा। अच्छा, अब मैं चलता हूँ। जहाँ तक होगा घर से जल्द लौटने की कोशिश करूँगा।" कहता हुआ वह चला गया।

उसके जाने के बाद अपने सिपाही को किसी काम से भेज कर ज़िलेदार ने गाना शुरू कर दिया,

"भज कलदारं भज कलदारं
कलदारं भज मूढ़मते !
"है कलदार न जिसके पास,
करे ग़रीबी घर में वास;
दुनियाँ में वह रहे उदास;
रोवे दिन भर करे उपास।

भज कलदारं भज कलदारं
कलदारं भज मूढ़मते !

"जिसके जो हैं रिश्तेदार,
हाकिम और सरिश्तेदार;
पटवारी औं थानेदार,
रुपये के हैं ताबेदार।
भज कलदारं भज कलदारं
कलदारं भज मूढ़मते !

"फूफा, मामा, जीजा, सार,
चाचा, चाची और औ परिवार;
दुश्मन, दोस्त, पड़ोसी यार,
लख रुपया सब करते प्यार।
भज कलदारं भज कलदारं,
कलदारं भज मूढ़मते !

"दुनिया का है यह दस्तूर,
होता सदा वही मशहूर;
रुपया जिसके है भरपूर,
रुपया बिना कहाता क्रूर।
भज कलदारं भज कलदारं,
कलदारं भज मूढ़मते !

"ज्ञानी होवें व्यास समान,
हिन्दू अथवा हों क्रिस्तान;

पढ़ें वेद या पढ़ें कुरान,
रुपया बिना नहीं है मान।
भज कलदारं भज कलदारं
कलदारं भज मूढ़मते !

"इस कलियुग में है कलदार,
सच्चा ईश्वर का अवतार;
जो लेता है इसको धार,
उसका होता बेड़ा पार।
भज कलदारं भज कलदारं
कलदारं भज मूढ़मते !"

गाने का काम समाप्त होते ही जिलेदार के बुलाये हुए आदमी आ पहुँचे। उन सबों के आते ही जिलेदार ने बड़े प्रेम के साथ बैठाया और कहा, "आप लोग मुझे इतना मानते हैं यह आज ही मालूम हुआ। मुझे तो आप जैसे दोस्तों का ही सहारा है।"

पहला आदमी, "आज आप कैसी कैसी बातें कर रहे हैं? जिस चेहरे पर चिन्ता की एक रेखा तक भी नहीं दिखाई पड़ती थी. आज वही चेहरा इतना उतरा हुआ क्यों दीख रहा है?"

जिलेदार, "जिस मालिक का नमक खाता हूँ अगर उसी का काम मुझसे न हो सका तो फिर मुझे जीने को धिक्कार है। मालिक का नमक अदा करना ही तो नौकर का काम है।"

दूसरा आदमी, "कौन ऐसी कठिनाई आ पड़ी है जिससे कि आप परेशान हो रहे हैं ?"

जिलेदार, "अगर कोई कठिनाई न पड़ी होती तो फिर आप लोगों को क्यों कष्ट देता ?"

तीसरा आदमी, "हम लोगों से जो कुछ बन पड़ेगा उसके लिए हमेशा तैयार हैं।"

ज़िलेदार, "आप लोगों से मुझे ऐसी ही आशा है।"

चौथा आदमी, "अब आप यह बतलायें कि आपके सामने कठिनाई किस बात की है ?"

जिलेदार, "कुछ दिन पहले आप लोगों की मदद से मैंने जिन लोगों को सज़ा कराई थी अब वही सब इतने चतुर और चालाक हो गये हैं कि जब देखो तब कानून ही बघारा करते हैं।"

पहला आदमी, "पुलिस थाने में रिपोर्ट क्यों नहीं करा देते ? आप ही ठंडे पड़ जायँगे।"

जिलेदार, "पहले की तरह अब ये सब मूर्ख नहीं हैं। पढ़े-लिखे समझदार बन चुके हैं।"

दूसरा आदमी, "अजी इससे होता ही क्या है ? पुलिस के चक्कर में समझदारी हवा हो जाती है।"

ज़िलेदार, "सिवा मुंशी जी के थाने में मेरा और कोई मुलाक़ाती भी नहीं रह गया है।"

तीसरा आदमी, "मुलाक़ात करने से ही मुलाक़ाती भी बन जाते हैं। इसमें घबड़ाहट ही क्या है ?"

जिलेदार, "पुलिस थाने का मामला मामूली नहीं होता। मान और अपमान दोनों एक ही साथ वहाँ पाये जाते हैं। कभी तो पहले मान होता है फिर अपमान का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पहले अपमान की कँटीली झाड़ी में सारा शरीर छिद जाता है। बाद में फिर मान की अभिमान भरी शीतल-मन्द-सुगन्ध वायु में जीवन को धन्य समझने का अवसर मिल जाता है।"

चौथा आदमी, "गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि जो कर्मयोगी होते हैं यानी जिन्हें अपने काम को पूरा करना होता है वे सुख-दु:ख, जय-पराजय, हर्ष-विषाद, उत्थान-पतन, लाभ-हानि और मान-अपमान की कुछ भी पर्वाह नहीं करते। इसके अलावा कहावत भी है कि "एकहि साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।' अगर थाने के मुंशी जी पर आपको भरोसा है तो फिर काम न पूरा होगा यह सोचना ही बेकार है। कुंजी तो हाथ में ही है।"

पहला आदमी, "बिना कुंजी के ताला बेकार है और बिना मुंशी के थाना बेकार है।"

दूसरा आदमी, "कुछ काम की भी बातें होंगी या यों ही बैठकबाज़ी चलती रहेगी ?"

तीसरा आदमी, "भैंस के आगे बीन बाजे, भैंस पड़े पगुराय।" काम की तो इतनी बड़ी बड़ी बातें हो रही हैं जिनको कि ये समझ भी नहीं पा रहे हैं। भाई सीधी-सादी भाषा में बातें करो।"

चौथा आदमी, "समझ तो आजकल रामनाथ के यहाँ टके पसेरी मिल रही है। जिसका जी चाहे चला जाय और समझ की गठरी सिर पर लाद कर ले आये। फिर सारी समझ आ जायगी।"

दूसरा आदमी, "रामनाथ जैसे छोकड़ों को मैंने ऐसा रास्ता बताया कि आज तक लौटा ही नहीं।"

जिलेदार ने प्रसन्न होकर कहा, "अब रामनाथ को भी वही रास्ता बता दो तो जानें कि तुम बहादुर आदमी हो। इतना ही नहीं, चार बीघे की माफ़ी, आठ बीघे का बगीचा और एक सौ रुपये इनाम में भी मिलेंगे। इम्तहान तुम्हारी अक़्ल का है। बोलो, तैयार हो या नहीं?"

दूसरा आदमी अपने गाँव का मुखिया था। साहस करता हुआ बोला, "लेकिन मैं जैसा कहूँ वैसा तुम लोगों को भी करना पड़ेगा। काम अकेले का नहीं है। साथ पूरा मिलना चाहिए।"

सबों ने कहा, "इसकी चिन्ता न करो। हम सब इस मामले में तुम्हारी हर एक बात मानने को तैयार हैं।"

दूसरा आदमी, "अच्छी बात है। अब मैं भी अपना पहला तीर चलाता हूँ।"

जिलेदार ने कहा, "तीर ऐसा चलाना जिससे कि निशाना न चूके। क्योंकि सोते हुए शेर को जगाना और रामनाथ को छेड़ना दोनों ही बराबर है। काम समझदारी के साथ करना।"

पहला आदमी, "मैं भी यही कहने वाला था। अब वह ज़माना नहीं रह गया है। पुराने हथियार पुराने ज़माने के साथ साथ बेकार हो चुके हैं। उनसे काम नहीं चल सकेगा।"

तीसरे आदमी ने कहा, "अरे इनको सिखाना ही क्या है? ये सब जानते हैं। जैसा शिकार होगा वैसा ही तीर भी चलायेंगे।"

चौथे आदमी ने कहा, "इनके पास तीरों की क्या कमी है? मच्छड़ से लेकर शेर तक का शिकार करने में ये उस्ताद हैं। जब इन्होंने रामनाथ के खिलाफ़ बीड़ा उठाया है तो काम पूरा करके ही छोड़ेंगे।"

दूसरा आदमी, "अगर चाहते हो कि मन की मुराद पूरी हो तो फिर तीर चलाने दो। निशाना ठीक ही लगेगा। चिन्ता नहीं है।"

तेरहवाँ परिच्छेद

बच्चों का सुधार

एक दिन गाँव की मालिन अपने बेटे रघुवर को साथ लेकर रामनाथ के घर गई और उनसे बोली, "लोगों से मैंने तुम्हारी बड़ी तारीफ़ सुनी है। तुममें ऐसा गुण है कि तुम्हारे पास आते ही बुरे भी भले बन जाते हैं और जिनकी ज़िन्दगी बिगड़ चुकी है वे भी आसानी से सुधर जाते हैं। मैं चाहती हूँ कि मेरे बेटे रघुवर पर भी तुम्हारी दया हो जाय और मेरी आशाओं की लता हमेशा हरी-भरी पनपती रहे।"

मालिन की इन बातों का कुछ भी जवाब न देकर रामनाथ ने रघुवर से पूछा, "क्यों रघुवर, तुमको लिखने-पढ़ने का शौक है या नहीं? मुझसे अपने दिल की बातें सचसच बता दो। छिपाना नहीं।"

रघुवर ने कहा, "कभी शौक था लेकिन अब नहीं है।"

रामनाथ ने पूछा, "पढ़ने-लिखने का शौक़ अब क्यों नहीं है? क्या किसी ने मना कर दिया है? पढ़ने-लिखने से तो आदमी अपनी ज़िन्दगी के दिन सुख से बिताता है।"

रघुवर, "जिस पढ़ाई-लिखाई में हलदी और चूने की

ज़रूरत अकसर पड़ा करती हो उस पढ़ाई-लिखाई से तो यही अच्छा है कि गँवार बनकर ही रहा जाय।"

रामनाथ, "हो तो तुम बड़े ही समझदार लड़के। इतनी अच्छी समझ जिसकी कि क्या तारीफ़ करूँ। अच्छा, यह तो बताओ कि पढ़ने-लिखने का शौक दब जाने का असली कारण क्या है?"

रघुवर, "मैं साल भर मदरसे गया। मुंशी जी बराबर पीटते रहे। तंग आकर मैंने पढ़ना बंद कर दिया।"

रामनाथ, "अक्षर तो पहिचानते ही होगे। शायद थोड़ी-बहुत गिनती भी याद हो?"

रघुवर, "यों तो बारहखड़ी भी पढ़ लेता हूँ और सौ तक गिनती भी जानता हूँ। सुना भी सकता हूँ।"

रामनाथ रघुवर के बारे में पहले से ही यह सुन चुके थे कि वह भाँग पीने का आदी हो चुका है। इस लिए उन्होंने साथ क़ायदे के उससे पूछा, "तब तो तुम बड़े ही होशियार लड़के हो। अच्छा, यह तो बताओ कि तुम्हें भाँग पीने का शौक़ कैसे पैदा हुआ? किसने तुमको भाँग पीने की सलाह दी?"

रघुवर, "अम्मा कहती थीं कि भाँग पीने वाले अधिक खाना खाते हैं और अधिक खाना खाने से आदमी ताक़तवर होता है। ताक़तवर बनने के लिए ही मैंने भाँग पीना आरंभ कर दिया है।"

रामनाथ, "अगर हम कुछ कहें तो मानोगे या नहीं? बात तुम्हारे मतलब की ही होगी।"

रघुवर, "मदरसा जाने वाली बात को छोड़ कर और जो कुछ कहोगे वह सब मान लूँगा।"

रामनाथ, "मैं यह चाहता हूँ कि तुम भाँग पीना बन्द कर दो। यह बड़ी बुरी आदत है। नशे में अधिक खाया गया खाना जल्द हजम नहीं होता और जो खाना जल्द हजम नहीं होता वह ज़हर का काम करता है। जब पेट का खाना ज़हर हो गया तब आदमी बहुत जल्द मर जाता है। भला यह तो बताओ कि तुम अधिक दिनों तक जीना चाहते हो या बहुत जल्द मरना तुम्हें पसंद है ?"

रघुवर, "मैं बहुत बड़ी जिन्दगी चाहता हूँ। कम से कम सौ बरस की तो होनी ही चाहिए।"

रामनाथ, "तो फिर नशीली चीज़ों से दूर रहना सीखो।"

रघुवर, "मैं अब कभी नशीली चीज़ों को नहीं खाऊँगा। लेकिन मैं ताक़तवर बनकर रहना चाहता हूँ। कमज़ोर हो कर रहने से तो मौत ही अच्छी है।"

रामनाथ, "घी, दूध, मठा, खाओ। ताक़तवर बन जाओगे। लेकिन साथ ही साथ कसरत करना भी ज़रूरी होगा। कसरत करने से खाये हुए सभी पदार्थ तुरंत हजम हो जाते हैं।"

रघुवर, "मैं ग़रीब आदमी हूँ। घी, दूध, मठे का इन्तज़ाम कैसे कर सकूँगा ? इसके लिए तो रुपये पैसे चाहिए। उधार माँगने जाऊँ तो कोई छदाम भी न देगा।"

रामनाथ, "घी, दूध कहाँ से मिलता है ?"

रघुवर, "गाय, भैंस और बकरी से।"

रामनाथ, "हो तो तुम बड़े समझदार। अच्छा यह तो बताओ कि गाय, भैंस और बकरी किसके यहाँ रह सकती है? तुम अपने यहाँ रख सकते हो या नहीं?"

रघुवर, "जब घी, दूध का शौक होगा तब इन जानवरों के रखने का ख़्याल होगा। जब दूधवाले जानवर घर में होंगे तब घी दूध भी मिल सकेगा। कुछ रुपये मिल जाते तो एक बकरी ले लेता।"

रामनाथ, "तुम रोज़ कितने पैसे भाँग के लिए ख़र्च करते हो?"

रघुवर, "सिर्फ़ दो आने।"

रामनाथ, "एक महीने कितना हुआ?"

रघुवर, "मैं क्या जानूँ?"

रामनाथ, "अब तो तुम भाँग पीना बन्द ही कर दोगे। कल से दो आने रोज़ हमारे पास जमा कर जाना। एक महीने के बाद तुम्हें मैं इनाम में एक ऐसी बकरी दूँगा जिसके दो बच्चे होंगे और सेर, सवा सेर दूध भी होगा। अगर इसी तरह बराबर दो आने हमारे पास जमा करते गये तो बकरी के सातवें महीने में एक बढ़िया गाय तुम्हें मिल जायगी। जिसके एक सुन्दर-सा बछड़ा होगा और सुबह शाम पाँच सेर दूध भी होगा। इतना ही नहीं। अगर फिर भी तुमने दो आने पैसे जमा करना बन्द न किया तो गाय के डेढ़ साल बाद एक ऐसी

भैंस तुम्हें दिला दूँगा जिसके साथ एक पड़िया भी होगी और दोनों वक्त का दूध लगभग दस सेर होगा। बतलाओ, तुम क्या चाहते हो ? बकरी, गाय या भैंस ?"

रामनाथ की बातों को सुनकर रघुवर बड़ा खुश हुआ। उसने कहा, "बकरी, गाय और भैंस मैं सब कुछ चाहता हूँ।"

रामनाथ, "तो कल से मेरे पास रोज़ आना। बकरी, गाय और भैंस को किस तरह पालना चाहिए; ये सब बातें मैं तुमको सिखा दूँगा क्योंकि बिना इनके जाने तुम उन्हें पाल न सकोगे।"

रघुवर, "मैं पाल लूँगा। जानवर पालने में लगता ही क्या है ?"

रामनाथ, "अच्छा, यह तो बताओ कि अक्ल बड़ी होती है या भैंस ?"

रघुवर, "यह भी क्या कोई सवाल है ?"

रामनाथ, "सवाल नहीं है तो फिर क्या है ?"

रघुवर, "यह तो एक मामूली सी बात है।"

रामनाथ, "फिर भी सही जवाब न दे सकोगे।"

रघुवर, "सभी जानते हैं कि भैंस बड़ी होती है।"

रामनाथ, "चूक गये। बिना अक़्ल के भैंस घर पर रह भी नहीं सकती। चाहे जिस भैंस से पूछो, वह यही कहेगी कि मैं वहीं रहती हूँ जहाँ अक़्ल होती है।"

रघुवर, "भला भैंस बोल कैसे सकती है ? और जो उसकी बोली है उसको समझ भी कौन सकता है ?"

रामनाथ, "भैंस की बोली वही समझता है जो अक्ल को बड़ा मानता है। अक्लवाला सब समझ सकता है।"

रघुवर, "गाय किसके यहाँ रहना चाहती है ?"

रामनाथ, "गाय उसके यहाँ रहना अधिक पसंद करती है जो कि अक्ल की बहन बुद्धि को हमेशा साथ रखता है।"

रघुवर, "और बकरी क्या चाहती है ?"

रामनाथ, "बकरी कुछ नहीं चाहती। वह सिर्फ़ इतना ही चाहती है कि उसका मालिक अपढ़ न हो। पढ़ना-लिखना जानता हो।"

रामनाथ की बातों को सुनकर रघुवर उदास हो गया। उसके इस तरह उदास होने का कारण रामनाथ समझ गये। इसलिए साहस दिलाते हुए उन्होंने रघुवर से कहा, "उदास क्यों हो गये ?"

रघुवर, "अक्ल न होने की वजह से भैंस भी गई। विना बुद्धि के गाय की आशा भी जाती रही। अपढ़ तो हूँ ही, इसलिए बकरी से भी हाथ धोना पड़ा और बिना गाय, भैंस और बकरी के दूध मिलना भी कठिन है।"

रामनाथ, "देखो, एक महीने में मैं तुम्हें पढ़ना-लिखना सिखा दूँगा इसलिए बकरी के लिए तुम निराश न हो। इसके बाद सात महीने में मैं एक ऐसा मंत्र बता दूँगा कि

बुद्धि तुम्हारा साथ न छोड़ेगी। फिर गाय भी बाँध लेना। इसके बाद डेढ़ साल में अक़्ल का ख़ज़ाना तुम्हारे हाथ लग जायगा। भैंस आप ही आप तुम्हारा घर पूछती हुई चली आयगी। बस, भाँग अब कभी न पीना और बराबर दो आने पैसे मेरे पास जमा करते जाना।"

रघुवर की ख़ुशी का ठिकाना न रहा। वह रामनाथ की तरफ़ टकटकी लगाये ताकता ही रह गया। रामनाथ ने उससे फिर कहा, "अच्छा, यह तो बताओ कि "क" से क्या होता है?"

रघुवर, "कनैर, करौंदा, कचौड़ी, ककड़ी, कड़ा, कहार, कटहल।"

रामनाथ, "बहुत ठीक। अच्छा "का" से क्या होता है?"

रघुवर, "कान, काना, काका, काकी, काला, काली, काछी।"

रामनाथ, "तुम तो सब जानते हो। अच्छा "कि" से क्या होता है?"

रघुवर, "किसान, किताब, किला, किसमिस।"

रामनाथ, " "की" से क्या होता है? इसे बताओ तो जानें कि तुम बड़े समझदार हो और बकरी का दूध बहुत जल्द पी सकोगे।"

रघुवर, "कीमत, कील, कीड़ा, कीचड़।"

रामनाथ, "बकरी के दूध का मामला "कु" में अटक गया। अब बहादुरी इसी में है कि इसको भी ठीक-ठीक बता दो।"

रघुवर, "कुश्ती, कुल्हाड़ी, कुम्हार, कुआँ, कुत्ता।"

रामनाथ, "कू" यह रो रहा है। इसके लिए साथी ढूँढ़ दो।"

रघुवर, "कूबर, कूटना, कूदना।"

रामनाथ, "मालूम हो गया कि तुम भाँग छोड़ सकोगे और एक महीने में बकरी के साथ खेलना भी शुरू कर दोगे।"

रघुवर, "क्या बकरी के साथ खेलना होगा ? ये सब गाँव के लड़के कहाँ जाँयगे ? क्या इनमें से कोई भी न मिलेगा ?"

रामनाथ, "गाँव के लड़के जो अपढ़ होंगे वे तुम्हारी बकरी को भगा देंगे और फिर तुम यों ही रह जाओगे।"

रघुवर, "जो लिखना-पढ़ना जानते हों अगर उनके साथ खेलूँ, तो भी क्या बकरी हमारा घर छोड़ कर चली जायगी ?"

रामनाथ, "तब तो दो चार बकरियाँ और अपने साथ लेती आयगी। घर में दूध ही दूध हो जायगा।"

चौदहवाँ परिच्छेद

पुलिस की परेशानी

थाने के मुन्शी मुनौवर खाँ रात में बैठे हुए सरकारी काम कर रहे थे। बेशुमार परवानें उनके चिराग़ पर ढेर हो चुके थे और लाखों ढेर होने के लिए उड़ते चले आ रहे थे। ठीक ऐसे ही समय में उनके एक मित्र आ पहुँचे। उन्होंने मुन्शी जी से कहा, "आप बड़े बेदर्द आदमी हैं।"

मुंशी, "थाने का मुन्शी अगर दर्द के चंगुल में फँसा, तो फिर थाने का काम चल चुका।"

मित्र, "इतने परवाने एक मामूली चिराग़ पर ढेर हो गये, लेकिन आप पसीजते ही नहीं।"

मुंशी, "पसीजते-पसीजते मेरा वज़न सात पौंड घट गया लेकिन आपको पता ही नहीं।"

मित्र, "तराज़ू लिए घूमता होता तो तौलकर पता लगा लेता। ख़ैर अब पता चल गया।"

मुन्शी, "दिनरात काम करते-करते थक जाता हूँ फिर भी काम पूरा नहीं होता।"

मित्र, "किसी पढ़े-लिखे समझदार सिपाही से मदद ले लिया करें। काम हलका हो जायगा।"

मुन्शी, "दिन भर के थके थकाये सिपाही तीसो दिन मुझे मदद देते रहेंगे ऐसी उम्मीद नहीं है।"

मित्र, "अगर मुझसे काम चल सके तो मेरी मदद आप ले सकते हैं। मैं तैयार हूँ।"

मुन्शी मुनौवर खाँ कुछ कहने ही जा रहे थे कि इतने में एक छोटा-सा परवाना उनकी आँख के भीतर चला गया। वे परेशान होने लगे। उनके मित्र ने किसी न किसी तरह उस परवाने को आँख से निकालते हुए कहा, "छोटा हुआ तो क्या हुआ ? आख़िर आँख को तकलीफ़ दे ही गया।"

मुन्शी, "मैं समझ रहा हूँ कि आपकी शायरी आपको गुदगुदा रही है। अच्छा तो यही होगा कि आप अपनी गुदगुदी को अपने ही पास रखें। मेरे पास तक पहुँचाने की बेकार कोशिश न करें।"

मित्र, "गुदगुदी को पहुँचाना नहीं पड़ता। वह तो आप ही आप पहुँच जाती है। दिल मचल उठता है।"

मुन्शी, "थाने के मुन्शी इतने बद-नसीब होते हैं कि उन्हें यह भी नहीं मालूम रहता कि उनके दिल है या नहीं। खाते हैं, पीते हैं, सोते हैं, जागते हैं लेकिन सपने कभी नहीं देखते। इसीसे समझा जा सकता है कि उनके दिल नहीं है। दिल होता तो सपने भी देखते और दिल का मचलना भी जानते।"

मित्र, "अच्छा ही हुआ कि थाने के मुन्शी दिल नहीं रखते। दिल भी एक बड़ी बला है। जिसके दिल होता है उसे हमेशा दोस्तों के साथ हमदर्दी का बर्ताव करना पड़ता है। पास-पड़ोसी के मामूली दुख दर्द पर उसकी मदद करनी पड़ती है। कँटीली झाड़ी में खिले हुए गुलाब की तरफ़ हाथ बढ़ाने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इतना ही नहीं, पसीजनेवाला दिल तो ऐश व आराम के रास्ते को अपने पसीने से गन्दा कर देता है। अब मैंने भी मालूम कर लिया कि थाने का मुन्शी माया-मोह से हमेशा दूर रहता है। उसका रास्ता एक संन्यासी का होता है। उसका दिल संगमरमर की तरह सुन्दर, बिन्ध्याचल के पत्थर की तरह कठोर, और शालग्राम की मूरत की तरह हमेशा गोल-मोल बना रहता है। कोई हर्ज नहीं है। मेरे लिए तो आप हमेशा से ही मेहरबान हैं।"

मुन्शी, "मैंने पहले ही कहा था कि शायरी गुदगुदा रही है। बात सच्ची निकली, न ?"

मित्र, "जब शायरी की गुदगुदी को आपने ताड़ लिया तब आज शायरी का भी मज़ा लूटना होगा। आपको चाहिए कि आप बिना हिचक के मैदान में उतर पड़ें। तबियत फड़क उठेगी।"

मुन्शी, "शायरी का मज़ा लूटने के लिए थाना मुनासिब जगह नहीं है। पहले मुनासिब जगह का चुनाव कर लीजिए फिर मज़ा लूटने के लिए मैं भी कमर कस लूँगा।"

मुंशी मुनौवर खाँ की बातों को सुनकर उनके मित्र चुप हो गये। इतने में जिलेदार का भेजा हुआ चौकीदार पंचम पासी आ पहुँचा। उसके आते ही मुनौवर खाँ ने सवाल किया, "इतनी रात में ?"

पंचम पासी, "जिलेदार ने कहा कि काम ज़रूरी है। इसीलिए आना पड़ा।"

मुंशी, "क्या कहीं क़त्ल हो गया है या रात में डाका पड़ने वाला है ? आख़िर मामला क्या है ?"

पंचमपासी, "मुझे तो उन्होंने यह काग़ज़ थमा दिया है और कहा है कि मुंशी जी से मेरा सलाम कहना। उन्होंने आज तक मुझ पर जितनी मेहरबानियाँ की हैं उन सब का मैं अहसान मानता हूँ।"

मुंशी, "मैं जिलेदार के सलाम को साथ इज्ज़त के क़बूल करता हूँ लेकिन मैं यह मानने के लिए हर्गिज़ तैयार नहीं हूँ कि मैंने उन पर मेहरबानियाँ की हैं। अगर कुछ भी किया है तो पब्लिक की भलाई के लिए अपने फ़र्ज़ को निहायत नेकनीयती के साथ अदा किया है।"

सिपाही मोहनसिंह बड़ा ही ख़ुश दिल आदमी था। मुंशी मुनौवर खाँ की बातों को सुनकर वह उनके पास आकर मजाक करता हुआ बोला, "भला पब्लिक में पुलिस की मेहरबानियों को क़बूल करने वाले तो पैदा होने लगे। कितनी बड़ी खुशी की बात है। वाक़ई जिलेदार पुलिस का बड़ा अहसानमंद है।"

पंचम पासी, "उनको तो हमारे मुंशी जी का बड़ा भरोसा है। दिन रात इनकी तारीफ़ किया करते हैं। जब किसी से उनकी दुश्मनी होती है तब उसे वे पुलिस की ही धमकी देने लगते हैं। उनका कहना है कि अगर मुंशी जी उन पर मेहरबानी न करते तो उनकी जिलेदारी भी न चलती।"

मोहनसिंह, "ठीक तो कहते हैं। उनकी रिपोर्ट पर पुलिस-वालों ने जितनी भी कार्रवाइयाँ की हैं सभी में तो उनका हाथ रहा है। ऐसा वफ़ादार आदमी पुलिस को और कहाँ मिल सकता है?"

पंचम पासी, "गाँव वाले तो यही चाहते हैं कि जहाँ तक हो सके गाँव का मामला गाँव में ही दबा दिया जाय। बेकार किसी को तंग कराने से फायदा क्या है? लेकिन जिलेदार तो रिपोर्ट थाने में कर ही देते हैं। सब का भंडा फोड़ हो जाता है और पुलिस की नेकनामी होती है।"

मोहनसिंह, "ताज्जुब तो यही है कि फिर भी पुलिसवाले उनका अहसान नहीं मानते।"

मुंशी मुनौवर खाँ ने कहा, "किसी की भी रिपोर्ट आये। पुलिस का काम है जाँच करना। जाँच करने पर मुनासिब कार्रवाई कर दी गई। इसके लिए पुलिस किसी का अहसान क्यों मानने लगी?"

पंचम पासी, "आप उनकी रिपोर्ट पर ग़ौर करते हैं यही तो उनके लिए बड़ी खुशी की बात है।"

मोहनसिंह, "देहात के लोग जिलेदार से ज़रूर दबते होंगे? और क्यों न दबें? हम पुलिस वाले जिलेदार से सलाह करके बदमाशों का चालान करते ही हैं? जब कभी कोई जाँच खुफ़िया तौर पर की गई, उसमें भी ज़िलेदार ने पूरा साथ दिया। यह बात मशहूर हो चुकी है कि पुलिसवाले जिलेदार की बात मानते हैं। गाँव के लोग पुलिस के नाम से ही घबड़ाते हैं। ऐसी हालत में पुलिस के नाम पर जिलेदार और उनके साथी अपना रंग गाँव के लोगों पर न जमायँगे तब फिर भला और कब जमायँगे? मैंने तो सुना है कि गाँवों में उनकी बड़ी धाक जम चुकी है, इसीलिए तो मुंशी जी की मेहरबानियों के लिए अहसान मानने लगे हैं। मौज करें आप लोग और बदनामी हो पुलिस की!"

मुंशी मुनौवर खाँ को जिलेदार की कुल बातें एक-एक करके याद आने लगीं। पुलिस की दोस्ती से वे और उनके साथी किस तरह नाजायज फ़ायदा गाँवों में उठा रहे हैं यह बात भी मुंशी मुनौवर खाँ के दिमाग़ में चक्कर काटने लगी। वे चुपचाप इसी बात पर सोचते रहे कि किस तरह कोशिश की जाय जिससे पुलिस के नाम पर गाँवों के लोगों पर अत्याचार करनेवाले ठीक रास्ते पर आ जाँय। पुलिस तो पब्लिक की भलाई के लिए है, न कि पब्लिक को सताने के लिए। कुछ भी हो, आगे चलकर देखना है कि ये लोग और क्या क्या गुल खिलाते हैं?"

मोहनसिंह ने मुन्शी मुनौवर खाँ से कहा, "आप तो एकदम ख़ामोश हो गये?"

मुन्शी मुनौवर खाँ ने चौकीदार से कहा, "अच्छा, अब तुम जाओ। रात में देर करना ठीक नहीं है।"

पंचम पासी, "जिलेदार से जाकर क्या कहूँगा ? वे तो मेरी राह ताक रहे होंगे।"

मोहनसिंह, "यही कह देना कि जैसा वे कहेंगे वैसा हम हम सब करने को तैयार रहेंगे।"

मुन्शी मुनौवर खाँ ने कहा, "कह देना कि मुन्शी जी तो पब्लिक की भलाई करनेवाले सरकारी मुलाज़िम हैं ही। पब्लिक की भलाई के लिए जिलेदार की सलाह से काम करना हम सब अपना फ़र्ज़ समझते हैं। अगर उनकी ही बात न मानेंगे तो फिर और किसकी बात मानेंगे ?"

मुंशी मुनौवर खाँ और मोहनसिंह को सलाम करके पंचम-पासी अपने गाँव के लिए चल पड़ा। उसके चले जाने पर मुन्शी मुनौवर खाँ ने मोहनसिंह से कहा, "पुलिस की नौकरी में सिवा मुसीबत के और कुछ नहीं है। सख़्ती से पेश आते हैं तो बदनामी होती है। नर्मी का बर्ताव करते हैं तो जान की आफ़त है। गाँवों के भले आदमी पुलिस के नाम से कोसों दूर भागने की कोशिश करते हैं। जो ख़ुद बुरे हैं वे पुलिस के नाम पर मज़े उड़ाते हैं। मुझे इस बात का तजुर्बा हो चुका है कि जहाँ पर पुलिस को मदद भले आदमियों से मिलती है वहाँ पर कभी पुलिस की न तो बदनामी होती है और न बद-अमनी फैलने का डर ही रहता है।"

मोहनसिंह, "आप सही कहते हैं। पुलिस की बदनामी का असली सबब है गाँवों के भले आदमियों का उससे दूर भागना। यों तो पुलिस की किसी से कोई दुश्मनी नहीं है। उसकी निगाह में सब की इज़्ज़त बराबर है। लेकिन जब किसी के खिलाफ़ कोई रिपोर्ट आती है तब उस पर उसे जाँच करनी ही पड़ती है। अगर भले आदमी खामोशी अख़्त्यार किये बैठे रहे तो फिर बुरे आदमियों से ही पूछ कर काम करना ज़रूरी हो जाता है। फिर बदनाम करने से होता ही क्या है? अवसर चूकी ग्वालिनी गावै सारी रात।"

मुंशी मुनौवर खाँ ने कहा, "गाँवों का सुधार अगर सही तरीके से हो जाता तो पुलिस की भी बहुत सी दिक्क़तें आप ही आप रफ़ा हो जातीं। पब्लिक की सच्ची मदद हमेशा मिलती रहती। बद-अमनी का नाम तक भी न रह जाता। अमन के साथ ज़िन्दगी बिताते हुए लोग दिनरात चैन की बंशी बजाते। रास्ते के काँटे फूलों की तरह मुलायम हो जाते।"

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

साक्षरता का परिणाम

छिपाने की तो बड़ी कोशिश की गई लेकिन बात छिप न सकी। किसी न किसी तरह मुखिया श्यामलाल को इसका पता लग ही गया। बेचारे बड़े दुःखी हुए। क्या करते? आख़िर पटवारी शंकरलाल के पास जाकर कुल क़िस्सा कह सुनाया। बातों के सिलसिले में शंकरलाल ने भी अपनी मुसीबत की कहानी कह सुनाई।

श्यामलाल ने शंकरलाल से कहा—"तब तो मामला बहुत ही बेढब है।"

अपने मस्तक को खुजलाते हुए शंकरलाल ने जवाब दिया, "इसमें शक नहीं।"

श्यामलाल—"रामनाथ और रघुराज पर पुलिस का शक हो चुका है।"

शंकरलाल—"शक को दूर करने का तरीक़ा पुलिस ख़ुद सोच लेगी।"

श्यामलाल—"ऊँट किस करवट बैठता है यह सोचने की बात है।"

शंकरलाल—"जो नेक हैं उनका ऊँट हमेशा ठीक ही करवट लेता है।"

श्यामलाल—"जिलेदार का जो दिमाग़ सनका हुआ है उसकी दवा क्या है ?"

शंकरलाल—"अगर अकेले जिलेदार का ही मामला होता तो कोई ऐसी बात न थी, लेकिन उसके साथ के बैठने उठने वाले भी कम खतरनाक नहीं हैं।"

श्यामलाल—"मान लो कि रामनाथ और रघुराज मुसीबत में फँस ही गये किन्तु इससे जिलेदार का और उसके साथियों को क्या मिल जायगा ?"

शंकरलाल—"कुछ तो फ़ायदा होगा ही, नहीं तो ये कोशिशें क्यों होती ?"

वे दोनों इसी तरह आपस में बातें कर ही रहे थे कि इतने में रघुराज वहाँ आ पहुँचा। शंकरलाल ने रघुराज से कहा, "सुना जाता है कि जिलेदार ने तुम पर और रामनाथ पर थाने में रिपोर्ट कराई है।"

रघुराज ने बिना किसी तरह की घबड़ाहट के कहा "इससे होता ही क्या है ? आख़िर रिपोर्ट की जाँच भी तो होगीं ? या यों ही मुझे फाँसी के तख़्ते पर मौत का झूला झुलाया जायगा ?"

श्यामलाल ने समझाते हुए कहा—"थाने में जिसके खिलाफ़ रिपोर्ट होती है उस पर पुलिस की हमेशा कड़ी निगाह बनी रहती है।"

रघुराज—"तब तक जब तक कि जाँच नहीं की जाती। पुलिस से डरना क्या ? यह तो मामूली सी बात है। जब हम गाँव में रहते हैं तब यह भी ज़रूरी है कि थाने तक किसी न किसी तरह हमारी बातें भी पहुँचा दी जाँय। हम तो पुलिस वालों को अपना भाई ही समझते हैं।"

शंकरलाल ने बात काटते हुए कहा, "तुम्हारे भाई समझने से होता ही क्या है ? पुलिस अपना काम करती है। रिश्ता नहीं जोड़ती।"

रघुराज—"जिस तरह हम अपने भाई से नहीं डरते उसी तरह पुलिस से भी नहीं डरना चाहते। सच कहा जाय तो हमें हर एक हालत में पुलिस के साथ सहयोग देना चाहिए। अगर हमने पुलिस का साथ न दिया तो बेचारी पुलिस चोर बदमाशों का पता भला किस तरह लगा सकेगी ? अगर हम चाहते हैं कि पुलिस से जनता का हित हो तो हमें यह भी चाहिए कि जनता का अहित करने वालों का सही सही पता पुलिस वालों को बता दें जिससे कि अमन का रास्ता साफ़ रहे।"

श्यामलाल ने कहा—"गाँवों में रह कर पुलिस का साथ देना और बदमाशों के मार्फ़त अपने लिए मौत बुलाना दोनों ही बराबर है। जिस दिन यह पता लग गया कि तुम पुलिस का साथ देते हो उसी दिन से तुम्हारे खेत खलिहान, घर-द्वार, बाल-बच्चे और कुल की मान मर्यादा मिटाने के लिए चोर बदमाशों का दल कमर कस लेगा।"

रघुराज—"वे क्या करें जो जंगल में जाकर शेर का शिकार करते हैं और कभी कभी उसे ज़िन्दा ही पकड़ लाते हैं? आख़िर वे भी इंसान हैं।"

शंकरलाल—"यही तो तुम्हारी आदत में एक ऐब है। अगर तुमसे कोई तुम्हारे हित की बात करता है तो तुम शेख़ी बघारने लगते हो। ज़रा धीरज के साथ मन लगा कर सुन लो और होशियारी से अपना काम करो।"

रघुराज ने कहा, "मैं सच कहता हूँ कि पुलिस वालों से मुझे कोई डर नहीं है। यों तो जाँच पड़ताल होती ही रहती है।"

श्यामलाल ने रघुराज को कुल हाल बतलाते हुए कहा, "मैं यह जानता हूँ कि तुम दोनों बेगुनाह हो। फिर भी उस शैतान ने शरारत कर ही दी। इतना ही नहीं, मुझे भी बदनाम करने लगा है।"

श्यामलाल की बातों को सुनकर रघुराज को हँसी आ गई। उसने उसको समझाने के लिए इस कविता को गाना आरंभ कर दिया।

"हवा जब है यहाँ सुधरी, नहीं है काम डरने का;
ख़ुशी कुछ भी न जीने की, नहीं है रंज मरने का।
अगर है राह नेकी की, नहीं बदनाम हो सकते;
भलाई गाँव की करते, मुसीबत में न रो सकते।
मुसाफ़िर तीन दिन के हम, हमारे काम हैं सच्चे;
सभी से प्रेम हम करते, नहीं हैं काम में कच्चे।

हमारा काम बस इतना, मोहब्बत और सच्चाई;
जहाँ तक बन पड़े हमसे, मिटादें दुष्ट अन्यायी।
पुलिस भी अक्ल रखती है, मगर लाचार है इससे;
भले जन दूर हैं भगते, करे वह जाँच फिर किससे।
मुनासिब है यही भाई, निडर होकर सदा रहना;
पुलिस से काम पड़ जाये, हमेशा बात सच कहना।
चलो सब साथ धीरज के, समय है कष्ट हरने का;
सफलता पास है "मंजुल", नहीं है काम डरने का।"

इसके बाद रघुराज अपने रास्ते पर चला गया। उसके चले जाने पर श्यामलाल ने शंकरलाल से कहा—"रामनाथ के साथ से इसका इतना सुधार हो गया जिसकी कि आशा भी नहीं की जाती थी। निरक्षर रघुराज साक्षर बन कर कालिदास का टक्कर ले रहा है। लोगों ने ठीक ही कहा है, कि अपढ़ आदमी पूरा बैल होता है और पढ़ा-लिखा आदमी सत्संग के कारण देश, समाज और गाँव घर के लिए आदमी बन जाता है। उदाहरण के लिए रघुराज काफी है।"

"रामनाथ का काम हमेशा चौकस रहता है। जैसा वह कहता है वैसा करता भी है। जंगली रघुराज को उसने सच्चा इंसान बना दिया। इतना ही नहीं, रामनाथ में साहस भी है और ताक़त भी। ये सब गुण रहते हुए भी वह इतना नम्र स्वभाव का है कि दुश्मन भी दोस्त बन जाता है।"

"परन्तु जिलेदार पर इसका कोई असर नहीं पड़ा!"

"जिलेदार की बात छोड़ो। वह तो एकदम जड़ है। बात उसकी करो जिसमें कि इंसानियत हो, इंसान का सा दिल हो।"

शंकरलाल के इस जवाब को सुनकर श्यामलाल ने कहा, "अच्छा, यह तो बताओ कि तुम क्या कर रहे हो? जिलेदार से पच्चीस रुपये जो तुम्हें मिले हैं उनको किस तरह काम में लाओगे? हजम करना ठीक न होगा।"

शंकरलाल ने सोचते हुए जवाब दिया, "यह तो मैं समझता हूँ कि हजम करना ठीक न होगा लेकिन करना क्या चाहिए यह भी तो मेरी समझ में नहीं आ रहा है। शायद कल तक निश्चय कर सकूँ।"

श्यामलाल—"गाँव के जिमीदार के पास क्यों न जमा कर दिया जाय और सब बातें सही-सही कह दी जावें। उनको भी मालूम हो जाना चाहिए कि उनका हित-चिन्तक जिलेदार गाँवों में किस तरह नाजायज कार्रवाइयाँ करता रहता है।"

"मैं अपना काम बनाने का तरीक़ा खुद सोच लूँगा।"

श्यामलाल चुप हो गये और अपने काम से उठकर चले गये। उनके जाने के बाद शंकरलाल की स्त्री ने खाना खाने के लिए शंकरलाल को घर के अंदर से पुकारा। शंकरलाल खाना खाने के लिए चला गया। अपने स्वामी के चेहरे पर चिन्ता की निशानी पाकर चतुर स्त्री ने पूछा, "कौन ऐसी बात आ पड़ी है जिससे कि चेहरा उतरा हुआ-सा मालूम होता है?"

"दुनिया में ईमानदारी की गुंजायश नहीं। जिधर देखो

उधर ही दग़ाबाज़ी और फ़रेब का रंग दिखाई पड़ता है। गाँवों की पटवारगीरी भी एक बड़ी बला है। कहाँ तक सम्हल कर चला जाय?"

"अभी से घबड़ाने लगे? चाचा जी तो तीस साल तक यही काम करते रहे लेकिन हमेशा ही ख़ुश रहे। कभी नहीं घबड़ाये।"

"चाचा जी की बात चाचा जी के साथ चली गई। अब तो हवा ही बदल चली है। तरक्क़ी के लिए क़दम बढ़ाता हूँ, तो मुसीबत के दलदल में फँसता हूँ। और मुसीबत के दलदल से अगर अपने को बचाता हूँ, तो तरक्क़ी का रास्ता छुटता है; और दर-दर ठोकरें खाने का दरवाज़ा खुल जाता है।"

"अच्छा तो यही होगा कि अपना तबादला करा लो।"

"जहाँ कहीं भी जाऊँगा वहीं यही हवा मिलेगी।"

"तो फिर ऐसा काम करो जिससे कि नेकनीयती में बट्टा न लगे। फिर जो कुछ होने को है वह होगा। सोच करना बेकार है।"

"ख़ैर, चलो खाना परोसो। फिर देखा जायगा।"

शंकरलाल की स्त्री ने खाना परोस दिया। शंकरलाल खाना खाने बैठ गया। खाना खा चुकने के बाद वह फिर अपने दरवाज़े के चौतरे पर आकर बैठ गया। उधर से गाँव की मालिन चली आ रही थी। उसे अपने पास बुलाकर शंकरलाल ने पूछा, "कहाँ से आ रही हो?"

मालिन, "रामनाथ के घर से चली आ रही हूँ।"

"क्या रघुवर ने रामनाथ के यहाँ नौकरी कर ली है ?"

"नौकरी भला कहाँ रखी है। यों ही दो चार दिन से रामनाथ के यहाँ जाने लगा है ? कुछ पढ़ना-लिखना भी सीखने लगा है।"

"अब तो रामनाथ की जाँच होने वाली है। श्यामलाल मुखिया कल एक गाँव गये थे। वहाँ पर उन्हें यह मालूम हो चुका है। सुना गया है कि थानेदार की निगाह रामनाथ के हक़ में अच्छी नहीं है।"

"रामनाथ का मामला मामूली नहीं है। थानेदार भला उसका क्या कर सकेंगे ? जाँच करने आयेंगे और खुशी खुशी थाने को लौट जायँगे। यह तो काम चोर बदमाशों का है कि पुलिस के नाम से थर-थर काँपने लगें। जिस दिन रामनाथ पर पुलिस बेजा कार्रवाई करेगी उस दिन धरती उलट जायगी।"

इतना कह कर मालिन अपने घर की तरफ़ चली गई।

सोलहवाँ परिच्छेद

काजल होत न श्वेत

श्यामलाल से न रहा गया। आखिर वे अपने गाँव के जिमीदार के पास जा पहुँचे। जिमीदार का मकान उनके गाँव से ढाई तीन कोस की दूरी पर था। जिमीदार के यहाँ पहुँचते ही उनकी मुलाक़ात जिमीदार के बेटे से हो गई। जिमीदार के बेटे ने श्यामलाल के लिए शरबत मँगवाया। शरबत पी चुकने पर उसने गाँव का कुल हाल पूछा। श्यामलाल ने सब हाल बतला दिया और जिलेदार के साथी किस तरह रामनाथ के लिए षडयंत्र रच रहे हैं यह भी कह सुनाया। सब हाल सुन चुकने पर जिमीदार के बेटे ने श्यामलाल से कहा, "पिता जी के सीधा होने के कारण जिलेदार का स्वभाव बिगड़ रहा है।"

जिमीदार का बेटा अभी हाल में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से वकालत पास करके घर गया हुआ था। वह इतना समझदार था कि बात को समझने में उसे देरी न लगती थी। जिमीदार के सहारे जिलेदारों का जो बेजा रोब गाँव वालों को तंग कर रहा था वह सब जान लेने पर भी पिता से कभी इसकी चर्चा नहीं करता था। जिमीदार के बेटे की बातों को सुनकर श्यामलाल ने

कहा, "भले आदमी बुरे आदमी का सामना करके अपना अपमान कराने को कभी तैयार नहीं हो सकते। इसीलिए कोई कुछ भी ज़िलेदार के खिलाफ़ कहने को तैयार नहीं हो सकता। मैं ही जो आया हूँ वह भी डरता हुआ आया हूँ। जिलेदार के इशारे पर उनके साथी हमारे हाथ पैर तोड़ने के लिए काफ़ी हैं। अगर आप चाहें तो शंकरलाल पटवारी से भी सब बातें मालूम कर सकते हैं। ज़्यादा क्या कहूँ ?"

इतने में जिमींदार भी आ पहुँचे। श्यामलाल से उन्होंने आने का कारण पूछा। श्यामलाल ने कहा, "मालिक की बदौलत जो इज्ज़त बचती चली आ रही है वह अब जिलेदार के इशारे से मिटने वाली है। मुसीबत का मारा यहाँ तक दौड़ा आया हूँ। जितने भी ज़िलेदार हमारे गाँव गये उनमें से ये बड़े विचित्र ढङ्ग के निकले। बातें छप्पन टका की बघारेंगे और काम दमड़ी भर का करके नहीं दिखा सकते।"

श्यामलाल की बातों को सुनकर जिमींदार ने कहा, "हमने इस वार जो जिलेदार भेजा है वह बड़ा ही खरा आदमी है। जिस लगान को दूसरे जिलेदार दो महीने में वसूल करते थे उसी को वह पन्द्रह दिन में वसूल कर लेता है। हमारे काम में सोलहो आने होशियार है।"

पिता की बातों को सुनकर बेटे से न रहा गया। उसने जवाब देते हुए कहा, "किसी गुंडे बदमाश को लट्ठबाजों के साथ भेज दिया जाय तो वह दो ही दिन में लगान वसूल कर लायगा।

वह काम की ख़ूबी नहीं है। यह तो एक तरह गले पर छूरी फेरना है। रियाया चाहे कितनी भी गरीब क्यों न हो, अपनी इज़्ज़त बचाने को घर का तवा बेंच कर लगान अदा कर देगी और गाँव छोड़ कर चली जायगी। मैं आपके हमदर्द जिलेदार की बहुत सी शिकायतें सुन चुका हूँ। भले आदमियों को घंटों लगान के लिए बैठा रखना, किसी ने अगर कुछ कहा तो उसे जूते मारने तक की धमकी देना, हमेशा गाँव के बदमाशों के साथ भांग और शराब के नशे में डूबे रहना, अगर कोई शरीफ़ आदमी किसी काम से बातें करने आ गया तो उससे बे-अदबी से पेश आना और हमारे खिलाफ़ छिप छिप कर कोशिश करते रहना; यही तो आपके खैरख्वाह ज़िलेदार की काली करतूते हैं और आप प्रसन्न हैं।

बेटे की बात सुनकर पिता ने कहा, "ज़िमीदारी भी एक राज-नीति है। इसको तुम अभी नहीं समझ सकते। वकालत पास कर लेना और ज़िमीदारी का काम चलाना दोनों बराबर नहीं है। इसीलिए कहता हूँ कि पहिले कुछ दिन सब काम को सीख लो फिर ज़िमीदारी की बातों में दखल देना। इतनी जल्दी करना ठीक नहीं है।"

श्यामलाल ने ज़िमीदार से कहा, "आप जो कुछ कहते हैं वह ग़लत नहीं है। लेकिन भले आदमियों की इज़्ज़त का भी कुछ ख्याल होना चाहिए। बिना इज्जत के ज़िन्दगी से मौत भली।"

ज़िमीदार—"जिन्हें अपनी भलमनसाहत का ख्याल होगा वे

कभी ज़िलेदार से झगड़ा मोल नहीं लेंगे। जो झगड़ा मोल लेंगे उन्हें अपने कर्म का फल भुगतना ही पड़ेगा। मैं क्या कर सकता हूँ ?"

श्यामलाल—"कुछ बातें ऐसी आ ही जाती हैं जिनके लिए जिलेदार को समझाना ही पड़ता है। बात समझाने के माने ये नहीं है कि झगड़ा मोल लिया जा रहा है। कोई भी भला आदमी सोते हुए सिंह को जगा कर अपने को मुसीबत में डालने का बेकार साहस क्यों करेगा ?"

ज़िमीदार—"मैं ज़िलेदार के मामले में पड़ना नहीं चाहता। मेरा काम वह चौकस करता है। ईमानदार नौकर को तंग करना हमारा काम नहीं है। मानता हूँ कि उसे नशेबाज़ी की आदत पड़ गई है, लेकिन इससे मेरा कुछ नुकसान नहीं होता। वह जो कुछ करता है अच्छा ही करता है।"

श्यामलाल चुपचाप अपने गाँव वापस लौट आया। उसके चले जाने पर ज़िमीदार ने अपने बेटे से कहा, "गाँवों में भले बुरे सभी तरह के आदमी रहते हैं। जो भले होंगे, वे तो चुपचाप लगान दे ही देंगे और जो बुरे होंगे उन्हें यह ज़िलेदार शाम, दाम, दंड, भेद सभी तरह से अपने वश में किये रहेगा। हमारे दुश्मन हमेशा ही हमसे दबे रहेंगे। यह ज़िलेदार हमारे लिए बड़े काम का है। ज़िमीदारी का काम बड़े झंझट का होता है।"

"फिर भी लोगों की शिकायतों पर ध्यान देना ही होगा। नहीं तो ज़िमीदारी दिन दिन खतरे में ही पड़ती जायगी। यदि

गाँव के भले आदमी एक साथ हो गये तो फिर ज़िमीदारी से भी हाथ धोना पड़ेगा। क्योंकि एक भला आदमी एक सौ बदमाशों के बराबर समझदारी का दावा कर सकता है। जो काम बदमाश लाठियों से करते हैं वही काम एक भला आदमी मामूली कलम से कर दिखाता है; क्योंकि भले आदमी अकसर पढ़े लिखे हुआ करते हैं। लाठी से कलम में ज्यादा ताकत है।"

"हमारे यहाँ दोनों ही ताकते हैं। लाठी की ताक़त ज़िलेदार के इशारे पर काम करेगी और कलम की ताक़त पटवारी के घर से निकल कर अपनी करामात दिखायेगी। लाठी का जवाब लाठी से और कलम का जवाब कलम से दिया जा सकेगा। अगर मामला अधिक उलझ गया तो फिर तुम्हारी वकालत अपना जादू कर दिखायेगी। डरपोक जिमीदार दो कौड़ी का होता है। इसलिए जिमीदार के बेटे को हमेशा निडर रहना चाहिए।"

"ये सब बातें पुराने ज़माने की हैं। जबकि गाँव वालों के सुधार का कुछ भी प्रयत्न नहीं होता था। अब तो सब तरफ़ गाँव-सुधार की आवाज़ सुनाई पड़ती है। सरकारी और ग़ैर-सरकारी सभी तरह के लोग गाँव-सुधार के पक्षपाती हैं। आप तो अपने ज़माने का रँग देख ही चुके हैं। मुझे अब अपने ज़माने का रंग देखकर अपना काम करना होगा। यह बात चारों तरफ़ फैल चुकी है कि मैं वकील हो चुका हूँ। तहसीलदार और थानेदार ये दो ऐसे सरकारी अफ़सर हैं जिनके इशारे पर गाँवों का सुधार आसानी से हो सकता है। और जिमीदार

तो एक ऐसी नाज़ुक जगह पर है जिसकी हालत इस समय डाँवा-डोल-सी हो रही है। अगर सम्हल कर न चले तो आये दिन सिवा परेशानी के और कुछ भी हाथ न लगेगा। आप इस समय अपने एक जिलेदार के लिए इस तरह सोच विचार में पड़े हैं; लेकिन वह इस समय शीघ्र ही आनेवाला है जब कि आपको जिमीदारी के लिए सर का पसीना पैर तक और पैर का पसीना सर तक पहुँचाना पड़ेगा और इन्हीं गाँव वालों से फिर आपको सहायता लेनी पड़ेगी। अब आप जैसा उचित समझें वैसा करें। मैं यह नहीं चाहता कि आप को आये दिन परेशानी में पड़ना पड़े।"

बेटे की बात सुनकर जिमीदार चुप हो गये। उन्होंने सिर्फ़ इतना कहा कि "अब मैं बुड्ढा हो चला। मुझे जिमीदारी के काम में कुछ भी दिलचस्पी नहीं है। तुम्हें पढ़ा-लिखा कर मैंने होशियार बना दिया। अब तुम जैसा समझो वैसा करो क्योंकि जिमीदारी का बेड़ा तुम्हीं को पार लगाना है।" इतना कहकर वे अपने काम से चले गये। उनका बेटा बड़े ही सोच विचार में पड़ गया।

कुछ भी हो, उसने यह पता चलाया कि जिलेदार उसके गाँव में आया है या नहीं? पता लग जाने पर उसने जिलेदार को अपने पास बुलाकर कहा, "मैंने तुम्हारी बड़ी शिकायत सुनी है। अब ज़रा सम्हल कर चलो।"

जिलेदार ने कहा—"जब तक आपके पिता मौजूद हैं तब

तक आपका कोई हक़ नहीं कि आप मुझसे जवाब तलब करें। मेरा काम आपको पसंद नहीं तो अपने पिता से कह कर मुझे अलग करवा दें, लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि आप बेकार मेरे काम में टाँग अड़ावें।"

जिमीदार के बेटे ने कहा, "आप बढ़-बढ़ कर बातें करने में तनिक भी नहीं हिचकते यह बड़ी बुरी आदत है। मैं सचेत किये देता हूँ।"

जिलेदार—"जब यह मालूम हो जायगा कि अब आपके हाथ में जिमीदारी का कुल काम आ गया है तब मैं खुद काम से इस्तीफ़ा दे दूँगा। सचेत करने के लिए फिर आपको कष्ट उठाने का मौक़ा न मिलेगा।"

जिमीदार के बेटे ने कहा, "अच्छा, आप अब जा सकते हैं। आपको कुछ भी समझाना बेकार है। लेकिन यह याद रखें कि किये का फल हाथोहाथ मिलता है।"

ज़िलेदार, "इन सब बातों को मैं अच्छी तरह समझता हूँ। नादान नहीं हूँ।"

ज़िमीदार का बेटा, "अफसोस तो यही है कि नादान न होते हुए भी बड़े नादान हैं।"

ज़िलेदार, "जो कुछ पाप या पुण्य का काम करता हूँ वह सब आप सब लोगों के लिए ही करता हूँ।"

ज़िमीदार का बेटा, "हम लोगों ने यह कभी भी नहीं कहा कि आप अत्याचार करें।"

ज़िलेदार, "जब लगान की वसूली में कठिनाई पड़ती है तब सख़्त होना ही पड़ता है।"

ज़िमींदार का बेटा, "सख़्ती और अत्याचार इन दो में बड़ा ही फ़र्क है।"

ज़िलेदार, "आपके पिता जी तो हमेशा मेरे काम से खुश रहे लेकिन अफ़सोस है......।"

ज़िमीदार का बेटा, "लेकिन अफ़सोस है कि आपका काम मुझे पसंद नहीं है।"

ज़िलेदार, "सब को सब काम पसंद होंगे इसके कोई माने नहीं है। जिसका जैसा अनुभव होता है वह उसी अनुभव के अनुसार लोगों के बारे में अपनी राय कायम करता है।"

ज़िमीदार का बेटा, "रामनाथ के ख़िलाफ़ आपने रिपोर्ट कराई है; क्या यह सही है?

ज़िलेदार, "रामनाथ ने मेरा बिगाड़ा ही क्या है जो उनके खिलाफ मैं थाने में रिपोर्ट कराने लगा। वे तो बेचारे बड़े ही सीधे स्वभाव के आदमी हैं।"

सत्रहवाँ परिच्छेद

—(o)—

अग्नि परीक्षा

रामनाथ के ख़िलाफ़ थाने में रिपोर्ट भेजी गई है यह समाचार गाँव घर में फैल गया। जिस समय गंगादेवी ने यह सुना उस समय उनकी जो दशा हुई वह वर्णन के परे है।

पाला पड़ने से जिस तरह कमल के फूल का रंग फीका पड़ जाता है उसी तरह गंगादेवी के चेहरे का रंग भी फीका पड़ गया। न आँखों से आँसू ही झरे और न मुँह से शब्द ही निकले। काठ की पुतली की तरह चुपचाप खड़ी ही रह गईं। इतने में रामनाथ भी आ गए। उनको देखते ही उनके दुःख का बाँध फूट गया और आँखों से आँसुओं की धारा बह चली।

पत्नी की यह दशा देखकर रामनाथ का हृदय रो उठा और इस दुःख का कारण गाँव भर के लोगों को ख़ुश रखने वाले अपने कामों को समझ वे अपने भाग्य को कोसने लगे। किसी तरह धीरज धरते हुए उन्होंने अपनी पत्नी को समझाया—

"जिस के सहारे मैंने जीवन को सच्चे कर्त्तव्य-मार्ग पर चलाया, जिसकी साधारण प्रतिभा के प्रकाश में ही मैंने अपने स्वरूप को पहचान कर परमात्मा की करुणा प्राप्त की, जिस

गंगादेवी की एक ही लहर में मेरा भय, आलस्य और कष्ट बात की बात में लापता हो गये, जिस गंगादेवी के प्रसन्न मुख को देखकर मेरा मन प्रफुल्लित हो उठता था, आज उसी देवी स्वरूपिणी गंगादेवी के लिए इस प्रकार की उदासी शोभा नहीं देती। समय परीक्षा का है। परीक्षा से घबड़ाना कापुरुषों का लक्षण है। ऐसा लक्षण मेरे और तुम्हारे पास न आने पाये; इस बात का प्रयत्न करना मेरा और तुम्हारा परम कर्तव्य है।"

आँसुओं को आँचल से पोछ कर गंगादेवी ने कहा, "मेरी समझ में यही नहीं आ रहा है कि हम दोनों ने जिलेदार और उनके साथियों का बिगाड़ा क्या है?"

रामनाथ, "इसमें बनाने और बिगाड़ने की कोई बात नहीं है। जिसका जैसा स्वभाव होता है वह वैसा ही काम करता है। दिन और रात, उजाला और अँधेरा, सुख और दुःख, हर्ष और विषाद, लाभ और हानि का जिस तरह जोड़ा बनाया गया है उसी तरह, भले और बुरे, सज्जन और दुर्जन, उपकारी और अपकारी, शिष्ट और दुष्ट, मित्र और शत्रु, सरल और कुटिल मनुष्यों का जोड़ा भी बना हुआ है। जहाँ पर एक होगा, दूसरा भी किसी न किसी रूप में वहाँ मौजूद रहेगा। यदि हम दोनों गाँव का सुधार करने वाले भले, सज्जन, उपकारी, शिष्ट, मित्र और सरल न कहाते, तो फिर हमारे विरोध में बुरे, दुर्जन, अपकारी, दुष्ट, शत्रु और कुटिल स्वभाव वाले जिलेदार तथा उनके साथी भी न आते। हम दोनों अपनी

सज्जनता के लिए प्रसिद्ध हो रहे हैं। ऐसी दशा में वे सब अपनी दुर्जनता को न प्रकट करें यह बड़े आश्चर्य की बात होगी। उन्होंने ठीक ही रास्ता ग्रहण किया है।"

गंगादेवी, "ये सब मन बहलाने की बातें हैं। हमें ऐसे लोगों से हर समय सावधान रहना चाहिए। गाँव घर की बात होती तो बात दूसरी थी। जब दूसरे गाववालों ने कमर कस ली है, तब तो उचित यही होगा कि यह गाँव छोड़ दिया जाय। जितना सुधार करना था वह सब हो चुका है। बेकार लोगों से दुश्मनी मोल लेना ठीक नहीं है।"

रामनाथ, "मुझे तुम्हारी राय पसन्द है लेकिन यह समय परीक्षा का है। गाँव छोड़ने का नहीं है। परीक्षा में सफल होते ही मैं इस गाँव से हमेशा के लिए चल दूँगा। रघुराज, श्यामलाल, शंकरलाल, रामकिशोर ये सब गाँव सुधार के फ़ायदे और कायदे समझ ही चुके हैं। हम दोनों के न रहने पर भी सब का काम अच्छे ढङ्ग से चलता रहेगा। शंभू बनिया जैसा काम करता चला आ रहा है, अगर ऐसा ही काम बराबर करता रहा, तो गाँव में व्यौपार करने वाले भी अधिक हो जायँगे और दरिद्रता का नाश भी चिरकाल के लिए हो जायगा।"

वे दोनों इसी तरह आपस में बातें कर ही रहे थे कि मुखिया श्यामलाल की पत्नी चमेली शंभू बनिया की पत्नी चन्दा को साथ लेकर आ पहुँची। रामनाथ घर से बाहर को चल पड़े।

चमेली ने गंगादेवी से कहा, "बहन, नाश हो उन शैतानों

का; जिन्होंने बेकार रामनाथ के खिलाफ़ थाने में रिपोर्ट कराई है। सीधे आदमी को सताते हुए उन्हें शर्म तक न आई।"

गङ्गादेवी, "उनको बुरा न कहो जिनको यह भी पता नहीं है कि वे क्या कर रहे हैं ? अगर उनमें इतनी ही समझ होती, तो फिर ऐसा क्यों करते ? सम्हल कर आप ही चलते।"

चन्दा ने कहा, "अँधेरे को नाश करता हुआ जब सूरज अपना प्रकाश दिखाने लगता है तब उल्लू और चमगीदड़ ये सब छिपते हैं और सूरज को दिन भर कोसते भी हैं।"

गंगादेवी, "ऐसा मत कहो। न यहाँ कोई सूरज है और न कोई उल्लू या चमगीदड़ है। सभी तो हमारे भाई हैं। ना-समझ हैं। कभी न कभी समझ कर ठीक रास्ते पर आ ही जाँयगे।"

इतने में पटवारिन के साथ दुर्गादेवी भी आ गईं। आते ही गङ्गादेवी से बोलीं, "बड़ी खुशी की बात है कि हम लोगों के इम्तहान का समय नज़दीक ही चला आ रहा है।"

पटवारिन ने कहा, "जिस इम्तहान में अपमान की लपटों में जलना पड़ता हो, भगवान ऐसे इम्तहान में कभी न डाले।"

दुर्गा, "मुसीबत के तूफान में वही पड़ता है जिसमें कोई विशेषता होती है।"

पटवारिन, "दो आँसू न बहाकर मज़ाक उड़ा रही हो ?"

दुर्गा, "सच कहती हूँ। मज़ाक की इसमें बू तक भी नहीं है।"

गङ्गादेवी ने उन दोनों की बातों को सुनकर कहा, "बहन

दुर्गा का कहना सही है। ईश्वर की लीला का नियम ही यही है कि जिनमें कुछ अच्छाई है मुसीबत उन्हीं को घेरे रहती है।"

पटवारिन, "समझा कर बात कहो, तो मैं भी समझूँ।"

दुर्गा, "जंगल में जितने पेड़ सीधे होते हैं, वही सब से पहले काटे जाते हैं। चाँद और सूरज—आसमान में ये ही दो सबसे अधिक प्रकाश करने वाले हैं। ग्रहण इन्हीं पर लगता है। जितने खूबसूरत फूल होते हैं, माली सबसे पहले उन्हीं को तोड़ता है। जो गाय दूध देती है, उसी पर अक्सर मार पड़ती है। जो सीधे स्वभाव के होते हैं, शैतान उन्हीं को सताते हैं। श्रीगङ्गा जी चूँकि अधिक पवित्र हैं इसलिए दुनिया भर का पाप उन्हीं में धोया जाता है। अब तो तुम भी समझ गई होगी कि अच्छे ही मुसीबत में फँसते हैं।

पटवारिन ने कहा, "समझ तो गई, लेकिन जी में न जानें कैसा हो रहा है?"

चन्दा ने कहा, "झूठे अभिमान के भूखे जिलेदार और उनके साथी मरेंगे तो नरक में भी जगह न पायँगे। परमात्मा वह दिन जल्द लाये जब कि इन शैतानों का नाश हो।"

गंगा ने चन्दा से कहा, "बहुत हो चुका। अब और अधिक बुरा न मनाओ।"

इतने में बुढ़िया आ पहुँची। बुढ़िया ने रोते हुए गंगादेवी से कहा, "मेरे लिए जिसने सब कुछ किया उसी का मैं कुछ भी न कर सकी। कितनी बड़ी अभागिन हूँ।"

गंगा, "तुम बेकार परेशान हो रही हो। सोना जब आग में तपता है तभी उसका निखरा हुआ रूप दिखाई पड़ता है। हीरा जितना ही शान पर घिसता है उतना ही अधिक चमकता है। मेंहदी सिल पर जितनी ही पिसती है उतना ही उसका रंग अधिक होता है। मामूली मिट्टी के घड़े जिनको नष्ट करने के लिए थोड़ा पानी ही काफ़ी होता है; वही जब आँवें की आँच में कुछ दिन पड़े रहते हैं; तब अथाह पानी में भी नष्ट नहीं होते। इसलिए तुमको इस मामले में निश्चिन्त रहना चाहिए।"

दुर्गा, "यही तो मैं भी कहती हूँ। चार दिन की ज़िन्दगी है। बेफिक्री से बितानी चाहिए। घबड़ाने से या परेशान होने से कुछ भी फ़ायदा नहीं है।"

पटवारिन, "बहन दुर्गा का कहना बहुत ही सही है।

ज़िन्दगी यह बुलबुला है, बुलबुलों - सी जान है;
चहचहा ले बुलबुलों - सा, किसलिए हैरान है।
रोते रहो तो भी भला, हँसते रहो तो भी भला;
रुक न सकती ज़िन्दगी यह, वक्त जायेगा चला।
सब मुसीबत इम्तहाँ है, क्यों परेशाँ हो रहा?
ऐश कर आराम कर, क्यों ज़िन्दगी तू खो रहा।"

गङ्गा ने मुस्कुराते हुए कहा, "वाह! तुमने तो कमाल कर दिखाया। जब ऐसे ही विचार जोर मारेंगें तभी मुसीबत को भी लोग खिलौना समझ सकेंगें।"

अट्ठारहवाँ परिच्छेद

मुखिया पंचायत

दरोग़ा प्रतापसिंह अपने काम में हमेशा मुस्तैद रहते थे। आलस तो उनमें नाम को भी न था। ऐसे दरोग़ा की मातहती में जितने भी सिपाही थे; सभी हमेशा चौकन्ने रहा करते।

हलके में जितने भी गाँव थे सभी में अमन-चैन बनाये रखने के लिए वे मुनासिब कोशिश किया करते। अपने मातहत सिपाहियों को बुलाकर अकसर वे इस तरह समझाया करते, "हम तो जनता की भलाई करने के लिए नौकर रखे गये हैं। पुलिस की नौकरी में आराम-तलबी की गुंजायश ही कहाँ है? अगर हम सच्चाई के साथ पुलिस-विभाग के उसूलों को मानकर जनता को आराम पहुँचा सके तो, सरकार की निगाह में हमारा दर्जा हमेशा ऊँचा बना रहेगा और परमात्मा की प्रसन्नता भी मिलेगी।"

मुन्शी मुनौवर खाँ ने बड़े अदब के साथ सलाम करते हुए कहा, "हुजूर, आप जैसी चाहते थे वैसी फ़ेहरिश्त तैयार की जा चुकी है। हुक्म हो तो अभी हुजूर के सामने पेश की जावे। इस फेहरिश्त के तैयार करने में जितनी मेहनत पड़ी है उसे मैं ही जानता हूँ।"

प्रतापसिंह के हुक्म से फ़ेहरिश्त उनके सामने पेश की गई। फ़ेहरिश्त को अपने पास रखकर उन्होंने सिपाहियों से कहा, "देखो, अब यह काम करना है जिससे कि आज के सातवें दिन यहाँ पर हलके के सभी चौकीदार और मुखिया इकट्ठे किये जा सकें। मैं यह चाहता हूँ कि एक बार सब को समझा दूँ कि गाँवों में अमन-चैन बनाये रखने के लिए उन्हें किस रास्ते पर चलना होगा, ताकि उनको अपने काम में कोई कठिनाई न हो।"

सिपाही शिवनाथ अपने को बड़ा चतुर लगाता था और मन में अपने को दरोग़ा ही समझता था। यही बात मुन्शी जी की भी थी। जब कोई कभी दरोग़ा साहब से मिलने आता, तो वे ही पूरी ज़िम्मेदारी के साथ बातें करके उस आदमी को नौ दो ग्यारह कर देते। मोहनसिंह न राम की कहते न रहीम की। अपना काम करते और मस्त पड़े रहते। चार सिपाही और थे जिनमें तीन मुसलमान और एक हिन्दू था। हिन्दू जाति का अहिर था। अपने काम में बड़ा होशियार और जनता के साथ अच्छा बर्ताव करने वाला सिपाही था।

दरोग़ा प्रतापसिंह की बातों को सुनकर शिवनाथ ने कहा, "कानूनन जितने अख़्त्यारात आपको मिले हुए हैं, आपको उन्हीं के अन्दर काम करना चाहिए। दायरे के बाहर क़दम रखने से ख़तरे का अंदेशा है। फिर आपकी जैसी मर्ज़ी हो। मैं तो हुक्म का बन्दा हूँ।"

मुन्शी मुनौवर खाँ ने कहा, "तर्जुबा यह बतलाता है कि

उसूलन जो बात अच्छी है, उसको अमल में लाकर कर दिखाना बड़ी टेढ़ी खीर है। आख़िर हम लोग भी कुछ समझते ही हैं। सात-सात साल की नौकरी हो चुकी। इस अर्से में हमने मक्खियाँ थोड़े ही मारी हैं।"

मोहनसिंह ने कहा, "नहीं तो फिर आपने चीते, तेंदुए, बाघ, और शेर मारे होंगे।"

तीनों मुसलमान सिपाहियों ने क्रमवार इस तरह मज़ाक करते हुए कहा।

पहला, "मक्खियाँ अगर नहीं मारी तो खटमलों को तो ज़रूर ही मारा होगा।"

दूसरा, "अजी बकते क्या हो? मुन्शी जी ने अगर मक्खियाँ नहीं मारी तो दूसरों के हक़ ज़रूर मारे होंगे। मुन्शी जी कोई मामूली शान के आदमी थोड़े ही हैं। देहात के गाँवों में जाकर ऐसी डाट-फटकार बताते हैं कि बेचारे किसानों की कब्जियत दूर हो जाती है।"

तीसरा, "अरे अब वह ज़माना गया। देहाती भी लिख पढ़ कर तैयार हो चुके हैं।"

अहिर सिपाही ने कहा, "मुंशी जी किसी वजह से इस वक्त ख़ामोश हैं, नहीं तो फिर बताते।"

प्रतापसिंह बड़े ही तजुर्बेकार दरोग़ा थे। सिपाहियों के इस तरह के जवाब सवाल उनके लिए नये न थे। फिर भी किसी पर सख़्ती करना या किसी के ऐब बतलाना उनके उसूल के ख़िलाफ़

था। वे काम लेने का तरीक़ा जानते थे इसी लिए सिपाहियों की बातों को सुन कर वे मुस्कुराने लगे और बोले, "मैं यह चाहता हूँ कि एक बार देख तो लूँ कि हमारे इस हलके के मुखिया और चौकीदार किस क़िस्म के आदमी हैं। कहाँ तक अक़्ल रखते हैं ?"

धीरे धीरे छः दिन बीत गये। सातवें दिन हलके के सभी मुखिया और चौकीदार आकर थाने में जमा हो गये। दरोगा साहब ने एक एक करके सब के नाम पूछे और यह भी जान लिया कि उनमें से कितने लिखना-पढ़ना जानते हैं और कितने सिर्फ़ अँगूठा निशानी से ही काम चलाते हैं। इसके बाद उन्होंने मुखियों को समझाते हुए कहा, "आप सब सरकार के और अपने गाँव वालों के सच्चे साथी हैं, इसलिए हमें आप लोगों से यही आशा है कि आप सब अपने अपने गाँवों की सच्ची रिपोर्ट थाने तक पहुँचाते रहेंगे। साथ ही साथ जो लोग शरारती हों, उनके नाम भी यहाँ दर्ज कराते जाँय, ताकि उन सबों की जाँच की जा सके और ऐसी कोशिश की जाय जिससे वे सब शरारत करना बन्द कर दें और शरीफ़ आदमी बन जाँय।"

मुखियों में से एक उठ कर खड़ा हुआ और बोला, "गो कि हमारे गाँव की बात नहीं है फिर भी कहना पड़ रहा है। सुनते हैं कि श्यामलाल जिस गाँव के मुखिया हैं उनके गाँव में दो आदमी ऐसे शरारती तैयार हो रहे हैं जिनके बारे में क्या बताऊँ ? जितने चोर बदमाश हैं सभी को रात-रात भर वे अपने यहाँ बैठाये रखते हैं और न जानें क्या किया करते हैं। ये बातों में

इतने होशियार हैं कि आप लोग भी दंग हो जाँयगे ! उनके नाम हैं, रामनाथ और रघुराज।"

श्यामलाल ने विरोध करते हुए कहा. "रामनाथ और रघुराज हर्गिज शरारती नहीं हैं। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ और गाँव भर के लोग भी जानते हैं।"

श्यामलाल के जवाब को सुनकर उस मुखिया ने कहा, "अगर मेरा बयान ग़लत हो तो मैं पचास रुपये जुर्माना देने को तैयार हूँ। रुपये अभी भी जमा कर सकता हूँ।"

श्यामलाल ने साहस करते हुए कहा, "यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम पचास की जगह सौ रुपये दे सकते हो। अगर मसक्कत की कमाई होती तो फिर पैसे की कीमत मालूम होती।"

"मसक्कत की कमाई नहीं है तो क्या तुम मेरे घर पर रुपये जमा कर आते हो ?"

"मैं यह नहीं चाहता कि बेकार दस के सामने तुम्हारा भंडा फोड़ करूँ।"

"जब कोई ऐसी बात है ही नहीं तब फिर भंडा-फोड़ क्या होगा ?"

"मालूम होता है कि अब तुम लोगों के पाप का घड़ा काफ़ी भर आया है।"

"और तुम्हारा जो पाप का दरिया है उसमें अब बाढ़ आनेवाली है।"

"मेरे गाँव के मामले में बोलने का साहस तुमने किस लिए किया।"

"और अपने गाँव के मामले को दबाने का हक़ तुमको कहाँ से मिला?"

"तुम्हें हमारे गाँव के लोगों के चाल-चलन का तर्जुबा ही क्या हो सकता है?"

"जो बात आस-पास के गाँवों में मशहूर है उसके लिए तर्जुबा ज़रूरी नहीं है।"

"समझ कर बातें करो। उल्टी गंगा बहाने से कुछ भी हासिल न होगा।"

प्रतापसिंह ने दोनों को समझाते हुए कहा, "अब आप दोनों शान्त हो जाँय। रही बात रामनाथ और रघुराज की। मैं उनसे मिलकर समझ लूँगा कि वे किस तरह के आदमी हैं। फिर मुनासिब कार्रवाई की जा सकेगी। अब आप सब अपने अपने घर जा सकते हैं।"

धीरे-धीरे मुखिया लोग चले गये। पंचमपासी को अपने पास बुलाकर प्रतापसिंह ने उससे पूछा, "रामनाथ और रघुराज के बारे में तुम क्या जानते हो?"

पंचम पासी, "जितने जरायम पेशेवाले लोग हैं सभी बड़ी रात तक उनके यहाँ बैठे रहते हैं। हम गँवार आदमी हैं। आदमी की पहिचान हममें कैसे हो सकती है?"

———

उन्नीसवाँ परिच्छेद

शेर-बच्चा

थाने से वापस आने पर चौकीदार से ज़िलेदार ने पूछा, "थाने में जो नये दरोग़ा आये हुए हैं उनका मिज़ाज कैसा है? सुनता हूँ कि बड़े तीखे स्वभाव के आदमी हैं।"

चौकीदार, "हमारे अफ़सर हैं इतना ही मैं जानता हूँ। मिज़ाज का मुझे पता नहीं है।"

ज़िलेदार, "रामनाथ की स्त्री गंगा को तो जानते ही होगे? वह तो बड़ी..."

चौकीदार, "भले घर की बहू-बेटियों से मेरा कोई सरोकार नहीं है। इसके अलावा आप जिधर इशारा करना चाहते हैं वह बड़ी बेजा बात है। मैं तो आपसे यही कहना चाहता था कि, अगर रामनाथ और रघुराज इस बार बच गये तो फिर आप लोगों की दाल कभी गलाये न गलेगी। क्योंकि ये दोनों बड़े ही होशियार आदमी हैं। अपने को बचाने के लिए हर तरह के दाँव पेच जानते हैं।"

ज़िलेदार, "तुम तो काठ के उल्लू हो। भले आदमी लाठी से नहीं दवाये जाते। उनके दबाने के लिए ज़रूरी बात यह है

कि जिस तरह हो उन्हें चारों तरफ़ बदनाम कर दिया जाय। भला आदमी अपनी बदनामी से हमेशा डरता रहता है।"

चौकीदार, "आपकी तरह सभी होशियार होंगे इसके कोई माने नहीं हैं। चूँकि आप यह चाहते हैं कि रामनाथ और रघुराज को नीचा दिखाया जाय इसीलिए मैं भी गाँव का ज़िलेदार समझकर आपका साथ देता चला आ रहा हूँ।"

ज़िलेदार, "अच्छी बात है। तो फिर एक काम करो। मालिन का लड़का रघुवर जिसको रामनाथ ने अपना चेला बनाया है उसे मेरे पास अभी बुला लाओ।"

चौकीदार ने मालिन के घर जाकर रघुवर को पुकारा। रघुवर के बाहर आते ही चौकीदार ने कहा, "रघुवर, तुमको ज़िलेदार ने अभी इसी दम बुलाया है।"

रघुवर ने कहा, "तुम थाने के चौकीदार हो या ज़िलेदार के नौकर ?"

चौकीदार, "थाने का चौकीदार भी हूँ और ज़िलेदार का नौकर भी।"

रघुवर, "अच्छी बात है। ज़िलेदार की मेहरबानी आज मुझ पर क्यों हुई ?"

चौकीदार, "तुम चलते हो या बेकार की बहस में समय बरबाद करते हो ?"

रघुवर, "बिना समझे हुए मैं ज़िलेदार के पास नहीं जा सकता।"

चौकीदार, "मतलब यह कि तुम इस समय मेरे साथ नहीं चलोगे ?"

रघुवर, "क्या मेरे पास कोई दूसरा काम है ही नहीं ? पहले अपना काम कर लूँगा। फिर अगर फ़ुर्सत मिली तो ज़िलेदार से भी मुलाकात कर लूँगा।"

चौकीदार, "रामनाथ के बुलाने से तो सब काम छोड़ कर चले जाते हो और जब ज़िलेदार बुलाते हैं तब इधर-उधर की चाल बताते हो ?"

रघुवर, "मैं अभी नहीं जा सकता। साफ़-साफ़ बतलाये देता हूँ। ज़िलेदार के पास जाने के लिए घर के काम धंधों से बेफ़िक्र होना निहायत ज़रूरी है।"

चैकीदार अपना-सा मुँह लेकर लौट पड़ा। रास्ते में रामनाथ से भेंट हो गई। रामनाथ ने चौकीदार से पूछा, "क्यों पंचम, भला यह तो बताओ कि इस गाँव में तुम्हारा काम किस तरह का है ?"

चौकीदार, "मैं गाँव का चौकीदार हूँ। रात में पहरा देना और गाँव में आये हुए नम्बरी चोर बदमाशों का पता लगाकर थाने में रिपोर्ट करना, इसके अलावा मुखिया जो कुछ कहें उसे मानना यही मेरा काम है।"

रामनाथ, "मुखिया श्यामलाल से मालूम हुआ है कि थाने में मेरे खिलाफ़ कुछ बातें कही गईं हैं। क्या यह सही है ?"

चौकीदार, "सोलहो आने ग़लत है। मैं तो वहाँ पर मौजूद था ही।"

रामनाथ, "ख़ैर! इस समय सबेरे-सबेरे किधर से चले आ रहे हो?"

चौकीदार, "ज़िलेदार ने रघुवर को बुलाने के लिए भेजा था। लेकिन वह आया ही नहीं और उल्टा कानून बघारने लगा। बड़ा चंट हो गया है।"

रामनाथ, "उसने क्या कहा? तुमने कैसे समझा कि वह चंट है?"

चौकीदार, "मालिन का लड़का सुख से रोटी पर रोटी रख कर खाने लगा तो अपने को लाट साहब समझने लगा है। बोलता है ऐंठकर।"

रामनाथ, "तुमको उसकी तरक्क़ी से इतनी जलन क्यों हो रही है?"

चौकीदार, "है तो वह आपका ही चेला क्यों न तेज़ निकले? जंगली रघुराज और खूसट शंभू भी जब आदमी बन गये तब रघुवर भी शेर-बच्चा क्यों न बने?"

इन सब बातों को कहता हुआ चौकीदार चल पड़ा और ज़िलेदार के पास जाकर कहने लगा, "रघुवर तो कहने लगा कि ज़िलेदार मुझे बुलाने वाले होते कौन हैं? इसके अलावा बिना रामनाथ से सलाह किये मैं नहीं चल सकता।"

बीसवाँ परिच्छेद

--:(o):--

गाँव का चरवाहा

गाँव के मवेशियों के लिए जितनी चरोखर ज़मीन थी उसका अधिक भाग खेतों के रूप में बदल चुका था। एकाध ज़िमीदार ऐसे थे जिनकी ज़िमीदारी में चरोखर ज़मीन काफ़ी थी। आस-पास के चरवाहे उन्हीं से चरोखर ज़मीन ले लेते और अपने गाँव वालों के मवेशियों को उसी में चराया करते। मवेशी दिन भर चरवाहों की देखरेख में रहते। शाम को घर आते ही उनके किसान उनको थान पर बाँध देते।

एक बार रामनाथ घूमते हुए चरोखर ज़मीन में मवेशियों को चराने वाले चरवाहों के पास जा पहुँचे। वहाँ पर जाकर देखते हैं कि सभी मवेशी ऊसर ज़मीन में खड़े किये गये हैं। सिर्फ़ चरवाहे के मवेशी चरोखर ज़मीन की हरी-भरी घास चरने के स्वतंत्र अधिकारी समझे जा रहे हैं। यह दशा देखकर रामनाथ ने चरवाहे से कहा--

"जानवर बिना ज़बान के होते हैं। इनके साथ इस तरह अत्याचार करना बड़े ही शर्म की बात है। तुम आदमी हो। अक्ल रखते हो। तुम्हारी गायें और भैंसे तो हरी-भरी घास चर

रही हैं और बाक़ी को तुमने ऊसर में खड़ा कर रखा है। क्या यही तुम्हारा न्याय है ? चरवही वग़ैरह तो पूरी ले लेते हो, फिर ठीक से चराते क्यों नहीं ?"

चरवाहा रामनाथ के गाँव का न था; सिर्फ़ अर्जुनखेड़े के मवेशियों को ताकता था। रामनाथ के विरोधियों का यह भी एक हथियार था। एक तो गँवार, दूसरे चरवाहा, उस पर विरोधियों का असर, इसलिए उसने रामनाथ को बड़ा कड़ा जवाब दिया था। जिसका सारांश यह था कि आयन्दा अपने गाँव के मवेशियों का इन्तज़ाम रामनाथ को स्वयं कर लेना चाहिए, नहीं तो ऐसी हवा खिलायी जायगी जिससे दिमाग़ ठीक हो जायगा।

इसी घटना को सामने रखते हुए गाँव भर के आदमियों को बुला कर रामनाथ ने कहा, "आप लोगों के मवेशी हमेशा चरवाहों की देख-रेख में रहते हैं। उनको वहाँ पर चरने को मिलता है या नहीं इसे आप लोग जानते तक भी नहीं। मैं यह बतलाता हूँ कि आपका गोधन और आपके मवेशी पेट भर चारा न पाने की वजह से रोगों के चक्कर में फँस कर मरते जा रहे हैं। बहुत-से इतने कमज़ोर हो गये हैं कि चलते चलते ही थक जाते हैं। बहुत से इतने दुबले हो गये हैं कि हड्डियाँ साफ़ दिखाई पड़ने लगी हैं। जिस गाय के चार सेर दूध होता था वह सेर भर दूध मुश्किल से देती है। भैंस जो दस सेर दूध देती थी वह अब तीन सेर भी दूध नहीं देती है। जिस गाँव में दूध और घी की नदियाँ बहती थीं वहाँ अब धूप-दीप के लिए भी घी नहीं मिल रहा है। अब

आप लोगों को इस ओर भी ध्यान देना चाहिए। मेरी तो राय यही है कि इस साल चन्दे से चरोखर की ज़मीन ले ली जावे और एक नया चरवाहा खड़ा करके उसकी ही देखरेख में मवेशियों को सौंप देना चाहिए। अड़चन की कोई बात नहीं मालूम होती। हमारा गोधन फिर से गोरस की अनन्त धारा बहा सकेगा।"

रामनाथ की सलाह सबको पसंद आ गई। जिस ज़िमीदार के इलाके में चरोखर ज़मीन थी वे उसी के पास गये और लगभग सौ बीघे की चरोखर ठीक कर आये। इसके बाद मालिन के बेटे रघुवर को चरवाहा बनाया। रामनाथ से रघुवर खुश था और मालिन भी खुश थी। इसलिए सब काम आसानी से बन गया। रघुवर को चरवाहे के रूप में समझाते हुए रामनाथ ने कहा,

"गोधन हमारे जीवन का सहारा है। जिसका गोधन बलहीन होता है उसकी कभी उन्नति नहीं हो सकती। जीवन को सफल बनाने के लिए गोधन की रक्षा करना बड़ा ज़रूरी काम है। हमारे श्रीकृष्ण भगवान इस बात को समझते थे तभी तो गोकुल में गौएँ चराया करते थे।"

रामनाथ की बातों को सुन कर रघुवर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने प्रसन्नता के साथ कहा, "गोकुल में गौएँ चराने वाले हमारे श्रीकृष्ण भगवान के सामने बड़े बड़े राजे। महाराजे भी अपना सिर झुकाते थे। कितना अच्छा यह काम है। मैं भी इसी तरह मवेशियों को चराया करूँगा।"

रामनाथ ने रघुवर से कहा, "तुम्हें तो हमारे देश भारत में, तुम्हारी याद होती है।" यह गाना तो याद ही होगा। इस गाने को कभी न भूलना। इसी गाने में तुम्हें भगवान के भी दर्शन मिल जाँयगे। फिर क्या ? तुम्हारा जीवन सफल हो जायगा। लोग तुम्हें भी याद करते रहेंगे।"

रघुवर, "मैं इस गीत को कभी नहीं भूल सकता। मुझे यह गीत बहुत पसंद है।"

रामनाथ, "देखो, मवेशियों की देख-भाल अच्छी तरह करते रहना। घबड़ाने की कोई बात नहीं है। दस-पाँच दिन मैं स्वयं तुम्हारे साथ रहूँगा क्योंकि जंगल का मामला है। जब दस-पाँच चरवाहे और आ जाँयगे तब फिर डरने की कोई बात न रह जायगी।"

रघुवर, "मैं डरपोक थोड़े ही हूँ। मैं अकेले मवेशियों को ले जा सकता हूँ।"

रामनाथ, "जानते हो कि चरवाहा बनने पर साल में तुम्हारे हाथ कितना रुपया आयगा ?"

रघुवर, "मैं क्या जानूँ ? जितना रुपया मिलने को होगा वह आप ही आप मिल जायगा।"

रामनाथ, "गाँव भर में तीस भैंस और चालीस गायें हैं। हर एक भैंस की चरवही कम से कम डेढ़ रुपया और गाय की एक रुपया समझ लो। अब बताओ कि कितना रुपया मिलेगा ?"

रघुवर, "तीस ड्यौढ़े पैंतालीस और चालीस याने पचासी

रुपये मिलेंगे। पन्द्रह रुपये और होते तो पूरे सौ हो जाते।" कहते कहते रघुवर .खुशी के मारे वहीं पर उछलने लगा।

दूसरे ही दिन से रघुवर चरवाहा बन गया। जैसा कि क़ायदा था सभी ने प्रति मवेशी के हिसाब से दो दो आने लाकर रघुवर के हाथ में रख दिये। रामनाथ उसके साथ ही थे। जब सब पैसे आ गये तब रामनाथ ने उससे सवाल किया, "कितने पैसे आये?"

रघुवर, "अभी तो मैंने गिना तक भी नहीं है। गिन लूँ तब बता सकता हूँ।"

रामनाथ, "अच्छा, गिन लो।। मैं अभी से बतलाये देता हूँ; चार आने कम नौ रुपये मिले हैं। सवा रुपया और मिल जाता तो पूरे एक सौ साठ आने यानी दस रुपये हो जाते।"

गिन कर रघुवर ने कहा, "एक सौ चालीस आने हुए। सोलह आने का रुपया होता है। सोलह अट्ठे एक सौ अट्ठाइस बाकी बचे बारह अर्थात् आठ रुपये बारह आने हुए।"

उत्साह की लहरों में लहराता हुआ रघुवर मवेशियों को हाँकता हुआ चरोखर की ओर चल पड़ा। रामनाथ भी एकाध जानवर को खेदते हुए चल पड़े। चरोखर की ज़मीन में पहुँचते ही रामनाथ ने सबसे पहले अपनी हद के कुल निशान रघुवर को पहिचनवा दिये और बबूल के जंगल की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "जब जानवर चरने लग जाँय तब इन बबूलों से गोंद निकालते रहना। गाँव की बाज़ार में कम से कम चार छः आने

सेर बेच सकोगे। साल भर में अगर एक मन याने रोज़ाना आध पाव भी इकट्ठा कर लिया तो लगभग दस पन्द्रह रुपये घर आ जायँगे। याने पचासी और पन्द्रह पूरे सौ रुपये हो गये। पौने नौ तो यों ही मिल गये। अब तुम्हीं बताओ कि यह गाँव घर में कितना अच्छा काम है।"

रघुवर, "मुझे तो यह काम बहुत ही पसंद है। रुपये नक़द और स्वतंत्रता पूरी।"

रामनाथ, "इतना ही नहीं। दो तीन महीने के बाद सीकें निकलने लगेंगी। सींकों से झाड़ू बनाई जाती है यह तो तुम जानते ही हो। इन्हीं सीकों को निकाल कर हमारे पास जमा करते जाना। शंभू बनिया शहर में ले जाकर काफ़ी दामों में बेंच आयेगा।"

रघुवर, "जंगल क्या है, रोज़गार की खान है।"

रामनाथ, "आस-पास झरबेरी की झाड़े खड़ी हुई हैं। कातिक के महीने से इनमें बेर पकने लगते हैं। इन बेरों को काफ़ी तादाद में इकट्ठा कर सके तो इनका चूरन भी शहर में ले जाकर बेचा जा सकता है। तरह तरह की खटाइयाँ किसमिस वगैरह छोड़ कर बनाई जाती हैं। काफ़ी मेहनत की गई तो इससे भी दस पन्द्रह रुपये कमाये जा सकते हैं।"

रघुवर, "बहुत ही अच्छा काम है। बेरों के तोड़ने में लगता ही क्या है?"

इक्कीसवाँ परिच्छेद

अमर सुधारक

गाँव सुधार के निश्चित कार्यक्रम को पूरा करके रामनाथ और उनकी स्त्री गंगादेवी ने तीर्थ-यात्रा का निश्चय किया। गाँव भर के सभी स्त्री, पुरुष और बच्चे इकट्ठे हो रहे थे। ज़िलेदार और उनके साथी भी आये। अपने परम हितैषी मित्र के वियोग की कल्पना करके लोग दुःखी हो रहे थे। सभी की आँखों में आँसू ही आँसू दिखाई पड़ते थे। सब लोगों के आ जाने पर रघुराज ने एक गीत गाया।

"पुजारी हम तुम्हारे हैं, उदासी क्यों दिखाते हो?
भिखारी हम तुम्हारे हैं, दया फिर क्यों न लाते हो?
अविद्या की अँधेरी में, दिखाकर ज्ञान का दीपक;
हमारे बन्धु हितकारी, कहाँ तुम आज जाते हो?
घटाएँ थीं यहाँ काली, न तारा एक भी दिखला,
दिखा कर चाँद पूनो का, अमावस क्यों बनाते हो?
यहीं हम लोग थे जनमें, यहीं हम दुःख थे झेले;
मिटा कर दुःख दीनों का, कहो फिर क्यों रुलाते हो?
यही था गाँव वह जिसमें, न मिलती शान्ति सपने में;

सुलभ कर शान्ति का सौदा, कहो दिल क्यों दुखाते हो ?
यहाँ पर फूट थी ऐसी, न मिलते लोग आपस में;
मिला कर प्रेम से सब को, विरह में क्यों डुबाते हो ?
यहाँ के घर नरक थे सब, बना कर देव-मन्दिर-से,
हमारे देवता "मंजुल", इन्हें क्यों छोड़ जाते हो ?"

गीत रामनाथ को लक्ष्य करके गाया जा रहा है यह सभी की समझ में आ गया। इसलिए इस गीत को गाने के लिए सभी तैयार हो गये। पहले एक पद को रघुराज और उसके साथी गाते, बाद में उसी पद को उपस्थित सभी सज्जन समस्वर से गाने लगते। इस तर सुब्यवस्थित स्वर लहरी वायु-मंडल को स्पर्श करती हुई अनंत आकाश के दशो दिशाओं में गूँज उठी।

गाना समाप्त होते ही ज़िलेदार ने खड़े होकर कहा, "इस गाँव में रामनाथ की जैसी सफलता हुई वह सभी जानते हैं। अफ़सोस है कि मैंने पहले-पहल ऐसे महान् पुरुष को न पहचाना। मैं यही समझा करता था कि जैसे दूसरी संस्थाओं के लोग काम किया करते हैं, वैसे ही ये भी करेंगे और गाँव के प्रबंध को तीन-तेरह करके स्वयं नौ-दो ग्यारह हो जायँगे। यही सोचकर मैंने इतना विरोध किया। मेरे हृदय ने इनको अपराधी समझा। मेरी आँखों ने इन पर अविश्वास किया, मेरा मस्तिष्क इनको अपना बैरी समझने लगा। और अदूरदर्शी मित्रों के उपदेश ने मुझे सम्हलने का मौक़ा भी न दिया। अन्त में उस दिन जब कि जाँच करने को दरोग़ा प्रतापसिंह आये और

रामनाथ की प्रशंसा करते हुए मुझे भली-भाँति समझाया तब मैंने समझा कि ये कितने योग्य व्यक्ति हैं।"

ज़िलेदार को अपनी छाती से लगा कर रामनाथ ने बड़ी नम्रता के साथ कहा, "आप ने तो मेरे साथ बड़ी भलाई का काम किया है। अगर आप ऐसा न करते तो मुझे परीक्षा में सफल होने का अवसर भी न मिलता। विश्वामित्र के कारण सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की, दुर्वासा के कारण परमभक्त राजा अम्बरीष की, दुर्योधन के कारण धर्मराज युधिष्ठिर की, माहिल के कारण आल्हा और ऊदल की कहानियाँ अभी तक गाई जा रही हैं। कौन जानता है कि भविष्य में आपके कारण मेरी भी कहानी को लोग गाना आरंभ न कर दें। कुछ भी हो, आपके विरोध ने मेरे मार्ग को अधिक सुन्दर बना दिया है। अगर मैं इसी रास्ते पर चलता गया तो मुझे "सत्यं शिवं सुन्दरं" का आनंद सरलता से मिल सकेगा।"

इसी तरह सब से बातें कर चुकने पर रामनाथ ने रघुराज के गीत का जवाब देते हुए एक दूसरा गीत गाया। उसमें उनकी भावनाओं का आनंत प्रवाह था। सभी मग्न होने लगे।

"तुम्हारी याद लेकर हम, यहाँ से आज जाते हैं;
न जायें तो करें क्या फिर, मुसाफिर हम कहाते हैं।
तुम्हारे प्रेम-बन्धन में, हमें था सुख अनोखा ही;
क्षितिज को पार करने का, इशारा प्रभु जनाते हैं।

बना जो कुछ किया सेवा, क्षमा करना, क्षमा करना;
सभी के दास हैं हम तो, समय पर दौड़ आते हैं।
सही है बात 'यह जीवन, तमाशा ही तमाशा है;'
तमाशे में छिपी आशा, उसी के गीत गाते हैं।
अनुग्रह ईश कर देगा, न विग्रह एक भी होगा;
हुई है संधि मन-से जो, उसी को दृढ़ बनाते हैं।
हमारी मित्रता सब से, हमारा प्रेम है सबसे;
न कोई है यहाँ बैरी, सभी को सिर झुकाते हैं।
हमारे भाग्य के तारे, बुलाते दूर से हमको;
नहीं हम छोड़ते "मंजुल", सितारे ही छुड़ाते हैं।"

गगादेवी और रामनाथ दोनों सब से बिदाय ग्रहण करके गाँव से चल दिये। मालिन रोने लगी; बुढ़िया बेचारी बेहोश हो गई। दुर्गा देवी की आँखों से आँसुओं की धारा बह चली, चमेली और चन्दा गंगादेवी की ओर ताकती ही रह गईं। पटवारिन अपना कलेजा थाम कर बैठ गईं। जिलेदार रघुराज, श्यामलाल, शंकरलाल, रामकिशोर और शंभू बनिया कुछ दूर पहुँचाने के लिए साथ-साथ चल पड़े। गाँव की स्त्रियाँ भी धीरे-धीरे पीछे चल पड़ीं।

गंगादेवी ने गाँव की स्त्रियों को समझाया, "अब आप लोग अधिक कष्ट न करें। यह संसार जिसे हम सुख भोग करने का स्थान समझती हैं, वास्तव में कर्तव्यों की जटिल समस्याओं का एक महान् संग्रहालय है। जिससे जितनी भी समस्याएँ

सुलभ सकें उसे उतनी समस्याओं को अवश्य सुलझाना चाहिए। सफलता में ही आनंद मिलता है और वही आनंद उस परमात्मा की अपार दया की अधिकारी बना देता है।"

रामनाथ ने जब देखा कि माया-मोह के चक्कर में पड़ कर सब लोग यहाँ तक चले आये तब उन्होंने सब को समझाते हुए कहा, "किसी न किसी दिन तो जाना ही पड़ता। संसार तो एक रंग-मंच है। सब के लिए निश्चित कार्यक्रम है। उस कार्यक्रम को पूरा करते ही रंग-मंच से अलग हो जाना चाहिये। मेरे लिए उस लीलामय परमात्मा ने जो कुछ काम निश्चय कर रखा था वह पूरा हो गया। अब यहाँ पर रहने का मेरा कोई भी अधिकार नहीं है। उसी की प्रेरणा से हम दोनों चले जा रहे हैं। आप लोगों को चाहिए कि आप लोग भी उस परमात्मा को ध्यान में रखते हुए अपने-अपने कामों को पूरा करें और जीवन को सफल बनाकर अनंत सुख प्राप्त करें।"

इस प्रकार समझाये जाने पर लोग वापस आये। गाँव आते ही सब लोगों ने यह निश्चय किया कि जिनकी अपार दया से इस गाँव का पुनरुद्धार हुआ उनकी विमल कीर्ति हमेशा बनी रही इसका कोई न कोई उपाय सोचना चाहिए।

रघुराज ने कहा, "वाचनालय और पुस्तकालय का काम ठीक-ठीक चलाने से ही उनका नाम अमर रहेगा।"

अंत में ज़िलेदार ने कहा, "रामनाथ के अथक परिश्रम से ही यह गाँव निरक्षरता से मुक्त हुआ, दरिद्रता इसकी नष्ट हुई,

आपस के झगड़े दूर हो गये, घर स्वच्छ और सुन्दर दिखाई पड़ने लगे, साक्षरता के दिव्य प्रकाश में सभी का जीवन आनंदमय बन गया। इसलिए उचित यही होगा कि अब से इस गाँव का नाम रामनाथपुर कर दिया जाय। अनंत काल तक उनका नाम अमर रहेगा।"

राय सब को पसंद आ गई। ज़िमीदार से मिलकर सरकार से इस बात की प्रार्थना की गई। सरकार ने भी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। तब से इस गाँव का नाम उन महान् आत्मा रामनाथ की पुण्य स्मृति में रामनाथपुर पड़ गया।

इस प्रकार यह

"गाँव की राम कहानी"

पूरी होती है।

उपसंहार

सत्य-संकल्प

मुरलीमोहन के गाँव की राम कहानी सुन कर घनश्याम बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा, "वास्तव में ग्राम-सुधार की समस्या को हल करना बड़ा ही कठिन काम है। जो कि हल कर ले वह साधारण मनुष्य नहीं है।"

मुरलीमोहन, "जो रागिनी रामनाथ की थी वही उनके साथियों की भी रही। बच्चे भी उसी रागिनी में मस्त रहते और गाँव वालों को भी वही रागिनी मस्त बना देती। जिस रागिनी से आरंभ हुआ उसी रागिनी से समाप्त भी हुआ। सारांश यह कि जब हृदय से हृदय मिल जाता है, तब रागिनी से रागिनी भी मिल जाती है। इसी मिलन में सफलता अपना विकसित रूप दिखाती है। जीवन धन्य हो जाता है।"

घनश्याम, "यद्यपि ध्यानपूर्वक सुनने और समझने में मेरे कई दिन लग गये, फिर भी प्रसन्नता इस बात की है कि, मुझे एक प्रकाशपूर्ण सरल और प्रशस्त मार्ग दिखाई पड़ने लगा है। मैं सत्य-संकल्प करता हूँ कि जहाँ तक हो सकेगा मैं भी अपने गाँव वालों को सुख पहुँचाने के लिए सुधार-सम्बन्धी आवश्यक सभी कार्य पूरा करने की चेष्टा करूँगा।"

मुरलीमोहन, "तुम्हें उत्साही और समझदार जान कर ही मैंने यह "गाँव की राम कहानी" सुनाई है। जो सत्य-संकल्प करते हैं वे अपने काम में अवश्य सफल होते हैं। मुझे इस बात का हर्ष है कि मेरा निशाना चूका नहीं है। जैसा मैं चाहता था वैसा ही काम कर गया।"

मुस्कुराता हुआ घनश्याम मुरलीमोहन से बिदा हो गया। उसके चले जाने पर मुरलीमोहन धीरे धीरे गुनगुनाने लगे।

"हमारे देश भारत में, तुम्हारी याद होती है;
तुम्हारी प्रेम की मुरली, कहाँ पर आज सोती है।
वही ब्रज भूमि सुंदर है, वही यमुना किनारा है;
वही है ग्वाल की टोली, विरह में आज रोती है।
तुम्हारे मित्र लाखों जो, सुदामा-से भिखारी हैं;
भटकते द्वारका में जा, न कुरता है, न धोती है।
विदुर-से भक्त जो मोहन, खड़े हैं साग को लेकर;
करोड़ों द्रौपदी की हा, बची इज़्ज़त भी खोती है।
यहाँ कुन्ती-सी माताएँ, लिये बच्चों को गोदी में;
बहाकर आँख से आँसू, हमेशा तन भिगोती हैं।
छिड़ा संग्राम जीवन का, हमारी बुद्धि चकराई;
सुना दे ज्ञान-गीता जो, महाभारत का मोती है।"